

बि दे ह बिदेह Videha बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका Videha Ist Maithili
Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

I SSN 2229-547X VI DEHA

बिदेह १०३ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष ३ मास ३३ अंक



१०३.)

बि दे ह बिदेह Vi deha
बिदेह <http://www.videha.co.in> बिदेह प्रथम मैथिली
पारिषदक ई पत्रिका Vi deha Ist Maithili
Fortnightly ejournal नर अंक देखबैक लेख गुण
सबके बिदेहमे कए देखू। Always refresh the
pages for viewing new issue of
VI DEHA. Read in your own script
Roman(Eng)Gujarati Bangla Oriya Gur mukhi T
elugu Tami I Kannada Malayalam Hindi

ई अंकमे अछि:-

१. संगीदकीय संदेश

२. गद्य



२.१. जगदीश प्रसाद गजवत दीर्घकथा- शांति-आशा



२.२. गङ्गाधर सा- विदागत नाट



२.३.१. रानीता अगावी- विरहि कथा- प्रसन्नता २.



उमेशकाश सा- विरहि कथा- कर्णवक लिखन ३.



जगदीश सा सा - ३.४. विरहि कथा ४. उमेश अगाव सा- विरहि कथा

—

बि देह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X



२.४. अतुलेश्वर-पाग, मिथिला आ जातिवादक बाजुनीति



२.३.१. बरि भूषण पाठक- ओककब तौलब रुम्माव
सपना-३



२.६. श्यामसुन्दर शशि- सुमि उठन जलकपुत्रबानी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine*



५ मास ५३ अंक १०५

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.१.१. सृजित कथाव सा - नाट्यकृति बद्धमे



गजबैलें समर्पि छव २.१.१. सृजित आनन्द- लोष-पत्रिका
मैथिली एर मैथिली कब्रमे अवकाशक लोकार्पि



२.१.१. सृजित कथाव सा-नर बागव

३. पद्य

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X



३.१ श्याम शर्मा



३.२ दिनेश बस्निया-रमा पत्रकाव २ उमेश पामराव



३.३ जवाहरनान कश्यप



३.४ उमेश कर्मा

बि एन ए मिडे *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह अथय ऐथिली आधिकारिक अ विदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.३. छगदीने अमोद फडव



३.४. बाणबिवास ओरु



३.१. टप्पल कयाव सा



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X



३.५.

नरेश कुमार 'आशी'-गर्भक आराज



४. मिथिला कवि-संगीत

राजनाथ मिश्र (द्वितीय मिथिला)



५. डॉ. मेने मंडन (मिथिलाक रचसंपत्ति/ मिथिलाक जीव-
जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

—



३. गद्य-पद्य भावना

निराश्रित गायन केव दूरी



हिन्दी करिताक मैथिली अग्रवाद अग्रवाद कर्ता

अश्विनी



अग्रवाद २. प्रसूत अर्द्ध अग्रवाद मैथिली अग्रवाद



अश्विनी अग्रवाद ३. “तबलागव वन्द्य”-

श्री कशीनाथ



मिह (हिन्दीसँ मैथिली अग्रवाद)

श्री रीनीत उगेल

४. अग्रवाद रज्ज्गत- हम हिन्दी छी हिन्दी कथाक मैथिली कथाग्रवाद



रीनीत उगेल द्वारा-



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

माथिलि संस्कृत, ISSN 2229-547X



३. बिदेह बिदेह - १. जगदीश प्रसाद साठक एकठा रौत



कथा एकठा ल २. टंन कगाव सा- रौत गजल



१. भाषागत बला-लेखन -[माथिलि, बिदेहक बिदेह-
अलेखी आ अलेखी बिदेह लेख (अलेखक गलि लेख सट-
डिक्शनरी) एम.एस. एस.ए.ए. सर्वर आधारित -Based on
ms-sql server Maithili-English and
English-Maithili Dictionary.]

बिदेह बिदेह-पत्रिकाक सभटा प्रवाण अंक (ब्रैल, तिरहुता आ
देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंक
उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e
journal (in Braille, Tirhuta and
Devanagari versions) are available for
pdf download at the following link .


बिदेह बिदेह-पत्रिकाक सभटा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ
देवनागरी कगमे Videha e journal's all old


issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

રિપોર્ટ ઇ-પત્રિકાક ૩૦મી મે આગાંક અંક

  "বিরুদ্ধ" জ-পত্রিকা জ-পত্র প্রাপ্ত কক।

 অপন ত্রিকৈঁ রিদেহক রিযামে সচিঁত কক ।

 [↑](#) বিদেহ আব.এস.এস.ফাউ এণ্ডামেটবকৈ অগণ সাগল/
বৈগণগব লগাউ।

 বইগ "লেখাউঠ" গব "এড গাডজেট" মে "ফীড" মেনেকট
কএ "ফীড যু.আব.এন." মে
<http://www.videha.co.in/index.xml> ঠাগগ কেমাস
মেনো রিদেহ ফীড থাপু কএ সকেত জী। গুগল বীডবমে গঠরী
ভেন <http://reader.google.com/> গব জা ক২ Add a
Subscription ঝেঠন দিলক কক আ থানী স্থানমে
<http://www.videha.co.in/index.xml> পেস্ট কক আ
Add ঝেঠন দরীউ।

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egroups



बिदेह लेखियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल
पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



Videha Radio

मैथिली देखबागरी वा लिखिनास्कवमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल
छी, (cannot see/write Maithili in
Devanagari / Mthilakshara follow links
below or contact at ggajendra@videha.com)
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पर जाइत। संगहि बिदेहक दुनो
मैथिली भाषापाक/ बच्चा लेखक नर-पुबास अंक पढ़ू।
<http://devanaagarii.net/>

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine*



५ मास ५३ अंक १०५

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रॉन्गमे
ऑनलाइन देरनागरी ठागन कक, रॉन्गमे कागी कक आ रड
डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रड फागनके मेर कक । विशेष
ज्ञाकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क
कक ।) (Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM
)/ Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 /
Flock 2.0 / Google Chrome for best view of
'Videha' Maithili e-journal at
<http://www.videha.co.in/> .)

Go to the link below for download of old
issues of VIDEHA Maithili e magazine in
.pdf format and Maithili Audio / Video /
Book / paintings / photo files . बिदेहक पुराण अंक
आ ऑडियो / रीडियो / पोथी / चित्रकला / फोटो सभक फागन
सभ (डिजाइन, रड स्वयं साव आ दुरक्षित मने सहित) डाउनलोड
कवरॉक हेतु नीचाँक लिंक पब जाई ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



भावतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, नाष्टककार आ
धर्मिणी विद्यापतिक स्थापना । भावत आ लगानक माष्टिमे
पमवन मिथिलाक धवती प्राचीन कानहिन् महापुत्रक ओ महिला



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रान्तर, ISSN 2229-547X

VIDEHA

लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकृति ओ महिना
लोकनिक छि मिथिला बने मे देखु ।



गौरी-शैलक पानरुमि कानक मुर्ति, एहिमे
मिथिलाकबने (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अछि ।
मिथिलाक भावत आ लपानक माष्टमे पसबन एहि तबहक अन्धारा
प्राप्ति आ नर स्थाप, छि, अभिलेख आ मुर्तिकनक हेतु देखु
मिथिलाक खोज

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अध्ययन
संगहि बिदेहक सर्त-गजल आ नृज सरिस आ मिथिला, मैथिल आ
मैथिलीसँ सम्बन्धित रेखागुण सतक संग्रह सकलक लेन देखु
बिदेह सूचना सर्क अध्ययन

बिदेह ज्ञानवृत्तक डिस्कसन होवागार जाँडु ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त) पब
जाँडु ।



ए रैव मुन प्रकाश(२०१२) [महिल अकादेमी, दिल्ली]क लेल
अहिक नखबिमे कोन मुन मैथिली पोथी उपहाउ अछि ?

Thank you for voting !

श्री बाजुदेव मण्डनक “अर्थवा” (कविता-संग्रह) 13.44 %

श्री रौचन ठाकुरक “रौचनक अंगारक आ छीनबदेरी”(दूटा नाटक)
9.84 %

श्रीमती आशा मिश्रक “उच्छ” (उपन्यास) 6.56 %

श्रीमती गंगा माक “अनुभूति” (कथा संग्रह) 5.25 %

श्री उदय नाथान मिश्र “नटकेता”क “ला एन्ट्री”क प्रवेश
(नाटक) 5.9 %

श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रौचनक रंगड” (कथा-संग्रह)
5.25 %

श्रीमती रीणा कर्मा- भारताक अहिंसा (कविता संग्रह)
5.57 %

श्रीमती शैलजिती रमाक “किन्तु-किन्तु जीवण (आमेकथा)
7.87 %



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्रीमती रिता बानीक “भाग रौ आ रैनचन्द्रा” (दूठा नष्टक)
7.21%

श्री महाप्रकाश-संग समय के (करिता संग्रह) 5.9%

श्री ताराचन्द्र रियोगी- प्रलय बहन् (करिता-संग्रह) 5.57%

श्री महेश्वर मणियाक “डूतहा रैन” (नष्टक) 7.21%

श्रीमती नीता झाक “देश-काल” (कथा-संग्रह) 6.56%

श्री मियाबाबु झा “सबस”क खोड़ आनि खोड़ पाणि (गजल संग्रह) 6.89%

Other : 0.98%

ए रौब रौब साहित्य प्रकाश(२०१२) [साहित्य अकादेमी, दिल्ली]क लेल
अहिक नञ्जविमे कोष मुन मैथिली पोथी उगहाउ अछि ?

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक “तलेगल”(रौब-प्रेमक कथा संग्रह) 50%

श्री जीरकांत - थिथिबक रिश्ता 25%

श्री मन्मथजीव झाक “पिनपिनहा गाछ 23.44%



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Other : 1.56 %

ई लेख द्वारा प्रकाशित(२०१२)।सहित अकादेमी, दिल्ली।क लेख अहाँक नज़रिमे कौन कौन लेखक उपस्थित छथि ?

Thank you for voting !

श्रीमती ज्ञाति स्मृति टोपरीक “अर्चि” (कविता संग्रह)

24.04 %

श्री रिशित उपेन्द्रक “रुम प्रेक्षित छी” (कविता संग्रह) 6.73 %

श्रीमती कामिनीक “समयसँ सम्राट करैत”, (कविता संग्रह)

6.73 %

श्री प्रदीप काष्ठिक “रिषदन्ती रविवर कानक बति” (कविता संग्रह) 4.81 %

श्री आशीष अर्चिहारिक “अर्चिहार आखर”(गजल संग्रह) 25 %

श्री अर्चनात मोरिषक “एतरेँ छी नहि” (कविता संग्रह)

6.73 %

श्री दिगीप कर्माव ना “कृष्ण”क जगल बहलै (कविता संग्रह)

6.73 %

श्री आदि यादविक “बोखर पैसिजसँ लिखल” (कथा संग्रह)

4.81 %



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्री उमेश मल्लिक “नितुकी” (कविता संग्रह) 12.5 %

Other : 1.92 %

এ রৌব ঞ্জরাদ পূবফাব (২০১২) [সাহিত্য ঞ্জকাদেশী, দিল্লী]ক জেন ঞ্জক ঞ্জবিসে কে ঁগহাঔ ভুথি ?

Thank you for voting !

শ্রী নরেশ কুমার ব্রিকল “যযাতি” (মরাঠী ঁগহাস শ্রী ঞ্জিষ্ঠ সখাবাস খাঙ্ককব) 34.52 %

শ্রী মহেন্দ্র নারায়ণ বাম “কার্ণেলীল” (কোঁকণী ঁগহাস শ্রী দামোদর মারজো) 13.1 %

শ্রী দেবেন্দ্র না “ঞ্জভর”(রাঁগা ঁগহাস শ্রী দিবান্দু পানিত) 11.9 %

শ্রীমতী মেনকা মল্লিক “দেশে ঞ্জ ঞ্জ কবিতা সভ” (লপালীক ঞ্জরাদ মুন- বেসিকা খাপা) 14.29 %

শ্রী প্রমুদ কুমার কঠপ ঞ্জ শ্রীমতী শেখিরালা- মৈথিলী গীতগোরিন্দ (জযদের সংকৃত) 11.9 %

শ্রী বামনারায়ণ সিংহ “মলহিন” (শ্রী তকযী শিরশেকব পিল্লিক মনযালী ঁগহাস) 13.1 %

Other : 1.19 %



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

होलो प्रबन्ध-समग्र योगदान २०१२-१३ : समाप्तुव माहिल
अकादेमी, दिल्ली

Thank you for voting !
श्री राजनन्दन नान दाम 54.69 %

श्री डा. अमरेश्वर 21.88 %

श्री लक्ष्मण सिंह 21.88 %

Other : 1.56 %

1.संगोदकीय

१

३० अगस्त २०१२ के ज्ञानकी शरणीक अरुमवगव ज्ञानकशुवक
बामनन्द टोकपव १३.० गोठे ज्ञान मिथिला राज्य लेन धकापव
बहनि, तथल एकठा हाने-हिननानमे ज्ञानमन एकठा मापेनी दन
द्वारा कएन रैम रिश्काठ, जे एकठा फिमिलन एकठ मात्र अछि, मे
पाँट गोठे गेलीद भ२ गेला आ तीससँ रैनी गोठे घायन
हुथि । मृतकमे मिथिला नाष्ठकना परियद (मिनाप)क कनाकाव ३२
रय्याया बज्जु मा, मगड्ड, मन्डन, रिमान चका, सुनेने उपाध्याय आ
दीपेन्द्र दाम हुथि । जे हिनकव सभक रैनिदानकेँ मोन बाथन
जाए तथल ओ श्रेष्ठजनि भ२ सकत ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

२

जगदीश प्रसाद मंडल- एकटा रौबोवाही...गजेन्द्र ठाकुर द्वारा
.....श्री

श्री-
श्री

जगदीश प्रसाद मंडल पाँच-छह रैथक बहनि तखलसँ भागक संग
युन जखन गगना । गामेमे लोखन प्रागमरी युन, दु गाली युन
चलेत छल । अथन तँ आठम धरिक पठ गेल हूँ नागन अछि
तहिना एक शिक्षकसँ चलेत युन सेहो सतबह शिक्षक धरि
पहुँचि गेल अछि ।

तँए कि शिक्षा अग्रणी गेल ? जिनगीक लेल सर्वांगीण विकास
अनिवार्य अछि जँ से ले तँ ओ अकनग-विकनगि लेल पढ़ल
बहल । सामान्य युन-कलेज तँ ठाम-ठाम रैलन हूँ तखनीकी
शिक्षाक विकास ले लेल । पवित्र रैनि गेल अछि जे काजक
दिशे रैदलि गेल अछि । खैर जे होई, हूँ आज्ञादीक पहिली
आ पढातियो रैबना राजनीतिक, शैक्षणिक दृष्टिसँ अग्रणीएन ।

आज्ञादीक आन्दोलनमे रैचु मित्रि उभड़ल । नरानी विद्यालयमे
भूमिगत काज करैत बहनि । निथनाग तँ ले सीथि लेलनि
हूँ रक्षा भे गेल । देशक प्रति ठूल समर्पित जे
आज्ञादीक दौड़मे तीन मास धरि भट्ट-रैगल रिला नुनक, उमनि-
उमनि था दिस-वाति काज करैत बहनाह, आन्दोलन गाम-गाम



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पकड़नहि बहए ।

काजेसँ गमावदारी सेहो अरौ छै । १९३७ ई.क. भूमकमक
पढ़ाति बाणिज्य जे रैरावा हूअ नगन, तगमे एतेक
गमावदारीक परिचय मनेपुव थानामे देननि जे समाजक सब
हूका गाँधीजी कहए नगननि । तग मंग आनो-आनो बहनि ।
रौबया पंचायत रैनरौमे हूकक योगदान रहूत बहननि ।
जन्मथोक हिमालय, उग समयक पंचायतक हिमालय, रौबया छोट
पढ़-त बहए । सामाजिक रूपांतर एतेन जे गाम-गामक रीट
अगन-अगन मरैध । तँ के केकवा मंग बहत, ई समष्टि ।
रूदा दीप गामक लहलहाक सहयोगसँ, जे अगन पंचायत काटि
पंचायत रैनरौमे सहयोग केननि, पंचायत रैनन ।

पढ़ाति रैछु मित्रिक मित्र गढ़रैड । गेननि । उना अस्मीसँ
हुँव रैथि उमेवमे रूगनाह रूदा प्रभार कमि गेननि । रैन
प्रभारित होगक काका दूरी भेननि । पढ़ि पारिभाषिक आर्थिक
हिंति आ दोसब बाजनीतिक क्षेत्रमे गमावदारीक प्रभार । रूदा
अत-अत धरि समाजकेँ जगलैत बहनाह ।

जल्मि बाजनीतिक दृष्टिसँ रौबया गाम जागन तहिना शैक्षणिक
दृष्टिसँ सेहो ई गाम अग्रगण्य बहन अछि । गाममे कुन
कहिया रैनन, एकब निश्चित तिथिक जाणकारी तँ ले रूदा १९३७
ई. क. भूमकममे विद्यालयक नीत खसल, ई जाणकारीमे अछि ।
रूदा विद्यालयक जगह रैदनि गेल । किएक तँ उग जगहकेँ
जन्मभूमि अशुभ रूमा नगन । उना उ स्थान गामक जेहन स्थान
छी, शैक्षणिक जगह । अखन उग स्थानमे रौन-रौधक आगनरौबी
छनि बहन अछि । उगठामसँ विद्यालय उठि नहुमीकान्त, बमकान्त
माहुक कटहरीमे छनि अएन । शुक्रमे नकड़िक खूँपाव रौनैक
घब बहै, रूदा पढ़ाति कटहरी निटा सिमटी छी हुँव थकक घब



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

रैलोनमि । उग कचहरीमे १९३२ अ.क पहिने टुनारक केन्द्र
सेहो रैलन ।

अखन रियायत तैमर अखन अछि । जे जगह मरिसर-पातीक
प्रा. हेतुकव माक छियनि । उग उ बजमप्री करैले तैयार भेल
छथि दूदा जमीनदारीक तैलेन उमरौठमे पड़न अछि जे हूक
निथले ले होग छहि । रूठि या गाडीक नाँउ जमीनक पट्टा
गेल अछि । सम्रति पचासत भरण, आठमा धरिक फुल, खंडह
कगमे अस्पतालक घर आ भरा दुर्गन्धि सेहो अछि ।

अठारहम शताब्दीक पुरछिमे एकहले खडका मुनक परिवारमे पं.
कचन मा आ पं. रैरुए मा रैदिक भेलाह । उग उग समेमे
अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार ले भेल छल, दूदा संस्कृत शिक्षाक
स्पर्धामे हग अरम्भ छल । स्पर्धामे ए लेन जे सामाजिक ठाँउ,
किछ रिद्धिखना छोटि, रैदिक पछिर्तमे चलैत छल । आहु-आहु
रिद्धिखना रैठि ते गेल । पछाति अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार सेहो
खुर पड़ल ।

पं. कचन माक रौनक पं. त्रैग मा प्रसिद्ध गेठवी मा आति
प्राप्त रैदिक भेलाह । दरभंगा राजसँ मात मए रीया जमीन
माथेबाज अँलातव कगमे भेटेल छनि । उग समेमे किनको
ताधनि पडितक रीट स्थान ले भेटेलि जाधनि उ कारीसँ पट्टा ले
अँलैत छलाह ।

पं. त्रैधव ठाकुर हूकले घबक भण्डारण परिवार । पडित
त्रैधव ठाकुरकेँ तीन रौनक, पं. जयनाथ ठाकुर, पं. तेजनाथ
ठाकुर आ पं. अज्ञनाथ ठाकुर । तीनु पडित दूदा जेठका भाय
थेती करैत किमान रैनि गेलाह आ रौकी दुनु भाँग पं.
तेजनाथ ठाकुर आ पं. अज्ञनाथ ठाकुर कारीसँ पट्टा एलाह ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

उत्तकौष्टिक श्रेणीमे गिणती छननि । पंडित तेजनाथ ठाकुर
जीवन-पर्यन्त लोहना मकृत रिद्यालयमे सेरा देननि । तेकब
पढाति परिवारमे पं. लोवीनाथ ठाकुर, अमिकछ ठाकुर आ सुन्दर
ठाकुर भेलनि । शरीरसँ अरौह बहल पं. सुन्दर ठाकुर रैद्यक
कणमे गामेमे रैद्यगिरी कबैत बहलाह । पं. अमिकछ ठाकुर
राकबणक पंडित । सीतामढ़ी जिलाक रिद्यालयमे जिनगी भयि
सेरा देननि ।

अखन धरि दुगुने परिवारक छट भेल अछि दूदा एतरो लै
अछि । पं. कामेश्वर मा, जे खगडी या रिद्यालयक मंग दीप
महारिद्यालयमे सेरा सेरा देननि । रेल-राकबणक प्रकाश
पंडित छलाह । पंडित चन्द्रेश्वर मा अबडी या मया रिद्यालयक
संस्थापित शिक्षक रनि अखनसमे मयि गेलाह ।

पंडित उपेन्द्र मिश्र सभसँ भिय छलाह । एक मंग जातिय, रेल
राकबण, साहित्यक विशेष ज्ञाता छलाह । कतेको महारिद्यालयमे
सेरा दैत शरीर तियाग केननि । सभसँ भिय ओ ए अर्थमे
छलाह जे कोलो महारिद्यालयमे अमिक दिन लै छक पढैत
छलाह । मानक जीतने किछ ल किछ खटपट भग्ये जागत
छननि । जखन खटपट होगत छननि, मोमे घबझैत रिदा भ२
जागत छलाह । दूदा गामो एलापर केकरो किछ कहैत लै
छननि । कियो प्रभुरौ ल कबनि जे ओला एला आकि
मगड १-दास क२ क२ एला । अछुत गुण छननि जे अगल-
आग किमि कबैत, समग्र मंग अगल कर्तारकै छुटैत देखि दोसब
महारिद्यालय दिस रिदा होगत छलाह । खराम छोडी पधवमे
कहियो जूता-चप्पल लै पहिबनि । परोपष्टाक रिद्धानक रीट
अगल पहिटा छननि, जगसँ कोलो रिद्यालय, महारिद्यालयमे
स्नागत बहैत छननि ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्राण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पंडित उदित नारायण मा, जे गोरखपुर सन्निहित दुनाह, शिक्षण
कार्य छोड़ि दौकाशदावी राररमाय केँ अगण ज़ीरिका रैलोननि ।
परिवारक स्थिति खबारि दुननि । रीति उपावजल चलेरना ले
दुननि । दूदा किछु दिक मेहनतिक फल नीक भेटैदनि ।
ज़ीरन-यागन करैत रीम रीया ज़मीन परिवारमे रैलोननि ।
पं. वामनारायण मा ब्राकवणक दुता दुनाह । शैवीकर्म पुर बहल
शुकमे पुनिसक लोकरी शुक केननि, दूदा रिदेशी शोसनक उठैत
रिवोधमे लोकरी छोड़ि शिक्षण कार्यमे चलि एलाह । रैमिक
युन घोषवडिहामे एरामी ज़ीक र्मग बहि मेरा देननि ।

गामक युनर्म १९३३ ई.मे जगदीश प्रसाद मल्लन निकनना ।
गाममँ मरैले पुर कडरीमे मिछन युन रैनि गेल दुन । तगर्म
पहिल पाँचमा धरिक युन दुन । मिछन युन अगण रैलन । उना
अखन दुनु गिनि एक भ२ गेल अछि दूदा पहिल दुनु अगण-
अगण दुन । पाँचमा धरि हलिस ले नलीत दुन दूदा डठा-
सातमाये अछाग कपेआ मलीना हलिस नलीत दुन ।

१९३० ई.मे मिछन युनर्म निकलि केजवीरान हागयुन
समावपुवमे नाँउ लिखेननि । रैकमाक रिद्यार्थी तद्विद्यामे हाग
युन आ समावपुवो हाग युनमे साने-सान रिभाजित होगत
बैत दुन । कावणो बै । जग कपक शिक्षकक थीम
समावपुवमे दुन उग तबहक थीम तद्विद्यामे ले दुन ।
तद्विद्या हाग युनमे एक-आध शिक्षक साने-सान जागत-
अरैत दुनाह अखन कि समावपुवमे से ले दुन, जगर्म
समावपुवकेँ नीक मानन जागत दुन । जहिला गामक आन-आन
रिद्यार्थी पएले जागत-अरैत दुनाह तहिला एहो जागत-अरैत
दुना । किछु गोष्टे होस्टेहोमे बैत दुना । सानो भवि किछु



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

ले किछ अस्वरिवा बहते डननि । ओना अथला किछ-किछ
डहिये । माओ भवि ए तबहै बहे डन ।

अगहनसँ माघ धरि दिला छोट होगए, ह्रदा रिन्यानयक सम
छोट ले होगत डन । काजक अगहन सम छोटले दिस-
वातिमे अगहन भननि ले बुनि पड़त छै, ह्रदा गाम-घरक लेन
तँ ए कर्षण अडिये । मोसमी छुट्टीक नाँपव दिससँवमे रँड ।
दिसक छुट्टी आठ-दस दिस होगत डन, जे पवीष्कापवाप्तक आ
बिजलसँ पुर होगत डन ।

गवमियो मासमे अस्वरिवा तँ तहिला ह्रदा ओ अस्वरिवा दोसव
तबहक होगत डन । ओना एकवा आम थागक छुट्टी सेहो कहन
जाग छै ह्रदा ग्रीष्मार्कामक नाँ सेहो छै । नमगव छुट्टी, मास
दिसक होगत डन । नीक परिवारक रिन्याथीकेँ अगहन रातारव
बहल दोहरी नात होगत डननि, साधारण परिवारक रिन्याथी आम
थागत-थागत आधा-डिवा रिसवि जागत डना । नैसर्गिक
रातारव संप्र कगमे रिताजित भऽ जागत डन । जहिला
जाडक मास रँडेडी छुट्टेत अछि तहिला गवमियो गाढक ह्रदगी
छुट्टेत अछि । जगसँ अतीन माल टेत सँ तधवि रिन्यान
भिसुवका होगत डन जाधवि गर्मी छुट्टी ले भऽ जागत डन ।
तह्रविया हाग युन आ समारवगव हाग युनमे गहो अतव डन
जे आधा घंटा आगु-पाछु खुरौ कबेत डन आ रँगा होगत
डन । कावशो छलैक कमला पडिमक गाम मेहथ, नकआव आदिसँ
नऽ कऽ पुरमे रँवमा धरि आ गंगारव खवरौगवसँ नऽ कऽ
अनगव-अवर्डा या धरि रिन्याथी समारवगवमे पठेत डनाह ।
नमहव स्रेत तँए रिन्यासँ युन खलैत डन । माहए एगावह रँजे
रिन्यानमे छुट्टी होगत बहए । तखन पान-सात मीन पएने
चनरँ कर्षण डन । ओना ए रँड कर्षण ले किएक तँ रँवमाक

কেজবীরান হাওা ফুন সর্মানাথবরমে ১৯৬২ খ্র.মে হাযব মেকেন্দ্রীক
পঠাওা শুক ভেল। ফুদা পোছ পোচ বাগি গোলৈ। কনা-
রিত্তাণ আ রাগিজা তীলুক পঠাওা হোগত ডুলৈক। কনা-
রিত্তাণক মংজুবী ভেঠৈ গোন, রাগিজাক ভেঠেরৈ ল কএন। কতে
বংগক হরা বঁহএ নাগন। ওনা শিক্ষকমে বঁঠাওাবী পড়াতি ভেল
ফুদা শুকমে ঞ্চস্বরিধা বহন।

জগদীশে প্রসাদ মন্ডল ১৯৬৩ খ্রি.মে হাযব মেকেন্ড্রী গাম
কেনাপাব বী.এ. পাঠ রণমে লাও লিখেননি। পহিল দু বঁর্থক



4 मास 93 अंक 109

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आ.ग.ए. आ.दु. रंथक री.ए. श्री हृ.ए. नगलोक । दु.दु. दिससँ
रिद्यार्थीक प्रवेशि हृ.ए. नागन । री.ए. पाठ रण केनागव आनस
पठक रिटाव भेननि । आ. आ. कउनेजमे आनसक पठ 1ग
होगत डन । जगत कउनेजमे ले होगत डन । एक-दु-
तीन शिक्षकसँ अधिक कोला नियममे शिक्षक ले डन । हिन्दी
रिभागमे सेहो दु.गये गोष्टे डनाह । प्रा.गरेष्ट कगमे तैयारी
कवए नगना । सी.एस. कउनेजक नाउसँ फार्म भवएन आ
परीक्षा भेन ।

1.1.3.2. ग्रीक दूनारक री.द. देशेक अणन रिधिरत् सबकाव रंनन ।
दू.दा. एक रंग कतेको प्रम उठि कउ ठाठ भउ गेन । सबकारी
कार्यनयमे कर्मचारीक जकवति भेन । जेकव रंनानीमे जातिराद
आ. पौवरी-पौगाम शुक भेन । आ.म. जगतक जगाएन सबकाव
जगतसँ रंनत दु.व. हष्ट गेन ।

उना जे कोला नर-नरतत्र देशेक स्थिति होगए तहिना अणला
ए.ठाम बहए । दू.दा. उ.ग. जेन जउत सकावामेक मोट आ. काजक
उ.मत. हेरौक चाहिये से ले भेन । सामंती मोट आ. सामंत
मजगुत डन, जगसँ आ.म. अ.रामक री.ट. आ.फाशि पणगए नगले ।
बाजा-बजराउ जकाँ मोसन पछति चनए नागन । तही री.ट.
भु.दा.न. आ.म.दानक उ.द.य. सेहो भेन । उना तेनगिणसँ शुक भेन
भु.मि. आ.म.दान देशेकेँ डोना देल डन । त.ग. रंग केवन,
रंगानक रंग डि.ष्ट.हू.ष्ट. अलको बाजायमे भु.मि. आ.म.दान पकड़ा
बहन डन । द.व.त.गा. जिनामे सेहो भु.मि. आ.म.दान शुक भेन ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

१९३९ अ.क. छुनारमे काँचस सबकावक स्थिति कमजोब भेल ।
केबनमे रामगंभी सबकाव रैनि गेल । आजादीक दौड़क जे
जागवण भेल ओ तज्जा भेल, जगसँ अखुनका जकाँ ले भेल । ए
रीट गोष्टि-गडवा हाँग चुन, कठमेज, प्रांगरेष्ट कगमे रैष
नागन भेल । झुदाँ ओसत कम बहन । खादी उँडाव उँद्यागक
झास होगत गेल आ होगत-होगत अ मेषी जकाँ गेल ।
तल्लिा नगदी पौदारावमे कृषिाव सेहो भेल, जे उँद्यागपतिक
चलैत सेहो मरष नागन ।

मिथिलाचनमे मुनतः ज़ीरिकाक साधन प्रषि भेल । ओषा सघन
कगमे प्रषिक पौष साधन ज़ीरिकाक छी, झुदाँ से ले भेल ।
जेहो भेल तद्धमे रँग-रिबगक भन-प्रगट चलि बहन भेल ।
रैषाग खेतीमे अरिया उँगज उँगजौनिहावकेँ भेठैत छलैक ।
जखन कि उँगजरेँमे, खेती करैमे किछु अन्नक खेती नाभप्रद
भेल । उँगजाक अन्नपातमे नागत खर्च किछुमे कम भेल आ
किछुमे अधिक । जगमे अधिक भेल ओगमे रैषेदावकेँ घाँ
नलैत छलैक । तग रँग रौदी-दाहीक प्रतार ओहन किसानगव
सेहो पड़ैत भेल जे खेती करैत छनाह । जे रैसी
खेतरेँना छनाह हुनकर खेती अधिकतर रैषागक माधमसँ चलैत
भेल । तग रँग अधिक अन्न बहन अन्नक महाजनिषो चलैत
भेलनि । महाजनिषोक प्रथा गाम-गामक फूँ-फूँ कोला गाममे
मराग (एक मोनक मरा मोन, एक सीजिनक) तँ कोला गाममे
एगावही (आँठ पसेवीक मोन, एक मोनक एगावह पसेवी) तँ
कोला गाममे डेठिया (एक मोनक रौवह पसेवी) । जेकव
मतनरँ भेल जे एक मोनक आधा मोन सुदिये भेल । तग
रँग गहो होगत भेल जे जँ मानक कर्ज मानमे दूकाएन
जागत भेल, आ ले तँ सुदो मुड़ रैनि जागत छलैक । जगसँ



५ मास ५३ अंक १०५)

मानविक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दू मास रिठैत-रिठैत कर्ज दोरवा जागत छलै । अखुषका
जकाँ रिखाह तँ तते भारी ले छन ह्रदा माए-रागक सबाधमे
सांसाजिक आ जातीय एहेन टाप छन जे खेत-पथाव रैटि
काज चलैत छन । खेतक हिमरसँ टावि-पाँट मेनक किसान
हुनाह । गामक-गाम एक-एक गोठैक छननि । जखन एकठाँय
जमीन समष्टिअन बहत तखन दोसब-तेसबक की आ कते
हेतनि ?

खेतमे काज करैरना रौनिहारोक स्थिति रैदसँ रैदतब छन ।
एक तँ दिस भविक रौनि कम तद्धमे मानक गणन दिस काज
होगत । किसानोक रीट खेतीक नर रैदनामिक खेतीक पद्धतिक
अभार छननि । अबारोक कारण छन जे ल सबकावक मियाण
खेती दिस छन आ ल खेतीक साधन उगनट्ट छन ।
ब्रेता हागक जलकक हब जकाँ खेत जोतेक हब होगत
छन । जहिया मविआएन रैद तहिया जोतिनिहार । तग संग
खेत पठैरैक पानिक कोला दोसब रैरसा ले । जहिया पानि
हएत तहिया खेती शुक हएत । जगसँ रैसमए खेती होगत
छन । पौखरि-साँखरि मे अलकआ माड जे होग सएह माड
पौसरै कहागत छन । तहिया तीमला-तबकावी आ हलो-
हनहवीक हान छन । मोठी-मोठी प्रथिक ओहन दशो रैनि गेन
छन जगपव ज़ीरन सापन कवरै कटिनि भ२ गेन छन ।

पशुपालनक कपमे गाए-महीस रैकरी पौसरै मात्र चलैत छन ।
गाए-महीस पौसिक रीट, महाजनीक एहेन सुव नागन छन जे
पौसिनिहार सिर्फ पौसित हुनाह । एक तँ नल पद्धिअन बहल
पद्धिअन कारोराब दोसब एहेन जानमे उमवाएन जे धीले-धीले
कहिने गेन जे रैदक कोला संभारना ले बहन ।
नगदी हसनक कपमे कशियाव आ पद्धिआक खेती छन । ह्रदा
उद्गागपतिक कारामातसँ ओहो दूनु कमजोर होगत गेन । ह्रदा



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

सबकावक प्रति जल-आहारी रैठल । गाम-घबक लोक सबकारी
मातक माल रूमेत डल मात केठोक रहु धरि । सेहो वस्तु-
पेले ठूँगीगत डल ।

१९७१ अंक दुनार आएन । जगदीश प्रसाद मल्ल री.ए.क. रियाथी
बहथि । आजादीक पढाति पहिन जल-जागवण डल । पढातो-
निथन आ रियाथियो मैदानमे उतबन ।

मल मैतानीस...

भावतक स्वतंत्रताक प्रारम्भिक मल्ला फलवा बहन डल ।

मूदा कम्युनिस्ट पार्टीक माननागत डल जे भावत स्वतंत्र ले भेन
अछि ।

असली स्वतंत्रता भेटैरै राँकी डै...

मिथिलाक एकठा गाम...

जग होगत अछि एकठा रैचाक.. ओरै रैथ ...

ओग स्वतंत्र रा स्वतंत्र ले भेन भावतमे...

पिताक मू...गवरी...

केस मोकदमा...

रचितक लेन संघर्षमे भेटैले स्वतंत्र भावतक रा स्वतंत्र ले भेन
भावतक जेन....



आग लेबामे पाँट-दम रीघासँ पौघ जेत ककरो ले..

उग गाम मे आग जलित अछि आगयो किमानी आमेनिर्भर
संस्कृति...

पुनर्निर्माणवादक ब्रह्मवादक एकद्वय बाज्यक जतः भेन समाप्ति..

संघर्षक समाप्ति रौद्र जिनक लेखन मैथिली साहित्यमे आनि
देवक पुनर्जागरण...

जगदीश प्रसाद मन्दन- एकठाँ रौद्राग्रहण... गजेन्द्र ठाकुर द्वारा
..... शीघ्र
जवाब.....

३

समाप्तपुत्र पवम्पराक रिद्यापति आ पाग

रिद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठकुर रिद्यापति प्रता निखन अछि/ आ
उ रिद्यापति ब्रह्मण भुवि । हमर उद्देश्य मैथिली रीति रिद्यापतिमे
अछि... जे संस्कृतमे हम टर्न केनौ जे हुनका किए पाग पहिवा
कऽ "हमर रिद्यापति" रीति लेन गेल... आ तखन ले भेल जखन
रिद्यापति नाटक माध्यमसँ आठ सँ रीति गेल ब्रह्मण सद्गुरु
रिद्यापतिकेँ जिएल वखनक, हुनका तखन भेल जखन रीति
रिद्यापति केँ आ गोरिन्ददासकेँ अपन रीति लेनक आ रीति
रिद्यापति बाज्यपुत्र सद्गुरुपाद सँ प्रथम कहलन्हि जे रिद्यापति
मिथिलाक भाषाक करि भुवि आ रीति लेनक गोरिन्ददास पुत्र सँ प्रथम



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कहलहि जे गोरिन्ददाम सेहो मिथिलाक भाषाक करि छथि
आ जखन आ तथा सोमाँ उठल तँ पहिल तँ सगर रँगल
हलकापव माव-माव कइ उठल आ रौदमे मागि गेल । हेब
मिथिलाक रिद्वानकेँ सेहो एतहि आ रिद्वानतिक संस्कृत ग्रन्थ,
गोरिन्ददाम नाम्ना आ रिद्वानति नाम्ना पञ्चमीमे उगलल रिद्वान दइ
रिद्वानति ठाँव आ गोरिन्ददाम मा (! ! !) निकालल गेल-
बसाथ माक पञ्चमीक सतही ज्ञान आ सीधित दृष्टिकोण लोकमान
पहुँचेलक । हेब अन्तर्गत पाग पहिवा कइ रिद्वानति (मैथिली
रौना, संस्कृत रौना ले) केँ 'हन्व रिद्वानति' ज्ञान रक्षा द्वारा
रौना जेल गेल । किछ गोठे ज्ञातिबिद्वानक भातिज कहि
रिद्वानतिकेँ सन्निहित कबइ नगलह ! !

रुदा करिबि ज्ञातिबिद्वानक सग रौत वाम करि पञ्चमीमे उगलल
छथि । आ जे नामक अन्तर्गत रिद्वानतिमे आरि ज्ञान छहि
(जखन कि सब काज पारिगम सेहो तैयो एकठा सँवत रौत
गेल) से ज्ञातिबिद्वानकेँ किए ले अरेए ।

२. अहाँ रँगल किए ज्ञान छी, पुरिमाँमे ग्रामदेवताक पुजाँमे हम
गेल छी आ वाम ठाँव (भगवान)केँ देवता कपमे ठेगारना
थेतमे हम देखल छी, किओ ज्ञानि देखल बहे ।

३. मिथिलासँ दुतीसगठ मध्य प्रदेशमे गेल बहनि, मध्य प्रदेशसँ
बाजसता समिद प्रजात मा कहि बहन छला, जे रौवली
(काश्मीर) मिथिलासँ गेल तँ मैथिली भाषी हेरौक काव लोका
हलका माजि कहए नागल, आ ओ सब आर मा ठाँगल बथे
छथि, प्रजात मा केँपेरिग कइ देवथिह आ एक रौसँ
केल्लिछे ज्ञानि गेल । हमरा अहाँ सबकेँ आ अन्तर्गत अछि जे
कोला ठाँगल हूँए पहिल, पछिला धरिमे लोक माजि रा
मोआ ओकरा कहि दै छै । रँगलक मानदह ज्ञानमे ४-३.



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

गाममे मैथिल ब्राह्मणक ठाँगछिन उमा छै, आ अनीगठमे मैथिल
ब्राह्मण (ब्रह्म मैथिल)क भोगी ।

४.पञ्चमीमे कतेक बिद्यापतिक बिरवा उगल्ल अछि: १.पनिघोष सँ
बिद्यापतिस्वत बसापतिक बिराह बिद्यापतिक- माता(देरदानी)-दुषण
पञ्जी २.महो केशरी अत म.म.पठ गोरिन्द अत महो
कक्षीनाथ म.म. बिद्यापति म.म. दामोदर ३.महामहो बिद्यापति
गंगोली सँ माणकठ रानी करिबाज गणेश्वर ४.बोमोतसँ म.म.
गोरिन्द अत म. कक्षीधर म.म. बिद्यापति ५.बाजपडित म.म.
६. बिद्यापति ७.कवमसँ देरनाथ अत करि बिद्यापति ८.पुष्पति
मन्तति-पछोङगी । । बिद्यापति-पुडवीक-मछन्दी । केशर-
अमवारती । +. । । मिहश्रीम सँबिद्यापति दूठ भागीवथ अतो
केशरीव: ९.मिधु: ए अत देरनाथ बिहरीनाथ श्रीनाथ: मिहश्रीम
सँ बिद्यापति दो । । १०.मिह जयदेर (१७/०७) अत नगराड
बोमोत सँ महामहोपाध्याय बिद्यापति दो ११.महामहोपाध्याय
गोरिन्द अत महामहो कक्षीनाथ पवनामक (२०९/०३.) ठकक
म० म० उपा० बिद्यापति १२.दो । । एरम् ठो बिद्यापति
माहक छई । । १३.महामहोपाध्याय बिद्यापति अत अमिकछ
अनन्त अद्यता: एकहवा सँ काशी दो १४.सदु अत अतो
दामोदर: ए अतो डानुक: पलोनीसँ गोठि दो डानु (३४/०७)
अतो बिद्यापति १५.अत शिक पदम नाथ गानुका: एकहवा सँ श्री
कव अत चान्द दो थोशान सँ भुजे दूठ मधुसूदन अत
उमापति (+४/०५) बिद्यापति १६.रुसँ अत थोशान सँ डानु अत
बिद्यापति दो भण्डारिस सँ भुजे दूठ ठो १७.मोदरधर सँ
छोछीङ दो (२+/०+) रमाउण अत पञ्चपति बिद्यापति १८.कल्याण
अत कवम सँ बिद्यापति दो १९.जानय सँ बामेश्वरअत महिधर
दो यद्गाम सँ गोण्डा दूठ बिद्यापति अतो भागीवथ: २०.हवथ
गोरिन्दा सक० ग्रंथ अत बिद्यापति दो अरुण सँ होले दूठ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

२१.प्रयागति स्वता द्वावि रिद्यागति प्रजागति ठकरोन सँ बासकव
दो । । २२.करिषद् पदार्कित म० म० ६० बघ्नाथ कवमा सँ
रिद्यागति दो २३.स्वतो रिद्यागति माण्डरमँ यग्यगति
दो २४.तन्त्रगण सँ गठरय दो. रिद्यागति २५.यशु स्वतो
वरिगति कद्रगति रिद्यागति चन्द्रगति २६.नवडंग सँ रिद्यागति दो
२७.वरिगति स्वतो प्रयागति रिद्यागति घुमोत सँ होले दो । ।
२८.रिद्यागति स्वता रैगडँट सँवास दो २९.ग्रन्थ स्वत गौरीगति
रिद्यागति नक्षत्रगति रुद्रगति: दबि० दिराकव दो ३०.महिगति
माक मातामह करि कोकिल रिद्यागति ठाकव) दामोदर स्वतो
पामिदू. हरिदेवर: नवडंगमँ माण्डरि दो ३१.गंगति स्वतो करि
कोकिल बाजगति म० म० ६० रिद्यागति: ए स्वतो हरिगति
धनगति । । ३२.मनमहोपाध्याय रिद्यागतिस्वता द्विक्केश
३३.रवगति स्वता रिद्यागति कशी दामोदर:३४.वतिगति स्वता
मोदर० रिद्यागति दो ३५.रिद्यागति प्रणोत्र पौत्र हरिगिरव
धनगिरव स्वतो गोमदुक पानीसँ त्रानदो । । ३६.रिद्यागति दो.
रैणी स्वतो वरिणाथ: ३७.मोदर० रिद्यागति दू० मिकाव ३८.श्रीगति
स्वतो रिद्यागति पबाली दबिहवा ३९.मोदर० रिद्यागति दू० छि
कमानयन स्वता हरिश्चम सँ रैडाङ्ग दो ४०.वरौश्चामसँ मोल दो
देरणाथ स्वतो करि रिद्यागति पचली मोदरगुवमँ जगन्नाथ दो
४१.गोपी स्वतो रिद्यागति राचमगति शीरा हरिश्चमसँ नावाग
दो । । ४२.रिद्यागति निमि प्र. धवागति: ४३.तलोनी कवमासँ
महिधर दो । । (४३/०३) रिद्यागति (५५/०३) स्वतो मधुसूदन:
४४.कनकगद् द्वादशगद्दला कव. पनाङ्ग दो (५०९/१०३) रिद्यागति
(३४/०३.) स्वता छिनिनाथ शोभनाथ महिनाथ: ४५.डूमागति स्वत
रिद्यागति स्वतो जगति: ४६.जागु स्वता स्वगति हरिगति
प्रभागति गिबगति रिद्यागति: ४७.रुद्रु स्वता रवगति रिद्यागति
मनो त्रानगति दिगति मणिकठा ४८.प्रया स्वता वगति श्रीगति
वत्तगति रिद्यागति: रूबरान सँ धीक दो । । ४९.दामो स्वता



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

दयोबि थुडरैना मँ गोपीनाथ दौ (+३.१/०२) बिद्यापति अत
जोरनाथ ३.०.नवडुन मँ बिद्यापति दौ ३.१.धर्मिक बरिष रौष्ट
अतो बिद्यापति ३.२.मोदवधु मँ गयल दौ बिद्यापति अत
बगपति होबि हवबु जिवाङका माण्डव मँ मोदु दौ । ।
३.३.थोशान मँ बगुनाथ दौ (३.४/०१) बिद्यापति अत जानु
३.४.ठकरोनमँ बिद्यापति दौ मतिनाथ ३.५.थुडरैनामँ बिद्यापति
अत जोरनाथ दौ ३.६.कवमा मँ बिद्यापति दौ बिश्वनाथ
३.७.प्रयापति अतो उगपति (३.८.२+/०५) बिद्यापति (३.९.०३)
पण्डु मँ पाँ भगीवथ दौ ३.१०.मोहो हविप्रया अतो थोशान मँ
बिद्यापति दौ ३.११.मधुसुदन अतो बिद्यापति: अत मँ अमिकछ
दौ ३.१२.माण्डव मँ देवमोहि दौ बिद्यापति अतो नवडुन मँ रौदनी
दौ ३.१३.मोहो अतो पण्डव पवमानन्द मोण्डव मँ बिद्यापति
दौ ३.१४.बिद्यापति अतो मोदवधु मँ जयवाम ३.१५.धर्मेश्वरौ
थोशान मँ हवाङ अत मालाह दौ कद अतो बाग: गौली मँ
देवे दौ बिमहो मँ करि कोकिन बाज पडित मँ मँ पाँ
बिद्यापति दौ बाग अतो बिबुदु: हणन्द मँ जोचन दौ
पकनिया मँ दौ दौ बिबु अतो हवाङक: मोदवधु मँ बिब
अत हविदौ थोशान मँ अतो दौ हवाङ अतो मोहन मालाह
कमल नावाग: मोदवधु मँ जगन्नाथ अत भरानी दौ भरानी
अतो हविदेर मदागौ हविअ मँ गोविन्द अत श्रीधर दौ
मको जागे दौ मालाह अत कवमा मँ बतनपति अत
प्रयादनि दौ प्रयादनि अतो मोदवधु मँ मधुसुदन अत सुन्दर
दौ (४.१/०३.) दविहवा मँ मालाङ दौ हवि अतो प्रयापति:
मोदवधु मँ नावाग: अत नु दौ (४.२/०५) (४.३/०५) नावाग:
अतो नुदु: रुधरान मँ रौड १ दौ (४.४/०५) दामोदर अतो
रौड २ क: मोदवधु मँ पवमानन्द अत कागर दौ पवमानन्द
अतो कागर: माण्डव मँ हवधु अत पीताम्वर दौ (४.५/०३.)
कवमा मँ श्रीवाम दौ कागर अतो कवमा मँ गिरदेर अत



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

काव्य दो माण्डव सँ रारु दोहिन दोहो ७४. रारु दुर्गापति सिंहः
सुतो रारु रिद्यापति सिंहः कवमा सँ हनिनाथ सुत तावानाथ दो
७५. थोशान सँ हरबाज दौ रारु रिद्यापति सिंह सुतो रारु
गिबिजापति सिंह ७६. रारु गंगापति सिंह सुता भेषपति सिंह
रिद्यापति सिंह ७७. रारु भेषपति सिंह पत्नी अन्तर्जातीय ए सुत
हंसपति सिंहः रारु रिद्यापति सिंह सुतो कमा कमाव सिंहः ७८. रारा
सुतो भैया कन्नाशो थोशान सँ रिद्यापति दो ७९. रिश्वनाथ
काशीनाथः अन्त सँ रिद्यापति दो १०. पाठक रिद्यापति सुतो
दुखान्जल कनरो आमी एकहवा सँ उमानन्द दो ११. नवपति सुता
कन्नाशपुत्र रिमहा सँ सुन्दर दो कमाननस सुत नावाग सुतो
सुन्दरः कवमा सँ रिद्यापति दो १२. सुबासि सुता दामोदर
रिद्यापति महिषव आनन्दः १३. रिद्यापति सुता पद्मापति सतापति
आदिपति गंगपतिः । । १४. रिद्यापति सुतो जीतु पवमानन्दो
माण्डव सँ नवपति दो रैलेवाठ १ सँ गदधर दौ १५. अन्त सँ
कमा सुत नकट्ट दो. रिद्यापति सुत जीरनाथ सुतो पमाः दमि.
वास दो । । १६. कवमा सँ रिद्यापति सुत मधुसूदन दो १७. मागी
सोदरपुत्र सँ राटपति सुत रिद्यापति दो १८. थण्डरैना सँ रारु
दुर्गापति सिंह सुत रारु रिद्यापति सिंह दो १९. थोशान सँ
रिद्यापति दो १. मधुवापति सुतो राड शिरानन्दला २. सोदरपुत्र
सँ रैलेनाथ दो. हविप्रया सुता थोशान सँ मधुसूदनसुत रिद्यापति
दो ३. मधुसूदन सुत रिद्यापति दो ४. दमिहवा सँ कमापति सुत
रेणी दो अन्त सँ प्रयापति सुत रिद्यापति दो ५. अन्त सँ
रिद्यापति दो ॥ ६. ज्यो. शिरानन्द सुतो रिद्यापति .
७. थोशान सँ भरदेर सुत रिद्यापति दो. ८. पाठक प्रयापति
सुतो उयापति रिद्यापति . ९. रिद्यापति सुतो दुखान्जल कनरो
एकहवा सँ देवानन्द सुत उमानन्द दो १०. अन्त सँ रिद्यापति
सुत कनक दो ११. काक सुता पिताम्बर रिद्यापति देरकीमा



५ मास ५३ अंक १०५

माथिली बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

का मोदवधुव सँ रौदनाथ स्वत जगि दौ १०.सुबोधा प्र.
शोवदनाथ स्वता शोवीनधन राउमगति प्र. रिद्यागति दिराकब प्र.
मन्दु बत्नाकब प्र. भोजन जौ का नग. घुमोत सँ दामोदर
स्वत उग्रमोहन दौ एकहवा सँ मोतानधन दौ. ११.थोथान सँ
रिद्यागति दौ.

आरि आउ मुव द्वापव । हमरा बाजगणित आ आव कतेक
बान पारिभाषिक रिद्यागति सभ जेमे एकठा देरदसीक पुव
सेहो बहथि, केव आँखि हेरौमे कोला सन्दह ले अछि । हम
रिद्यागति ठकुरः आ कीर्तिनता कीर्तिगताका ले रबन रिद्यागति
पदारणीक गप क२ बहन छी । तै कोला ओमबीमे ले बहन
जाए । आरि आउ गएव आँखि द्वावा गाउन रिदपत, जे
जातिबीधुवसँ पुर्न (सम्भरतः) रौरव काश्टमे भेन बहथि आ
तकब प्रयाण जातिबीधुव द्वावा ररिष बनेकबसे ए करि आ ठकुर
प्रतिक छर्छ अछि ।

महादेव मुनतः गएव आँखि देरता बहथि, आँखि-आँखि ओ
आँखि लोकनि द्वावा अगनाउन गेलाह । रिद्यागतिक कोला
पदारणीक बचामे हुनकब संकृत/ अरल्लु जेथक हेरौक छट ले
अछि । द्वावा हुनकब बचामे (संस्कृत आ अरल्लु रिकछ, जे
दोसब रिद्यागतिक बचामे छी, जे आँखि बहथि) सरहावाक जेन
जे दर्द अछि से संस्कृत आ अरल्लु रिद्यागतिमे किए ले
अछि ? उदाहरण देखु ।

रिद्यागतिक रिदेसिया- पिआ देसौतव

भोजपुरीक साहित मैथिलीसँ कम समूह अछि द्वावा से अछि मात्र
पविशामे, प्रारंभक दृष्टिमे जा कतेक फेब्रमे आगाँ अछि ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बरन्दास, ISSN 2229-547X

VIDEHA

भोजपुरीक भिखाड १ ठाँवक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम अ कहि
बहन छी । भिखाड १ ठाँवक कनकतामे प्ररामी बहनि, घुमि कय
अएनाह आ भोजपुर फेदमे अगन कष्टक रनि जाहि माँसिमी
कर्म गामे-गामे घुमि कए आ गामि कय सुनउवहि मे रैनव
बिदेसिया नष्टक । मिथिला मे प्रराम आँकुक घटना छी, गामक-
गाम सुन भए गेल अछि । मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देसक
कोन-कोनमे पसरि गेल छथि । रूदा पहिल भोजपुर गनाका
जेकाँ प्ररामक घटना मिथिलामे बहि छल । प्रराम मोरंग धरि
सीत छल जे लगानक मिथिला मे फेल अछि । आ तहिमे
मैथिलीमे लोकगाथाक मुफ्त विरवाक रँड अछार, जे अछियो
मे लोकगाथा नायकक विरवा नहि रवण महाकारक नायक
मैथिलीमे विरवा जेकाँ अछि, आ रौमिअ अछि, भिखाड १
ठाँवक बिदेसियाक जोड नहि । सनहमे कथाक विरवा लिख
फेलीय पविनि गाव कबिते सनहमे बाजामे छेव रँसि जागत
छथि आ छेवमे बाजा । तहिना छुहछाम फेलीय पविनि गाव
कबिते जतए सनहमे बाजा रँसैत छथि ओतए छेव रँसि जागत
छथि, आ जतए सनहमे छेव कहल जागत छथि ओतए बाजा/
मैथिलीक कर्पे जलल जागत छथि । रूदा एहि सतपव कोला
शोध नहि भए सकल अछि । एहि क्रामे रिवागतिक पदरनीक
पद सतमे तकेत हमरा समस्त रिभिन्न प्रकारक गीत सत
सोनाँमे अएल । एहिमे जे अधिकनि छल मे बहए प्रेमी-
प्रेमिकाक विरहक विरवा आ बिदेसियाक जे मुल कनमेष्ट
अछि- बोजी-बोधी आ आजीविका लेल मोन-गावि कय प्रराम,
तहिमे हवाक । तखन जा कए हमरा किछु रिभिन्न बिदेसिया
जकवा रिवागति पिछा-देसाँतव कहैत छथि छैल । एहिमे
स्वाभाविक कर्पे अधिकनि रिवागतिक लगान पदरनीमे छैल आ
एकठाँ नगरेदनाथ ग्रन्थक संगीत पदरनीमे । मोरंग लगान
हित मिथिलाक भाग अछि आ प्रराम लेल प्रमिछ छल, मे एकव
सम्प्राप्ति कवि । तहि आधारवर्ग अ सकल्पित नाष्टका प्रकृत



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

अछि । विद्यापतिक सिखा देसाँतब दूधे ऽष्टजगव हमर बिदेसिया
बिदेस लोकबीक जेन बिदा होगत छथि आ जूरती गरैत छथि-
गीतक रीटमे एकठा पथिक अरैत छथि । मटक दोसब
छोड़गव छेब लोकनि धगागत बुकायन छथि । मटक दोसब
छोड़गव कोतरान आ पुत्र पोतीधारी प्छेगव हाथ देल
निश्चिकिब रैसन छथि । धनछी बागे (लगावसँ) ग्राम विद्यापति
पदारी)-हम जूरती, पति पोताह बिदेस । नग नहि रैस
गड़ुँसिह जेस । हम शरती छी आ हमर पति बिदेस जेन
छथि । नगमे गड़ुँसिह कोलो अरमेव नहि अछि ।

मानु नगद किछुआओ नहि जान । आथि बतौक्री, सनए न
काष । मान आ नगदि सेहो किछु नहि रैसैत छथि । हुनकव
सतक आथिमे बतौक्री छहि आ ओ सत काषसँ सेहो किछु नहि
सुनैत छथि ।

जागह पथिक, जाह जग्व भोव । वाति अक्काव, गाम रैड
छेब । हे पथिक । निमकेँ लगु । काहि भोवमे नहि आहुँ ।
अहबिया वाति अछि आ गाममे रैड छेब सत अछि ।

सगलहुँ ताँव न देख कोठरौव । गओलहुँ जोते न कबए
रिटाव । कोतरौव सगलहुँमे पहवा नहि दैत अछि आ लात
देलागव रिटाव नहि करैत अछि ।

बृग गथि काहुँ कबथि नहि साति । पुवथ महत सरै हमर
सजाति ॥ ताहि द्वाले राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ
सज्जै पौष लोक एकै वंग छथि ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासुहिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

बिद्यापति करि एह बस गारै । ऊकतिहि भार जगारै । बिद्यापति
करि अ बस गरैत छथि । ऊकतीसँ भार जग बहनीत छति ।

बिद्यापति करिक प्रवेशे लागत छति । कोतरावक नग मुख-
धोतीधारी आ एकटी गरीरक आगमन लागत छति । कोतराव
आभाससँ धोतीधारीक पक्षमे निर्णय सुनलैत छथि आ मटक
दोसब कोणव रैसलि जूरती माथ पिछैत छथि । गीतक अन्तिम
छावि पाँती बिद्यापति करि गरैत छथि । दृष्ट २ जूरती एकटी
दोकाव खोलल छथि, साँकेतिक । मटक दोसब कातसँ सास्र आ
ननदिकेँ जेएराँक आ फेता पथिकक अएराँक संग हरती लोणाग
मुक करैत छथि आ सब पाँतिक रौद बिद्यापति मटकव अलैत
छथि अर्थ कहैत छथि आ अंधकारमे विनीत भऽ जागत छथि ।
झुदा अन्तिम पाँती बिद्यापति गरैत छथि आ जूरती ओकव अर्थ
रैछैत छथि । मानववागे (लगावसँ प्राप्त बिद्यापति पदरनी)-रैछा
झुछा एहि तरक डालि, ठामे ठामे रैस गाय । एहि गाढक डाल
रैछु शीतल छति । ठामे-ठाम गाय रैसन छति । हम एकसवि,
शिआ देसाँतव, नहि दुबजल नाम । हम अमगवि डी, श्रिय
पवदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नहि छति ।

पथिक हे, एथा लेह रिसवाय । हे पथिक ! एतय विशेष
कक । जत रैसाहरै किछु न मरुय, सरै गिल एहि ठाम । जे किछु
कौनरै, किछुओ मरुय नहि । सब किछु एतए छैछैत । सास्र नहि
घब, पव पविजन ननद सहजे बोवि । घबमे सास्र नहि छथि,
पविजन दुबमे छथि आ ननदि झुझारसँ सबन छथि । एतहु पथिक
रिद्धत जाएँ तरेँ अनागति मोवि । एतेक बहिनो जे अल



५ मास ५३ अंक १०५

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बिदेह भए जखरै तँ आरै हमर सक्क नहि छि । भए बिद्यापति
सुन तए जूरती जे पूब पवक आस । बिद्यापति कहैत छथि-
हे यरती ! सुन जे अहाँ दोसबाक आस पूबा करैत छी । दृष्ट
अहि गीतमे बिद्यापति नहि छथि । जूरतीक नगदि पथिककेँ
दरौबि बहल छथि, से देखि जूरतीकेँ अपन पिआ देसतब मोन
गछि जागत छहि । ओ नगदि आ सथीकेँ सग्यमित कए गीत
गर्बैत छथि । गीतक अर्थ सथी कहैत छथि, सब पाँतीक
रौद । धनडीबागे (लोगानसँ प्राप्त बिद्यापति पदारली)- पवतह
पवदेस, पवहिक आस । बिदेह न कविअ, अरैस दिस
रौस । पवदेसमे निह दोसबाक आस बहैत छि । से ककरो
बिदेह नहि कवरौक छली । अरैस रौस देरौक छली । एतहि
जानिअ सथि पिअतम-कथा । हे सथी ! प्रियतमक लेन एतरी
कथा रूँसु । भए मन्द नन्दन हे मल अग्यानि । पथिककेँ न
रौलिअ छैलि रौनि । हे नगदि ! मोनमे नीक-अवनाहक अग्यानि
कए पथिककेँ छैल गप नहि रौजु ।

चब-पथाक, आसन-दान । मधुब रचल कविअ समान । चका
पथाक, आसन दियोक आ मधुब रचल कहि सान्त्वना दियहु । ए
सथि अग्यति एते दूब जख । आओव कविअ जत अधिक
रौड । हे सथी पथिक एतयसँ दूब जागत से अग्यति से
ओकव आव रौड । हे कक । दृष्ट छजूरती आ नगदि नगव आरि
ठौब बेल छथि । एकठो पथिक आरि आश्रय मँगैत छथि तँ
जूरती गर्बैत छथि आ नगदि सब पाँतीक रौद अर्थ कहैत
छथि । रौटमे छलि पाँती रिना अर्थक लोगानसँ अरैत छि ।
हएव जूरती आगाँ गर्बैत छथि आ नगदि अर्थ रौजैत छथि ।
अबुमे अग्यि दू पाँती बिद्यापति आरि गर्बैत छथि । दृष्टक
अबुमे नगदि कहैत छथि जे हम जे ओहि दिस पथिककेँ दरौबि
बहल छलहुँ से अहाँकेँ नीक नहि लागल बहए, रुदा आग
पथिककेँ आश्रय किअक नहि देलियोक । कोनाबवागे (लोगानसँ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

प्राप्तु रिवाजति पदार्जनी)-हम एकसवि, पित्रतम नहि गाम। तै
मोहि तवतम देगते ठाम। हम एकसवि छी आ प्रियतम गाममे
नहि छथि। तहि द्वाले बाति धीतरै जेन करौमे हमरा
तावतमा भ२ बहन अछि। अतह कतह देखगतहूँ रौस।
दोसब न देखिअ पडउमिउ गाम। यदि का नगमे बहितिथि त
दोसब ठाम कतह रौस देखा दैतहूँ।

छमह हे पथिक, कविअ हमे कह। रौस नगब भूमि अतह
छह। हे पथिक अमा कक आ जाहुँ आ नगबमे कतह रौस
तारु।

आँतब गाँतब, साँसक रौसि। गवदेस रौसिअ अनागति
हेसि। रौसमे प्राप्तुव अछि सन्ध्याक समय अछि आ गवदेसमे
भरियाकेँ सोटेत काज कवरौक छह।

मोवा मस हे खनहि खन भाँग। जेतरन गोशरै कत मसमिज
जाग। छन छन पथिक कविअ ग... कह। रौस नगब भूमि
अतह छह। मात पट घब तहि मजि देन। पिआ देमास्तुव
आस्तुव भेन। रौवह रर्य अरसि कए गेन। छवि रर्य तहि गेना
भेन।

घोब गयोधव जागिनि भेद। जे कवतरै ता कवह
पविछेद। भयाउन मेघ अछि, वतुका गग छी मोटि कए निर्गम
कक।



भगवत् विद्यापति नागवि-वीति । राज-रत्न उगज्जर
शिरीति । विद्यापति कहत छथि, ए नगवक वीति अछि जे कहु
रत्नसँ प्रीति अछि । दृष्ट अछि दृष्टमे विद्यापति नहि
छथि । एकटा पथिक अछि छथि दृष्टा मान-नगदि ककरो नहि
देखि रस कवरसँ सकोचरमे मला कए आगाँ रूठि जागत
छथि । जूराती गरैत छथि । घनडीबागे (नगानसँ प्राप्त विद्यापति
पदार्थ)-उचित रस ए मोव मसख छेव । देखि आ रूठि आ
कवए अगोव । कामदेव कपी छेवक जेन हमर अरुआ ठीक
अछि । रूठि या देखी पलवा द२ बहन छथि ।

रावह रवथ अरुपि कए गेन । चावि रवथ तहि गेन
भेन । रावहम रवथक बली, तखन ओ गेनाह आ आरि चावि रवथ
तकव भ२ गेन ।

रस छैत लेख पथिकहु नाज । मान नगद नहि अछि
मगाज । रस आ नगदि का संग नहि छथि आ पथिक सेहो देवा
देरसँ नजागत छथि ।

सात पाँच घर तहि सजि देन । पिआ देसाँतव आँतव
भेन । ओ कामदेव जेन घर सजा कए देशोस्तव छलि गेनाह आ
हमरा सतक रीचमे अस्तव आरि गेन ।

पछे ओस रस जोषसत भेन । थाल थाल अरुगर सरे
गेन । पछे सक रस जेना सय योजक भ२ गेन सभ सब-
सय्यकी जतए ततए छलि गेनाह ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

बुकारिअ तिमिक साक्षि । पडुमिनि देखै फडकी
रौखि । लोकक समूह अहावमे रिनीन भऽ गेल, पडुमिनि
फाँटकि रैल कए जेनहि ।

मोवा मल ते खनहि खन भाग । गमल गोपरी कत मलमल
जाग । हमर मोल फल-फल भागि बहन अछि । कामदेर जागि
बहन छथि गमलकेँ कतेक काल धरि बुकलै । दृष्ट ३ एहि दृष्टमे
मेला, नहि तँ नमदि छथि, नहिये मास्र आ नहिये रिद्यागति ।
एकठाँ अतिथि अरैत छथि आकि तखल मेघ नाथि दैत अछि आ
जूरती गरैत छथि । धनडीबागे (मेलामे) प्राप्ति रिद्यागति
पदारजा)-अगला मदिब रैमलि अछिनि, यव नहि दोसब
केरा । अगल यवमे रैमल छनहुँ, यवमे का दोसब नहि
छन, तहिखल पतिआ गालेल आएन रैमिअ नागल देरा । तखल
पथिक अतिथि अनाह आ रैवथा नाथि देनक ।

के जान कि रौनति शिखर पडुमिनि रचनक भेल
अरकाने । की रैजतीत अयात्रि पडुमिनि से नहि जागि, रैजतीक
अरमब जे भेटै गेलहि । योव अक्राव, निबलुव धावा दिसहि
बजनी भाल । दिनहिमे रात्रि जेकाँ होमल नागल । कएगेल कहै
हमे, के पतिअत, जगत रिदिन पँटरौल । हम ककवा कहै
आ के पतियायत । कवि कामदेरक थाति तँ जगत भविमे
अछि । दृष्ट १५८८ एक दिससँ मास्रक मूलक रौद हुनकब नहनि
निकलैत छथि आ मटपव अहाव होगत अछि । यैव गजोत
भेलापव नमदि रव हुनका मास्रक जे जागत छथि । पथिक
बडापव छथि दर्शकगक मल आ दर्शकगकेँ गमिवा करैत



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

जूरती गीत गरीत छथि आ बिद्यापति सब पाँतिक रौद अर्थ
कहेत छथि । अग्रिम दु पाँतिमे बिद्यापति गीत आ अर्थ दुनु
रैजेत छथि- बिद्यापति अग्रिम दु पाँति आ ओकर अर्थ कैक
रैब दोहरावैत छथि । नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पद्मरानी-मान्
जवातुवि भेली । नगदि अछि सेहो मान्ब गेली । मान्ब टलि
रैमलीह, नगदि सेहो मान्ब गेलीहतेमन न देखिअ कोइ ।
बयनि जगाए सम्राज्य होइ । का नहि सम्राज्यक लेन पर्यन्तएहि
थुब एहे रैरैहले । काहूक केउ नहि कबए थुछले । एतुका एहन
रैरैहले, ककरो का थुछावी नहि कलेत अछि । योनि पित्रतमकाँ
कहरो । हमे एकसमि धनि कत दिन बहरौ । हमर पित्रतमकेँ
कहरो, हम असमले कतेक दिन बहरौ । पथिक, कहरो योव
कहरो । हम मनि बयनि न तेज बसगुआ । पथिक हुनका कहरोहि,
हमरा मनि बयनि बसक तेज कथन धनि बहत । भग
बिद्यापति गारै । भगि-भगि बिबहनि पथिक बुझारै । बिद्यापति
गरीत छथि, बिबहनि घुमि-घुमि कए पथिककेँ कहि बहन छथि ।

बिद्यापति गरीत-गरीत कलक थमैत छथि- अछाव गमबए
नगैत अछि तँ एक गोठे जूरती दिस अछावसँ अरैत अप्प
देखना जागत छथि । की रैह छथि पित्रा देसाबुब । ! है,
आकि नहि । ! !

पित्रा देसाबुबक योव होगत अछि आ मटपव संगीतक मया
पठाफेप होगत अछि ।

पित्रा देसाबुबक अ कष्टाई सुरीशक समझ अछि आ बेबिब
बिदेमिया लोकनिक बर्तमान दुनियाक रीच अ महाकवि बिद्यापतिक
प्रति सम्मान अर्पित अछि ।



१. की ई दर्द अरल्लै आ संस्कृतक बिद्यापतिमे छहि ?

२. गदरणी एकटा पौरोहित्य संस्कृतिक आतक अछि । एकर संगसंगे संस्कृत आ अरल्लै एकर लेखक लिख लेत, ओकरा कछु छे जे अरल्लैमे लिखनापब बिद्याप ओकर उगलस करै छथि, हुदा ई दर्द की एकर लेखनाप गदरणीक बिद्यापतिमे ले छहि । ओतै तँ उगलस आ दर्द छे, सरलबाक उगलस आ दर्द । ओ बिद्यापति जे संस्कृत आ अरल्लै (गानी तानी ले) ओ बाजगलित छना से बिद्याप बहथि, हुनका अरल्लैमे लिखनापब लोक निन्दा कबहि । हुदा मैथिलीक बिद्यापति जे पौरोहित्य पबल्लबाक अंग छथि, ओगई दुब छना । ई पौरोहित्य पबल्लबा भूगलदक संगसंगे छे (ओ संगसंगे नाबलिनी बहे) । ई पौरोहित्य पबल्लबाक बिद्यापति रौरव कांस्टक बहलै कबथि, रा ब्रह्म कांस्टक बहलै कबथि, से गतिहस ओगलब मोन अछि । हुदा लोककथा आ पबल्लबा, बिद्यापतिक सरलबास संग संग, बिस्वकीक पबल्लबा हुनका गेब ब्रह्म सिद्ध करैए । संस्कृत आ अरल्लैक कोला पाँति बहिये ओग बिद्यापतिक गदरणीक चर्चा करैए ; आ बहिये गदरणी गदरणीक बिद्यापतिक संस्कृत आ अरल्लै केब बल्लबाक चर्चा करैए । संस्कृत आ अरल्लै हुनका आकाशक, जलो आ मल्लिब श्रुत, हेरापब दुखी अछि हुदा गदरणी तँ सरलबाक हर्ष, उगलस आ संघर्ष अछि; ओग तबहक हाकास ओतै ले । आ जखन मैथिलीरना बिद्यापति ब्रह्म बहलै कबथि रा ले तलीपब सरल अछि तखन पाग पहिबा कऽ कोल मोट हस मल्लिब पौरो कऽ बहल छी, "बिद्यापति" हमार छनाह की ले ? की बिद्यापतिक ब्रह्म ले बहलसँ ओ हमार ले हेताह ? की हुनकर "लिखा देमोतब" रना मागथेनि रना गीत महल्लिब भए जेतै ? की हुनकर सृष्टिक गीतक मात्र चर्चा कोला यज्ञा तँ ले ? बिद्यापति मल्लिब करैए पाग पहिबा कऽ



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

जातिगत रङ्गणमे रौन्हरै कतेक सही अछि ? मध्यकालीन
मिथिला मे रिजय कमार ठाकुर निथे भुवि: "मिथिलाक धार्मिक
क्षेत्रमे एहि सामान्तरादी हागीन धार्मिक रिचावधाराक प्रभाव एहन
सरर्यापी भन जे एखनहुँ एहि पवम्पवाक निम्नलिखित अरुशेय
समाजमे रिद्यमान अछि: ... (घ) पाग सेहो तत्रिक रिचावधारासँ
सम्बन्ध अछि । " (पृ. २७) तँ अहो तँ मत्र रिगाह उगममन धरि
ल बहए दियो । किए उग पौरेमन पवम्पवाक रिद्यापतिकै
उगमे साले डियल । जँ उ रारैव कास्टुक बहथि तैयो आ जँ
ब्रह्म बहथि तँ आबो (कावण २५) शितालीक ब्रह्मणक कष्टवता तँ
देखिये बहन डी आ अ हजार मान प्रवाण ब्रह्मण जँ पौरेमन
पवम्पवाक बहथि तँ पागकपी सामान्तरादी अरुशेय तत्रिक धार्मिक
कर्ममे मात्र प्रयाउ हुअए, रिद्यापतिक माथपव ले) ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

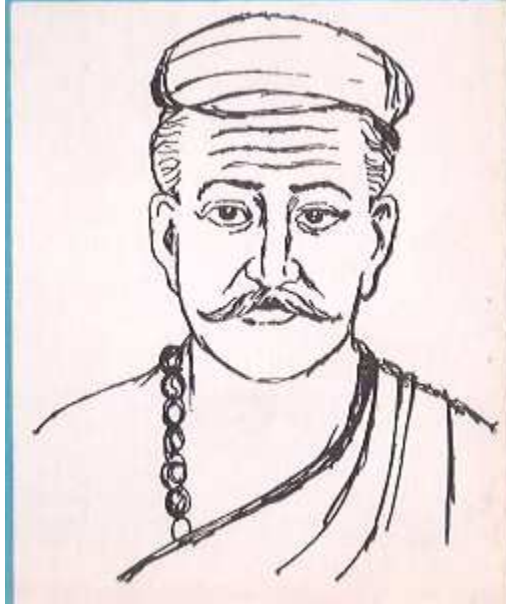


महाकवि बिद्यापति

करिबिब जातिबिबिब(मगधग १२१३-
१३३०)सँ पुरि (काका जातिबिबिबक ग्रन्थमे लिखल छट अछि), मै
थिलीक आदि करि । संस्कृत आ अरबिक बिद्यापति ठकुरःसँ भिन्न
।

सम्भवतः बिस्फी गामक रौरव काष्ठक श्री महेश ठाकुरक पुत्र ।

समाधानुव पञ्चरात्र बिदागत नाट्यमे बिद्यापति पदालीक (जाति
बिबिबसँ पुरिसँ) नृत्त-अभिनय होगत अछि ।



बिद्यापति ठकुरः

1350-1435 बियएराव बिस्फी-काष्ठेग (बाजा शिरमिहक दवरौबी) आ सँकृत आ अरल्लु लेखक । कीर्तिवता, कीर्तिगताका, थक्य गवीष्का, गोकर्षविजय, लिखनारनी आदि ग्रंथ समेत बिपुन सँथामे कानजगी बटना । ई मैथिलीक आदिकवि बिद्यापति (जातिबीघेव पूर)सँ भिन्न छथि ।

बिद्यापति कायस्थ

बिद्यापति ठकुरःक थक्य गवीष्कामे हिनक गंगानाभक कथा रर्षित अछि । महाकवि बिद्यापति(जातिबीघेव पूर मैथिली गद्दरनी सभक लेखक) क बियसमे नैहो गंगानाभक ई कथा प्रचलित आ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्राण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बौद्धिक विद्यापति ठकुरक (संस्कृत आ अरस्तुक लेखक)बिषयमे
सेहो गंगाजालक आ कथा प्रचलित भेल ।

उगना महादेव

महादेव (उगनाकगी) विद्यापतिक अहिर्धाम गीत सुनरा जेन उगना
लाकव रनि बहेत डनाह । मैथिलीक आदिकरि विद्यापति
(जातिवीथेव गुर) आ विद्यापति ठकुरक (संस्कृत आ अरस्तुक
लेखक आ बाजा शिरमिहक दरबारी) दुनू सँ सँघे कऽ उगनाक आ
कथा प्रमिह भेल ।



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

http://www.maithililekhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html

२०१२

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह अथय ऐथिनी पक्षिक अ विदेह' १०५ म अंक ०१ मइ २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.१. जगदीश प्रभाव गणक दीर्घकथा- शशी-आर्ग



२.२. गणेश सा- रिदागत साट

—



२.३.१. रशीता अगावी- रिहसि कथा- प्रसन्न २.



उमेश सा- रिहसि कथा- कगावक लिखन ३.



जगदीश सा मय - ३.४ रिहसि कथा ४. उमेश अगाव



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA

सा- बिहारी कथा

—

—



२.४. अतुलेश्वर-पाग, मिथिला आ जातिवादक बाजुनीति



२.३.१. बिहारी भूषण पाठक- ओककब तौलब हम्मब
सपना-३



२.३. श्यामसुन्दर शशि- सुनि उठल जलकपुत्रबानी

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine*



५ मास ५३ अंक १०५

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



२.१.१. सुजीत कुमार सा - नाटक प्रति बद्धमे



गुजरबल्ले समर्पण छव २ सुमित आनन्द- लोभ-पत्रिका
मैथिली एर मैथिली कब्रमे अवकाशक लोकगीत



२.१.१. सुजीत कुमार सा-नर बागीच

—



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X



जगदीश प्रसाद मल्लिक दीर्घकथा-

शर्मा

पञ्चम आगु-----

..... डकैतीक संग खुन मुनि सैनिकक मन ठामकन ।
अधिक दिनक संगी रहत । तँए दसतिसे कबर नीक । पड़ल-
पड़ल हुनका चलौलक -

“नरका कैदीकेँ खगयो आ मुठियो ले दिहक ।”



.....जलिा जलगीक सुथ, थाएर-सुतरमे अरौ डै
तलिा सुतरक आशे देथि रैनदेरक मसमे खुशी उगकले । खुशी
उगकिते मस रौआए गगले । तही रीट मेठक झूठम झूठले -

“तेनक शीशी डेरें कलौ, कालिमं गोदामे मं नर नर अनिहै ।”

गोदामक नाउ सुनिते राडिमे गन-गुन शुक तेन ।

“नरका केदीकेँ गोदाम केना जल देरें । अ अन्याय डी ।”

“कि रात डिं हो गीकेदाव तेना ? एना किअए हडरिडि ।
केल डह ? ”

“तू अथन तडि-घटी ले रूमरिली ।”

“मे किअए हो तेना, सुनल लोक सुनरौ कलेए आ नहियो
सुलेए । रूमोले लोक रूमरौ कलेए आ नहियो रूमैए । पहिल
रैजरेक तरें ल ? ”

“लौ रूडि रैक, सभ गप सभगीम रौजरें नीक थोड़ होग
डै । नीको अधना भर जग डै आ अधना नीक भर जग
डै ।”



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

“एकरेव अजमा कइ देखक। नबकोमे ठेगम-ठेग कले
डुह। रैहबामे लोक किछ करैए तँ भीतब-जहन- अरैए।
एठामसँ कतए जाएत। राजह, तैवा कि रूमि पडै डुह जे
हम ओहना आएन छी। आकि किछ कए कइ आएन छी।”

ठीकेदारक रैठेत संगी देखि कठहँसी हँसि मेषजन राजन-

“कि ते ठीकेदबरी, कथीक रँगकी धेल छै। स्वप्न....।”

एक दिसि ठीकेदारकेँ अगल घाँटेत आमदनी मसमे नटेत तँ
दोसर दिसि मेषजनक आदेशे। घुसुकि कइ ठीकेदार नगमे
आरि घुसुसा कइ राजन-

“मेषजन तैया, अहमँ कि कोना रात छिपन बहै। रूमि ते
छिं जे दु पाग रैठा कइ गाम पठरै छी।”

ठीकेदारक रातसँ मेथक मसक आगि ले ठँ छन। अदा हराक
नहकी जकाँ जकब नागन। मसमे उठलै दस जँ तखन ले
महँथ, जँ मे ले तँ असगव रवसगतियो हुमि। जहना गुनारी
नान आन-अछछन रँगि जागत, रँग रैदनि अगवाजित उज्जब-
कावी रँगि जागत, दिस-वातिक धेनमे गुर्मि अमारम्या आ
अमारम्या गुला रँगि जागत तहना रँगदेरक मसमे जिनगीक
जुआवि उठै नगले। अदा रँगि जावनक आगि जहना, पियामन

জিহ্বাগীক আৱশ্যক তত্ত্বমে সূতৰোঁ -গীশ- তঁ অনিৱাৰ্গ ভী।
তখন অৱতা কেনা ভেন? হুদা জখশ দন কোঠৰী বঁহালৈক,
মাফ কলৈক ভাব বহত তখন এক কোঠৰী বঁহাবৰোঁ তঁ উচি
লৈ। মৈশজলক মশ ঠাকৰ। ল আশুক বঁঠ দেখে আ ল
পাভু ঘূমি তাকৰ নীক বুমে। মশমে শ্বন: উঠলৈ, কিযো জোগ
ফিয়ামে জোগী বঁশি জোগিয়া জাগত অছি, কিযো ভোগী বঁশি
ভোগিয়া জাগত অছি তহিা তঁ কিযো কাজোমে কজিয়া
জাগএ। হুদা কজজী ভেল তঁ অৱাহো ভগয়ে জাগএ।
জগঠাম নিযোগ বসন্তক বঁশি শ্ৰদাশ হোগত তগঠাম অৱাহক পুভ
কেতেক?

মাগাজম কৰেইত মৌজম ভাৱ-প্ৰাৰীণ ভ২ ৰাজম-

“ତ୍ରୌଷା ଶିଳେନାସ, ଶ୍ରୀ ଦୁର୍ଗାୟ ନମଃ । ଅଗ୍ନିଂ ସତ ଜହନମେ
ତୀତ-ଶୀଠ କରେ ଡି, ଆ କିସୋ ଧ୍ବନ ସବତୀ-ଅକାସ ରୀଟ ଧ୍ବନି କଃ
ସେନାଶ୍ରୟ । ତର୍ଜାୟ ତ୍ରୌଷି କହୁ ଛେ କି ଶିଳ ହେତବ ? ”

জলিা ঢ়েবোক ভবসাব ঞ্ছি, কিসি-কিসিগ ঢ়াবে ঞ্ছি, তলিা ল ঁকবঁগাহো ঢ়েবক ভবসাব ঞ্ছি । ঞ্ছমতি কষ্টমে ওসবঞন জকাঁ ঠীকেদাব ওসবা গেল । জঁ ঢ়েব ঢ়েবি কঞ ক২ ঞ্ছানঞ ঞ্ছা জকবতমসদ লোককে দ২ দগ তখন ওকবা কী



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

मासिक चरित्र, ISSN 2229-547X

कहै ? छेबि तँ ओ ल होगत जे टुंगटाप आनि टुंगटाप
बनी । जगसँ कियो बूमरौ ल कबत आ तबे-तब मथड़ित
बहै । ठीकदावकेँ गुम देखि मैथजन पुढनक-

“गुम किअए डह, ठीकदाव ? तारेणव डोडा देलियह जे जे
तुँ कहैत सएह कबै । जाधवि प्रेम-प्रेमसँ ले मिलि, आत्मा-
आत्मासँ ले मिलि, मन-मनसँ मिलि क२ ले छत तधवि भवि मन
मिलह कतए सिंगार कबत । ”

जराँरक तपोदा स्नि ठीकदावक मनकेँ ले बहन गोले रोजन-

“मैथजन भाय, जखन कियो-कियो तेन अहाँकेँ पहुँटेरिते डी,
तखन नरका केदीकेँ किअए गोदाम जागने कहजिअ ? ”

“रौआ, मानीमे तेन हथुड़ित देखजिअ, तँए रज्जा गेल । ”

अपन रैठित पक्ष देखि ठीकदावक मनमे खुशी पनपल ।
खुशियाएन मन रैजले-

“जे आदमी आगये जहन आन अछि, ओकवा सोमे गोदाम
पठाएर नीक ले । छेब अछि कि डनाह अछि, से अखन नगले
केना बूमि जेरै ? जखन हमले हाथमे गोदाम अछि तखन
अहाँकेँ अतार ले एत सएह ले ? ”

ठीकदावक रात स्निते मैथजनक मन तीखागव जानमे हँसन
माछ जकाँ ओमवा गेल । छेब तँ छेब तेन, हृदा डनाह कि
तेन ? हृदा मैथजन भ२ पुढरौ नीक ले । जेकले हाथ मभ



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

किछ, सएह ले रूने, मैथिलक मसके घुबिअरै नगन । एते
दिनसँ जहनमे छी, ठीकेदावक हिमारेँ छुनाहोक संख्या कम ले
अछि, अदा ले रूमि पेलौ मे केहेन भेल ?

शेरेदक मोड़ रैदलेत मैथिलक प्रभुनक-

“कते रंगक छुनाह जहनमे हेताह ठीकेदाव ? ”

जल्मि नाबद धवतीक बिगोष्ट अकाममे करैत तलिा ठीकेदाव
अपनाकेँ मलूम करैत रोजन -

“भाय मलूम, तेहन घुबछी नगन सरौन अछि जे धड़कमे
छुष्टि जअत । तँ ए बिहिया कइ देखए गइत । पाण-मात
दिनमे पुवा-पुवी कहि देर । ”

रैनदेरक मसमे जहनक पहिन दिन लअ नगले । पुनः मसमे
उठले, मात्र किछ घंटीक लेन दुनियाँमे छी, तखन एकर दिनक
काजमे घेबाएन बहरै नीक ले । अदा कहरो केकवा कवरै आ
सुनरो के कवत । आगु रैठि ते मसमे उठले, जिनगीमे जे
किछ जे करै ओ अपन देखो, रूमो आकि ले देखो-रूमो
अदा केनिहव तँ जकब देखरो करै आ रूमरो करै ।
मसमे गनानि उठए नगले । जल्मि रैथीक रैठि रूमक रैग,
घेबामे घेबा जमा हूअ नले तलिा जिनगीक छलेत टकर
छलि रैनदेरक मसमे सपठए नगले । कते भावी अपवादी छी
जे धवतीक भाव रैनि गेल छी, जँ हमरा मल अपवादीकेँ हामी
ले होग, सेहो अस्तित्व छत । मल असुखि भअ गेल ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मसुखे ले माणरो आ दाणरो रैले। दुनियाँक ए बगसाँकव
कियो रीब रैनि तँ कियो कायब रैनि, पाछे अदा करै। मस
ठामकले। पुनः उठले, जग धवतीक भाव उठरै आएन छलौ
ओग धवतीक भाव रैनि गेलौ, एना किअ भेल ? की जिनगी
भवि हाथ-पुन मावि बहलौ, सेहो तँ ले अछि। मनरौत
अ एन छी। तखन भाव किअ रैनि गेलौ। मस अछि
गेलै। आग जकर बुमि पड़ै जे जिनगी भवि रिपवीत -
रौ-पौवित- दिगो छनि कमाअ पकड़ि गेलौ अदा से ओग दिन
कहाँ बुमिअ जे कमाअ छी आकि सुमाअ। काजोमे कतौ
राधा कहाँ उपस्थित भेल ? जलिना धावक धावा सिवाँ भूँछा
दिमि धड़धड़ गत छलै अदा भूँछाकेँ सिवा दिमि समलैमे
मायमा कब पड़ै छै। केना-पानिये पानिकेँ बोकेत बहै।
अदा रीचमे एकछी तँ होग छै सिवाक पानि आ भूँछाक पानि
एक-दोसरँ बोकागत, ठाढ़ हूअ गेलैत अछि। ताधरि ताढ़
होगत जागत जाधरि धावँ उंगर उठि धवतीक ले छिछि आ
गेलैत। अदा धवतियोगर तँ दिगो अरकछ कबिते अछि।
आग धरि जे ले बुमि सकलौ ओ अपन केना बुमि पाएँ।
अदा ले, जिनगीक अंतिम डोवणर भनहि सब रात ले बुमि
सकिअ, अदा किछु नर तँ जकर बुमि पारि बहन छी। जँ से
ले, तँ कहियो ले बुमि पेलौ जे हाँसी हएत ? हमही ले
सब एहल वृत्ति करै, अदा सबकेँ हाँसिये कहाँ होग छै।
जगठाम पुवजा-पुवजा मसुखक अंग रैनन अछि, सब अंगमे
गुन-दोष छै, तगठाम केना जोड़ि करै चलाउन जा सकै।
समय पारि कियो दोड़ गेलै आ कसम पारि थकथका
जागै। तगठाम सौमे मसुख रैनर, धीमा-पुताक खेलाँला ले
छी। समय अकून रैन-रैनर पड़ै छै, से ले तँ बगसाँकमे
लोक बगडै किअ जागै।



बिसबि गोन रैनदेर रौरह रैजेक हामी । मम आगु दिनि
रैठले । जगठाम अमिकशि हुन ठुल अछि जे अलको बंगक
होगै । गंध, कप, अ । काव समाष बहिनो एक-दोसबाक
अबकुलो आ प्रतिकुलो अछि । तल्लिा गुनारी आ नान आलो-नान
आ गाठ । नान रैलैए तल्लिा तँ अपबाजित कबियो रैलैए आ
ऊजयो । आ जँ ऊजरोपव कबियो बंग चट्टा ज्ञा, ज्ञा एक-
दोसवपव चट्टा । तनहि थनकमन ऊज्जवसँ नान भ२ ज्ञा
झुदा सभ तँ थनकमन ले छी ।

जल्लिा हुनराडि हुनराडि रा रमिराडि ठहलनाक उपबान्त
ढाहमिसे रैसैक मम होगै तल्लिा रैनदेरकेँ सेहो भेल ।
दुमिगक दुमिग देखि मम रहिअछि नगले । एठाम के दैत ?
केकवासँ मंगलै ? जँ मंगरो कबलै तँ जकबी ले अछि जे
नीके दैत । अपलोकेँ नीक कहि दैत अछि ।

जुग-जुगसँ बंग-रिबंगक हुन-हुनक गाढ बहिनो अथला हवाएन
अछि आ हवागयो बहन अछि । भूमिक हवाग-जीतागक खेले
ले तँ छलै । रैनदेरकेँ अपल-आपव शिका उठलै । अथल
जहनक सेनमे छी, अकनरोडि मे हामीपव चट्टर, कही रूगधे
तँ ले भगठि बहन अछि । भगठले रूधि ले रैताह कहलै छै ।
झुदा रूधि भगठलोकेँ तँ रैताह कह छै । जल्लिा धान-बर्रीक
बगछसँ हामु झुबछि ज्ञागै तल्लिा रैनदेरक मम झुबछि गेलै ।
किछु समय निकलिते मममे उठलै, अमुका रौद के हमरा मम
बाखत । कोलो कि हम असगले मृत्युदंड गेलौ आकि गलै

হৃদা হয তঁ ওগ সভর্ম ভিন্ন জী ? দুনিয়াঁক বীচ অগবাধী জী,
 ওল্ল অগবাধী জেকবা দুনিয়াঁ থুক হেঁক ভগৱৈ। মমমে
 হৃদাত ৰাহক দবদ ৰুমি গঢ়লৈ। কেকবা তেন এতে অগবাধ
 কেলৌ ? কি অগবা তে আকি পৱিৱাৰ তে। আগ কে হমবা সঁগ
 ফাঁসীপৰ চঢ়ত ? জঁ অগবা তে কেলৌ তঁ কি হাথ-পথ লৈ
 অছি। মমমে একাএক সফ্ৰদক শীতল সগীবক মঠকা নগলৈ।
 মঠকা নগিতে ফঁহমঁ নিকনএ নগলৈ- ও ফাঁসী কেহেণ হোগএ,
 জে হঁমৈত অগল হাখে গবদমিমে নগৱৈ। ওল্লিা হঁমৈত ফঁহ
 লোকক মোমায়ে হঁমৈত বহৈ। আ ও ফাঁসী কেহেণ জেকবা থুক
 হেঁক লোক আঁখি মুগি নগএ। কিযো সপুত ৰমি ফাঁসীপৰ চঢ়া
 অমব জ্যোতি জবৱৈত অছি আ কিযো কবিশ্বাএন গজোতমে
 অগ্ৰবাএন বহৈত অছি। এ ধবতীপৰ ককৰো সঁগ কিযো লৈ
 জাগত অছি। সভ অগল-অগল স্মার্থক পাভাঁ বহৈত অছি।
 মল ঠমকলৈ। মমমে উঠলৈ, কেলা লৈ জাগত অছি। আত্মাক
 সঁগ আত্মা জকব জাগত অছি। লীকক সঁগ লীক আ অধনাক
 সঁগ অধনা তঁ জাগতে অছি।

61



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

किमिक गाढगव एक जूठताक अराज देनक। यएह सग्न डी
जे शीतयो भूषिकेँ चन्द्रमा धोखा देनकनि। सवाप चाहे
शीतम जे देनखि दूदा एते तँ भेरेँ केननि जे आत्मासँ
खसि देहलोकमे उतवि गेलाह। चन्द्रमामे जखन गहन नगि
जेते तखन अन्हावमे धवतीगव केकवा के चिन्हत ?

पक्की सरहक अराज स्वर्गते रैनदेरक मयमे जहिला तरेगन
बहितो तबकरा तरेगन आन-नान ज्योति धवतीगव हँसत
आरि प्रकाशित करैक परियाम करैत, तहिला रैनदेरक मयमे
सेहो पतवधन प्रकाशिक आगमन भेलै। ज्योतिक आगमन
होगते ठूठलै, कोला कि हमलेष्टा हँसी हएत आकि अदोसँ
होगते एलै आ त्रिषयामे होगत बहते। दूदा हमरा
जिणगीमे हँसी चढैक राँठ पकड़ एन कहिया ?

रैनदेर पाछु उँनष्ट ताकए नागन। हम तँ उग दिस हँसीक
राँठ पकड़ि जेहोँ जग दिस डगव डोड़ि डगहव पकड़ि
जेहोँ। डगवक तँ सीमा-सबहद होग छै, निश्चित जगहसँ
निश्चित जगह पहुँचै, दूदा डगहव तँ से ले होगत।
घुबिया-हिङ्गि या रौखरैत बहै। मययक तँ डगव होग छै,
डगहव तँ पशु जेन होग छै जे जगममे चलेल जागत
छैक। कि हमसँ पशु भए गेलो। दूदा पशु तँ ज़ीरै डी
आ मययो ज़ीरै डी। दुबुक रीट आत्माक राँस होग छै।
दूदा आत्माक राँस बहितो पशु कहाँ रूमि परै छै जे हमरा
रीट आत्माक राँस अछि। दूदा मययकेँ तँ से ले होग
छै। मययमे ले ज़ीर-जन्तुसँ प्रेम करैत अछि आ प्रेम
परैत अछि। सहयोगी रैन जिणगीमे सहयोगी करैत अछि
आ सहयोगक अपेक्षा बथैत अछि। जँ से ले तँ उ अगन



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

बैक रैरसथा किअए ल क२ परैत अछि । जेकवा बैक
रैरसथा लै हेते तैकवा जिनगीक गावैथी कि भ२ सकै छै ।
तनहि रौआ-ठहना घास-पात रा अन्ध भोज्य पदार्थ तकि
पेष्टे भवि निअए ऋदा मन्थन जकाँ तँ जिनगी जीरैक गावैथी
लै क२ सकैए । मन्थन तँ पातानसँ पानि आनि पीर सकैए,
धवतीसँ भोज्य पदार्थ उगजा सकैए । हव मल ठामकलै ।
मोचती रँग भेलै ! मोचनशक्ति ककलै !

जल्मि कठन रा छूँन वामता देखि वाली ठामकि जागत जे उग
पाव केना जअरै । ऋदा कठरौ आकि छूँरौ तँ बग-बिबगक
होगत अछि । एक छूँरै ठहल होगत अछि जगमे पानि-
थान-कीट होगत अछि आ दोसर ठहल होगत जे सुखल
बैत अछि । जगमे सारधानीसँ निट्टाँ उतवि पाव कएन जागत
अछि । तल्लि तँ पनिआएलौ-थनारमे होगत । कतौ अगम
होगत कतौ कम होगत जगठाम कम होगत तगठाम कल
कठिल सली ऋदा पाव तँ कएन जा सकैए । ऋदा अगममे तँ
डुमरौक आ गडरौक सँभारना रँगलै बै छै । हाँसी नगा,
गवदनि दारि हमर प्राण जेत, ऋदा हँसरियो नगा तँ लोक
मरिते अछि । एहेन-एहेन परिस्थिति पौदा क२ दैत जे
रैरस भ२ लोक अगम गवदनिमे हँसरी नगा प्राण गमरैत
अछि । कि उ अगवाधी छी आकि अगवाधीक सजा परैए । जखन
उ अगवाधी लै छी, तखन अगवाधीक सजा किअए भेटैलै ?

लोखक राघ सिंह किअए दोसबाक प्राण न२ न२ खुन पीरैए ?
उकव कि दोख छै ? यएह ल जे उकवा आगु उ अरैरन



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अब्धि । खेव मल ठामकले । कियो गलब-पोखबिमे दुमि मलेए,
कियो आगि, पानि, पाखव, रिडि मे मलेए । ततरे ले कियो
गाढपव सँ खमि मलेए, तँ कियो गाढपव चढेत-उतरेत कान
खमि मलेत अब्धि । प्रकृतिक तँ अद्भुत जीना अब्धि । झरना-झरना
पन-पन बाँधे पकड़ैत अब्धि आ धकेल-धकेल मिट्टा केत
अब्धि । डुपव-मिट्टाक खाड़ि रैना जीरल-मृत्युक सीमा रैनाले
अब्धि । एक तँ उल्ला आगिमे अगिआएन अब्धि, पानिमे पनिआएन
अब्धि, हरामे हरिआएन अब्धि, तखन केना पलेथि पाएर ।
पवखेले जेहेन आँखि गजोत चालि तेहेन ल कविआएन
बाँदनेमे अब्धि जे रँखिसँ सिक्त कवत आ ल उतिआएन
धवतीमे अब्धि, जे धवतीक पवतके तैना सिब गडाइल अब्धि
जे शक्तिहीन रैना देल अब्धि । सुखन मागक छातीमे दुब कहां
अब्धि जे चाहियो कइ रेंचारी दइ सकती । अन्हारो बातिमे,
जखन हाथ-हाथ ले सुनेत, जखन अपन देहो हवा जागत,
देहक सब अंग निष्क्रिय भइ जागत, तखना तँ किछ बहिरे
अब्धि जे हँखोबियो-हँखोबि किछ दुब धरि नगये जागत
अब्धि । झुदा हम तँ मोनहणी आन्हवा गेलौ । जखन पीरैयो
रैना पानि रँसिया गेल खेका जागत, तहिना आग दुमिसाँ
खेका बहन छी । अपन खेकागत जिनगीपव नजबि पडा ते
रैनदेरक मल सहमि गेलै । ल आगुक रँध देथे आ ल पाछु
घुसकि पलैत । जहिना जिनगीक ओहि मोड़पव कियो टाक
दिससँ दुहेलसँ घेबा, हारि-जीतक ताबतमल ले कइ पलैत
तहिना रैनदेर सेहो घेबा गेल । हारियो मानल दुहेलक
हाथे प्राण गमेरै कवरै, तखन प्राणक मोह बाथि हारियो मानरै
उचित ले । तगसँ नीक जे सामना करैत सामनेमे जतकान
ठाढ़ बहरै उतकानक जिनगीक महत तँ आरो किछ हएत ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

झुनझुन ठाढ़ बहल के सकेए ? जेकर शरीर पी.बी., केसर सभ
लोगसँ जर्जर भऽ खोखला भऽ गेल बहल ओ ठाढ़ केना बहल
सकेए । एवम ओ शक्ति कहाँ छै जे ठाढ़ बखटे ।
रौनदेरक मन विचलित भऽ गेल ।

किछु झग रौनद मनमे उठल, फाँसी तँ पोखरि जागल सदृश
जिहगीक छी । कियो अगम पानिमे डूबलियाँ काँटे, माँटे
निकालि जागल झुनझुन । एवम नगलैए तँ कियो किछुले-
किछुलेवे पिछुडि कऽ खसि, पिछुडि-पिछुडि अगम
पानिमे डूबि, सड़ि-सड़ि सड़निक गंध पसारैत अछि । झुन
जिहगीक अंतिम झोड़ग बूमलहि की हूँ ? कमसँ कम जँ
अपला जेल केन बहलौ तँ कलैत किछु, लैत किछु ल
दूनियाँ झोड़ि लौ । जिहगीक अछुक उपाय कहाँ बूमि पेलौ ।

जवाब.....

ए बचनपत्र अपन मतिर ggajendra@videha.com पर
पठाओ ।



५ मास ५३ अंक १०५

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



गुणनाथ ना

बिदागत नाट

बिदागत-नाट एहि नाटक उपेक्षित दलितगा जिना मे भेलैक, एहन अंदाज केन जाति ठेक । लेकिन अंगन माहि -भूमि मे ग कोन तबह के अरुमा मे अछि एकरा कहलैक जकरत नय बुनैत अछि, पर्वट उतरी गिराव के किछ जिना आ भागनप्रव, पुर्निया आदि के गाम सर मे आगयो एकव कद्र ठेक । ग छेष्टका नग सर के नाट रनि क बहि गेल अछि । तथकथित तद्र समाज के लोग एकरा देखलैक मे अंगन लेटी बुनैत छथि , लेकिन असह्य, धाँगड, दुसाध के ठाम---बिराह, झंडन संगहि अन्ध अरुमनो पव एकर धुम मचन बहैत ठेक । ए नाट मे साथ-आठ ठा कलाकार बहैत ठेक आ दुगए ठा राग्य मन्त्र-मृदंग ओव मज्जीवा बहैत ठेक ।

त चनु बिदागत-नाट के आनंद उठाए अंगन तद्रता के किछ कान लेल...धुग धा, धुग धा तिम्रा --राजि क मृदंग लौक त गेल.....अन अन अन अन... मज्जीव म्रव मे संग देनकय....



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गणनायक फलदायक पंडित पंडित... अहाँ सँ हँसू झुमि ग
मगनायक डल्लेक, शुद्ध संस्कृत मे । किशका, किशका, किशका,
किशका मज्जीव मंग देनकय । नाचख राना टाक तबख जेम्बर-
जेम्बर समाज के लोग डन टक्कर देनाग शुक केनक । ओकर
पाछे एक दोसर नर्तक सेहो बिबली जका टक्कर मगा बहन डन
आ झूठ के बग-बिबग के रँगरेँत ओय - ओय - ओय - ओय रोज
बहन डन ।

बिबिनागी, बिबिनागी, बिबिनागी, बिबिनागी-- मृदंग तान रँदन
दोसर सब निकान नक... किशका, किशका...आरँ बहख दिय रँद
नटोलो... आरँ रौद मे नाचक कथा हेतैक ।

आँगा अगला सँ रिदागत-नाच के आँगु रँद रँग डी ।

नाच कबख राना एकेठा जगह पब जमा भ सुमाख नागन ।
बिबिनागी तनका, तिठक-तिठक ध, तिठकन मदगिन धा । तान
समाष्ट तेन आ नाचो शेय भ गेन आ नाचख राना सँ घोष
तानि दर्शक मँडली मे जा रँसन । नाच मे रिकछा रँगन डन
ओ नाच कबखिह के तानख नागन । धुगा-धुगा...

बिष-तिषक तिषक, बिष तिषक-तिषक -- मृदंग रौजन

हे समाजियो के सब मे सब मिलौनक ।

हे तेन पबरेने पबम सुकमावि

हँस गमन बृषभाष दूनावि....

नाचिया सँ उँठी रिकछा नग आरि गेन आ हर्षित भ रिकछा



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA
उय उय उय उय केषाङ्ग शुक क देनक ।

‘बिष-बिषक बिषक बिष-बिषक बिषक

‘हे ! तब मल रैदन पापन सहजोव हे दाहिनी डुंगर उंगनहि
टासा...

बाट अजुका रैद करैत छी हएव आनद उठासन जेते.....

रिदागत-बाट के आरं आगुक आनद उठाडु... आ प्रितिफिया
प्रगया मेहो राउ अरुष्ट कक जय मिथिला, जय मैथिल,
जय मैथिलि, जय मिथिलाचन, जय मिथिलापन, जय
मैथिलियता.....

बाट कबख राना सरै घोष छैल जेनकि आ टंदरुथ (फूँल
दात्री, मोड़ आब रैडोन कहल सकै अह) देख दर्शको सरै
हंसत-हंसत निहाल भ जेत अछि । नचनिया मिटाअ दिस तकि
बहन नाज सँ नञ्जारती गता मल सिफुडन बाट क बहन डन रा
डनी । रिकछी ओकवा अगना दिस आकर्षित कबख के कोशिनि क
बहन अछि । ‘हे बिरसि उठलि पिडु दधि सुहागिनी नाज रैदन
जेन हएवि..’ नचनिया बिरस क अह हएव जेनक । हंसक कान
मे तमाकन मेरल सँ जे दाँत सरै कारि भेल डनय मे चमकि
उठल । प्रगया अहाँ सरै गेति भ जाडु । जी, जी ह,
रिदागति के पदरनी भ सकैत अछि, पर्वत ग छे रिदागत
बाट । नु थियेठर्स, रिदागति, काणन राना, गहाडी सागान
की... रैक-रैक रैद कवाय जाडु । आथिब अनाग शुक कए
देखौ, मोले अगना मे आये आनी, मै चान चढू मतरानी....
अहाँ सरै के कतेक रूमो जे ग रिदागत बाट डन आ रो



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बाच कबख राना ठहनु गामराण, ओकब राग रैडका डकैत डन ।
राग के काना पाणी के मज्जा भ गेलै.. माय केकरो आन मल
चलि गेलै आ ग रैच सँ बाचख नागन । अपन जराणी के दिन
मे एकब धुम मचन बहिन डनय... धुम मचरैय डनय धुम । एकब
आरतार देखि त पवरैतिया अपन रैसन रैसायन गृहस्थी डोडि
एकबा मल बातिये बाति पड़ । आयन । ह त ठहनु गामराण
गारि सकैत अछि जे...

अगला आगत जे बसिया

पल्ले चनरै हम गगत हंसिया

काह जात रैह कबलिह

लेकिन मोने अगला मे आये आनी ' मे रौटावा की जाल ?
धूमा धूमा, तिमा-तिमा -मृदंग और दोसर तान रैदनि धूमा धिग-
धूमा- धिग- धिबिबि- धिबिबि- धिबिबि- धिबिबि...। किमा-
किमा मज्जीव मेहो ठैठन रैदनिअक ।

सथि हे...

सथि हे, कि पुडसि अगतर मोने

जगम अरपि हम कग निहारलौ,

तरैहू न तिवणित भेन । "

आरै बाचक दृष्ट दोसर मीरीज मे ... जय मिथिलाचन.....



जय मिथिला, जय मैथिलि, जय मैथिल, जय मैथिलियता आ
जय मैथिलिगण के हमरा सँ के अग्रसवण के रीट रिदागत-
गाट करि कोकिन रिदागति के सवण मे प्रस्तुत कवरीक चाहि....

अरे ? दुप । दुप । । --रिक्छा थिसिया क दुप कवा
बहन अछि । एक ठा समाज गमछा के कोड़ । रैलगाथ शुक
केनक । रिक्छा कहलाय आवस्य केनक जे ओकवा पीठ क
अलेले समय रैरिद केन जा बहन अछि । जमीदाव के जूता
थागत -थागत ओकवा पीठ के चमरी मोष्ट भ गेल छय । ओ
अग लेन मात्र दुप कवा बहन छन.. कि जय भवि केकव कप
मिहारैत बहन... जखन ओकवा बुझारन गेलय जे ओकरे कप,
त खुनी भ भवत पाकेष्ट सँ एकठा छेष्टका एना निकालि सगर
सँ अगल छैत देखअ नागन ।

गीत समाप्त भेल, आरि रिक्छा महादेव के रीवी छैल ।

हे लक ज़ी (नायक ज़ी); ।

छै ।

आरि हमसे खुश ।

रौप ले, ।

रौप ले कोन दुश्मति नहि भेल ।

मात मात हम मुद टुकाउन,

तरेहँ उबनि नहि भेलौ ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

मासिक चक्रवर्तमान, ISSN 2229-547X

कोल्हूक रैबद सरं खँलौ

कावज रौठत हि गेल ।

राबी रौठ पछराबी के देखियैन्ह,

ब्रूथ रौठ टोकीदारी । रकबी रौठ सिगाली के देखियैन्ह

‘हफक नार गिबारी ।’ आरं आगु राना सीबीज मे ... जय
मिथिलाटन

रिदागत-नाट के चारिम सीबीज के आगु रैठरैत हम अगला के
रैड आरंदिता अघुतर के बहन जी । हमर आदज ठीक अछि मे
पसंद के निक देखि क रूम पडैत अछि जे अहं सरं आरंदि
उठा बहन जी । अहं ! नाट शुक भ गेल अछि किछ रूमलीय
अहाँ सरं .. अहं सरं गुवा के गुवा हफकनाथ गिबारी जी ।
कल दर्शक के देखियौल ले जे ओ सरं की रूमलौल जे हँसत-
हँसत पोछ मे दर्द हूँ नगलौल ।

‘धृगा-धृगा, मिथिला तिला’

सखी हे ।

सखी हे,

अ माह भादव, भवन रौदव,

गुन्य मदिब मोव । ...



सुन्दर ! सुन्दर ! ! ठीके बिद्यापति मैथिल कोकिल....

अहाँ सरै हएव भसिया नगलौ, अहूँ सरै बिकछी म कम ल डी ।
कतरौ मना केन जाय ओकरा जकाँ सरै गीत पब किछ ल किछ
सुनारैग नाली डी । ग गिय बिकछी महोदय हएव छपकना...

ग माह बादर, रँविसे बादर,

दूधत डुप्पार मोर ।

‘हवा-हवा ... ! !’ दर्शक मडली हँसत-हँसत जोर-पौरत भ
बहन अछि । हँ एक छी रात कह्य बिसरि गेलौ जे बिकछी
अगला के प्रष्ट बुनैत अछि आ पबदेसी साजल सेहो, लेकिन
मगहि गेलो रात ल बिसरैत अछि जे कि रो कानक झमहर
अछि, ननुनिया के बहनिहार आ मल्लया बहेत ओ बुनैत डेक जे
कोनू के रँवद सँ रँसी ओकर हँसियत नए छय । नाचअ राना
सरै जखन ओकर गर्दन मे रँहि माण- अतिमाण सँ प्रेम के
प्रदर्शन करैत बुनरैत छय कि ---माधर तजि के चनलौ
बिदेहे । तखनि ओ बिसरि जेत अछि जे रो प्रष्ट अछि आ
गोफन सँ मथूवा ज्ञा बहन अछि । ओकरा मागल ज़ीरन के
बिषयता मुँठ कग भ नाचि उठैत छय आब रो बुनरैत डेक
---नहि रँवसन अदवा (आदा नखन) नहि अशेवस,

टाक दिस देखय डी बुँडा या के केशि

माछ काहुँ सरै गेल पातल,

अरै की मथि मल अकान ,



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

दिन भवि खष्टि के एक सेव धाव,

एकबा से कैसे रँचत पवत,

छोडि- छोडि सजनि जागडि बिदेस, हँव दोसले छन जखन
दर्शक सँ गारँध नाछीत छु तैकव दृष्ट आगु.....

पौघ के समुका चका स्पर्श आ समरस्य रा कनि-गनि छोट-
पौघ के समुका..... जय मिथिला, जय मैथिलि, जय
मैथिल, जय मैथिलियता आ जय मिथिलापन..... रिदागत नाच
चका पव पँहुच बहन अछि...सरँछी नचनियाँ ग गीत गेलाय शुक्र
क देनक.....

गोद ते रँगमा चननि रँजव

हँष्टिया के जाग पुछे, के नागे तोलाव ।

मासु जी के नडिका, ननद के जेठ भाव,

पुर्न के निखन स्वामी छिक हमाव ।

आरँ रिकछी रँचा जकाँ जिनैरी, रँताशी आव थिनौना तेन छिनिया
नागन..

अखल एकछी नचनियाँ गीत गेनक--

बाति जखन तिसबरा ते ,



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पद्म (पद्मा) आसन हमार

कव कौशिक कव कर्णगत ले

हवरा उव डाव

कव पंकज उव थगत ले

रुखचन्द्र निहार

रिक्छा रीछे मे लोक कथ एकछा समाजि सँ एकव अर्थ रूमरैंग
लेन कहत छैक आ समाजि खुनि क अय गीत पव छीका कवथ
नागन । लेना नागिका पुआन पव अगन मोपडी मे स्वतन छनय
आ रिक्छा आसन छन...

आरि नाटक आ गीतक कथा आगु निथरि आशि अछि जे समागन
दिस अग्रसर रिदागतक नाट के अहाँ सर पछिल जका पमिन
कवरै...

रिदागत-नाट के आरि अंतिम दृष्ट-----

छत्र दर्शक सर के रीछ मे... कावी-कावी मेछगव आ गछगव
देह राना नरयोरना मंद-मंद रुसकिके दरौ आ एक दोसर के
केहूनिया-केहूनिया क कणकुसकी कवथ मे आनदित भ रिक्छा
के दिस एक छैक निहार बहन छन । अघेउ उय के योगी सर
रैनारछी तामस राउ क हराती सर के लोकय छैत छैक लेकिन
दरौन हँसी आ गुदुदागन द्रुदा कथन मानय छन.. एखन नटनिया
सर आनाप क छैत-----



‘ডিগ ডিগিক ডিগিক, ডিগ ডিগিক ডিগিক



कि आहो बाग, लेहवा मे अगिया..

रात ग ड्य चेतक गुमागु जौ अय गीत के पूवा निर्गुण मानय
डैक ।

अहा ! ओकर धमन आथि मे लोव चमकि उठ्य ड्य आ नाच
समाप्तु भ गेल.... जय मिथिला, जय मैथिलि, जय मैथिल, जय
मैथिलियता, जय मिथिलागण...

ई बचनोपव अपन मतेर ggajendra@videha.com पर
पठाऊ ।



१. रणीता अमावी- बिहनि कथा- प्रबन्धिका २.



३. उमेशकाशि सा- बिहनि कथा- कपोक लिखन ३.



जगदानन्द सा मल्ल - ३.४. बिहनि कथा ४. चन्दन
अमाव सा- बिहनि कथा



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

१.

रानीता कर्मावी

प्रवचन

कनिक देव तऽ गेन डन अल्लविका (अग्नी) के काज पव
पहुँचय मे अमनमे पहिन रैव तऽ रैमिये पहिन आरि गेन
डनी मे तेलेन जे रौहव नास्तु कऽ क आरि जायि । कानेज
के पढाई अखन पुन तेन डलेन मे एकठा साँकृतिक परिवद
मे स्पीराडिक काज पकडि लेल डनी । कष्टमव सरिम के
अनुभरक संगे मंगली मे मलावजण सेहो होयत डलेन । छै
पव रैमन रैमन लोकक गिनती रा छैक छेक कक ककरो
किडु जानकावी चाली होय तऽ मे दियडु आ कार्यक्रमक आनन्द
नीय । कथला भारतीय संगीत समारोह तऽ कथला डायमण्ड
जुरेनी मलारोत जेज रैमन के शो कथला आगविस नृ तऽ
कथला जागर कथला रैटा सरिक नाटक मण्डनी तऽ कथला
बृह सरिकन प्रवास हिन । आहि रौनीरुड नृ सिथारंग रना
संस्थानके वार्षिक प्रवचन रिचर समारोह डन ।
रौहव सैन्डरिच कीर्ती आ रैमे के भोजनानय रूनेत काज दिस
भगनी तैयो कनी देव तऽ गेलैन । हृद ग अमगव नहि डनी
जे देव डनी । एकठा आर रौनिका जकव पौव मे मोट आरि
गेन डले सेहो कातमे रैमन डन । ओ जखन लोक सर अन्दव
चनि जेतग तखन छै नग जाय क रैमतग । अग्नी के
मेलजव ओकरे संगे काज दऽ देनकेन । कार्यक्रम शुक
भेन । मेलजव कहनकेन जे अर्ध सँ रौनकोनी के सीठ पव



५ मार्च १०५ अंक १०५)

मानविक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैसु आ लोक सरपव नजवि बाथु। अग्री ओहि लोमल रानिका मंगे
रानकोली मे जा क२ रैसि गेली। ओ रानिका रेशाथी पव
डले।

कनिये देव मे सरपै शोभु भ२ गेल आ कार्यक्रम शुक
भेल। गुरुव अग्रीजी के ओहि शोभु रानिका म२ रातटीत सेहो
शुक भेल। सुभारिक डले जे अग्रीजी अगल रात ओकव पौवक
ह्रितिक कावण पुठित केनथिष आ ओ होली जे अथल रातन
डन के रियस मे रात करै लागल। ओकव किड नर सहेली
भावतीय डले जकवा मंगे ओ भावतीय अन्दाज मे रात केनाग
सीथल डन। ओ होलीमे अगल मित्र सर मंगे थुर होली थेलायन
डन। रातटीत म२ अग्रीजीके त्रात भेलोने जे ओकव चेववा
के उंदसी मात्र पौवक दर्द म२ नहि आसन डहि रवण ओकवा
अगल थुकयहि म२ दु मानक गडरैड लाय दोस्ती के काव
म२सेहो डन। आ एहन समय मे ओकवा अगल नर मंगी सर
रैड सहयोगी नालीत डन।

ओहि रानिका के भावतीय रिशेयतः रानीरूड मंगीत रैड कटिगव
नालीत डले। मे ओ रैरूत आनन्द न२ बहन डन मंगीत के।
रीट रीटमे अगल मायके प्रति प्रत्रिम लोय सेहो प्रदर्शित क२
बहन डन आ ओहि सर अन्दाकावी मे अल्लविकाजीके अगल देशिक
सुगन्ध आरि बहन डलेन। अतक विरिधता म२ भवन शिखमे
सेहो आग लेव अग्रीजीके अगल जीरनशीली उकेरू लागि बहन
डलेन। जीरन मे डूट नीट त२ होयते बहेत अडि दूदा ओहि
के कोन मकृतिमे सरम२ रैठिया समाधान डहि मे ताल
अग्रीजीके उड लक सीगा लेव छेठ क२ देनकेन।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

माथिलिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



उमेशकानि ना

बिहनि कथा

कपावक लिखन

शेर्माजीक आहिम शेर्मा आउव बरि सगुह मे दु दिन रँम बहे
ठेहि । आग शेर्मा डन । आहिम रँम डन आ शेर्माजी दवरँज्जा
पव रँमन डनह । तारत एकठी बिथंगी दवरँज्जा पव आन
आ रँज्जन- "मानिक दस ठाका दियो । रँम भुख नागन । "
शेर्माजी रँज्जनह- "नाज ले होग डो । हाथ पएव दूकत
डो । तीथ माँले डो । डी डी डी । " बिथंगी रँज्जन- "यो
मानिक, पाग ले देरौक हूँ उँ ले दिय, एना दूदगी किएक
कले डी । हम जाग डी । " ओकवा गेनाक रँम शेर्माजी खूँ
रँडरँडयना । दमेक खराग हित सँ नर क२ बिथंगीक
अधिकताक कारण आ ले जानि की की, सरँ मियय पव अपन
दूथा श्रोता कनियाँ केँ सुनरोत बहनाह ।

दूगहव मे भोजन कएनाक उपवास कले डना की कियो
गेष्ट ठकठकारँ नगले । निकनि क२ देखेत डुधि एकठी त्रिपुष्ट
धारी रँरँजी ठाठ डन । हिनका देखेत ओ रँरँजी रँज्ज
नागन- "जय हो जज्जम । दमिडंगा मे एकठी गडक
आयोजन अडि । अपन सहयोगक बानि पाँट सग ठाका द२



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

दियोक । " शेरमाजी- "हम किया देर ? " रैराजी- "बाग बाग एना ले राजी । गुणक भागी रैगु । फना रैगु मेहो पाँट मग देनथिह । अछु गुणक भागी लेन ठाका दियो । " शेरमा जी- "हमरा गुण ले चाली । हम नवक जाग छै छी । अहाँ केँ कोना दिकत ? रैडका ल एना हमरा गुण दियाँरैरैना । " ओ रैराजी रूमि लेन जे किछु ले बैठैत आ ओतम सँ पडा लेन ।

साँस मे शेरमाजी नाँव मे ठहले डनाह । साँस सँ तीस ठा खदबवावी ठुकन आ हुनका प्राम क२ कहनक- "बिधान सभाक छुनार छैक । दियो सँ फना रैगु एकठा लेनी निकारनार लेन आरि बहन छथि । ए मे रैडु खवा छैक । अगल सँ निरदल जे दम हजार ठाकाक सहयोग करियोक । " शेरमाजी निदलेत राजनाह- "एहि नाँव मे ठाकाक एकठा गाढ छै । अहाँ सँ ओहि मे सँ ठाका सारि गिय२ । " एकठा खदबवावी राजन- "हम सँ मजाक ले क२ बहन छी आ आग कोना रैहना ले छनत । ठाका दियो अहाँ । अहाँक रूमन अछि ल जे हमले सभक पार्टीक सबका छै । अहाँक रैदनी तेहन ठाम भ२ जागत जे माथ धुनारक अगारा कोना काज ले बहत । " शेरमाजी गवगात राजनाह- "ठीक छै हम माथ धुनार लेन तेनाब छी । अहाँ सँ जाँड आ रैदनी कवरा दिय२ । निकले छी की गुनिस रैजारी । " खदबवावी सँ धमकी दैत ओतम सँ भागि लेन ।

वातिक तेसव पहल डन । शेरमाजी निमलेव स्वतन डनाह । एकएक हुनकव निम ठकठक आराज पव उछै छैलेह । कमियाँ केँ उठा क२ कहनथिह जे कियो दरबाराक छै तोडि बहन अछि । दुनु गवानी डने उछाउन मे दुरकि छैलेथ । तारत छै छुनारक आराज लेले आ छुनार छै द२ क२ सात ठा मोमट शेरमाजी केँ गवाराँत तीतव ठुकि छैले । सँ अगल मुँह गमजी सँ नपेले डन । एकठाक लथ मे ननकछुआ मेहो



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हुले । रौकी दवाती, कबहूँ, कटिया आ माती बथल हुन ।
एकठा माती रौना आरि कऽ हूँका जोवगव माती पीठ पव दैत
कहकहि- "साव, सरैठा ठाका आ गहना निकालि कऽ सागल
बाथ । ले तँ पवास लेत देवी ले नगतो । " शिर्माजी
गोपयागत रँजनाह- "हमरा ले माले जाड । हम छैक
पेलेष्ट छी । ग नियऽ चारी आ आनसीवा ये सँ सरँ नऽ
जाड । " ओ सरँ पुवा घब हसोथि लेनक । पढास हज्जाव ठाका
आ दम भवि गहना भेँलेले । हएव हिनकव घेँले धलेत डकुरीक
सबदाव रँजनाह- "तौ तँ पवास कँजुन थीले । कतो खबछे तक
ले कले छै । एतरी ठाका छै । मत रँज, ले तँ ननकछुआ
मुँह ये दुका कऽ हलसव कऽ देली । " ग कहैत ओ ननकछुआ
हूँकव मुँह ये दुकेनक । ओ खब खब काँपेत रँजनाह नगनाह
लेष्टिनक ङपवका दुद्धती ये दु नाथ ठाका आ रीस भवि गहना
बाथल छै । नऽ नियऽ आ हमरा छोडि दियऽ । सबदाव दु
जोवगव थापव दैत कहकहि आरँ लेन पव एले ले, आव
कतऽ छै रँज । शिर्माजी किविया थागत रँजनाह आरँ किछो
ले छै रँज, छोडि दियऽ हमरा । डकैत सरँ सरैठा सागल
सगष्टि कऽ रिदा भऽ गेल । थोडेक कानक रौद हिनाति कऽ
कऽ ओ टिचियारँ नगनाह- "रँज, रँज डकुरी..... । " अडोमी
पडोमी दोगन एनथि । कियो थुनिस रँजनाह लेनक । थुनिस
थानागुति कऽ कऽ चारि रँजे जोवरी ये चलि गेल । शिर्माजी
अगल माथ पीठेत रँजे हुनाह- "आग बोले सँ शिर्माजी
पडि गेल हुन । कतेको सँ कुरीङ्ग सँ रँजनाह, रुदा कपावक
निथन हुन कुरीङ्ग से कुरीङ्ग गेलो । "



जगदीश्वर सा मय

ग्राम पोस्ट- हरिप्रव डिस्टेंस, मधुबनी

बिहारी कथा

1- रैतिक भागव

बिहारीक मंडप, टाक-कात हँसी- मज्जाक, हर्य-उल्लासक रातारवा,
झुदा झुदा चुप, नीति ।

रैवाती मै सँ एक दोस्त दोसब सँ - "रैताँ एतेक खुशिक
रातारवा मै सर प्रसन्न अछि पक्क रवक झूठ पब खुशी बहि
देखा बहन अछि कि एक ? "

दोसब दोस्त भांगक बसा मै हिलैत-डुलैत - "भांग रैति सँ पुर
भागव कएतो प्रसन्न बहलै । "

2-जगह



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

महाशयवीर जिरण के अरारसित आ रसुत जिरण मे सगाय के
आगु नटाव आरुत जिरण मेनी ।

बामप्रकाश के माय अगल रैठा-प्रतौर आ पाय रैथक पोता
कए दर्शन आ किछु दिन हुनक संग रितारिक जोत मे अगल
गाम सँ दिगी बामप्रकाश नग एनथि ।

बामप्रकाश एहिठाम सबकारी दु कोठनीक मकान मे बहे छथि ।
माय कए आगमक रौद, जगह केँ दिकत कावणे हुनकव उठैत
रौनकोणी मे एकठा होलैत आरुत पब नगएन गेल ।

बाति मे असगव निन्द केँ अतारै कबठ रौदलैत, माय केँ मन
मे ओहि दिनक स्मरण आरुत गेलैत, जखन गामक फुले केँ
एक कोठनीक घर मे केना ओ दुनू रियजि अगल तिनठा रौटा
संगे थज्जवा कलैत छथि, ह्रदा आरुत एहिठाम ओ रौटा
दु कोठनीक घर मे मायक निरिह मे असमर्थ रौनकोणी मे
उठैत केनक ।

माय केँ आरुत सँ लोवक रौद ठगकैत, ले जगि केखन आरुत
नगग गेलैत ।

3-थुनी

कब्रखानी, रूथ दिनक हठिया, टाककात भौव-भाव, रौगारी आ
थवीदावक हला-थला, कियो रौटे मे रसुत तऽ कियो
कीले मे मसुत ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दीनानाथजी अगल कनियाँ सँगे हँसियाँ सँ प्रेरेनि कएनि । हँसक
झूँहे पब एकठाँ सात-आठ रँथक रँचिया हाथ सँ धनी-पात जेल
हम्रा कबैत - "एक कपेया केँ दु झूँठी, एक कपेया केँ दु
झूँठी"

झूँदा सरँ कियोक ओकर रौतकेँ अलसुना कबैत हँसक तीव सँ
रिनीन भेल जाएत । दीनानाथजी सेहो ओकर रौत केँ सुलैत
हँसक तीव सँ गिन गेलाह ।

दु घँठा रौद, जखन दीनानाथजी अगल खरीदारी पुवा केलाक
रौद हँसक झूँह पब रागस एना तऽ देखला, धनी-पात रौनी
रँचिया पुरँवत असगले हम्रा कबैत । दु मिश्र मोन भय
ओहिठाम ठाव भेला । हँसक कनियाँ - "टनून धनी-पात तऽ
अगल रौनी सँ रँडु अछि "

दीनानाथजी - "कनी ककु ", कहैत आग धनी-पात रौनी रँचिया सँ
- "कोना दै छिनी रूँटी"

रूँटी - " रौनुँ एक कपेया केँ दु झूँठी, झूँदा एखन तक किछा ले
रिनेल, अहाँ एक कपेया केँ तिन झूँठी नय गिय "

दीनानाथजी - "सरँठा कतेक छै"

रूँटी गलैत - "एक,दु, - - सात, आठ - - - रौबह,तेबह -
- - - उलैस, रौस, रौस झूँठी रौनुँजी "

दीनानाथजी - "सरँठा दय दे "

कनियाँ - "हे-हे की कवरँ ? "



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

दीनानाथजी कनियाँ कए गिवा सँ छुप कलैत, अगन कर्तक
जेरौ सँ एकठाँ दम कपैयाक लाँठ निकालि कऽ रूँटी केँ देना
रौद धनी-पात लेत, ओहिठाम सँ रिदा भय गेला ।

घब अरैत, दमन पब रौनहन जोड भैब रैबद, हूक अहठे सँ
अगन-अगन काँ उठाँ कय माँव सनामी देरैअ नागन । ओहो
आग आरि कऽ मर सँ दुष केँ माथ सहनारैत, अगन मोबी सँ
धनी-पात निकालि बाँझद सँ दय देनथिह ।

कनियाँ-“अ की कएनहूँ दम कपैयाक धनी-पात रैबद कए दय
देनिये, एतेक कए घाम लेतहूँ तऽ रैबद भैब दिस थैतए
”

दीनानाथजी - “कोला रौत नहि दम कपैया तऽ सत केँ देखाअ
ठैक दम ओअ धनी-पात रौनी रैतिया केँ झूँ पब जे
असतोस, निवास आ दुख भारि बहक ओ केकरो लेँ देखाअ ।
आ देखीये रिक्केना रौदक थूमी, ओअ थूमिक मोन कतौ दम
कपैया सँ रैनी हेतैक । ”

4 - आठनाथक काव

कबुआली जयनपब बाजमाँझ, रैबथाक समय, पिचक काते-कात
थरिया सर सँ पाँचि भडन । दीनानाथजी आ हूक जिगरी
दोस्त बाँधेनारैजली, दू गोष्ठाँ अगन-अगन साँझक पब
उज्जल चमचाँगत पोती-कुर्ता पहिब, पान खाँगत, मोसमक
आनन्द लेत रैतियागत तेँ जाँगत बहथि । कि पाछ सँ एकठाँ
नर चमचाँगत रैठका एसी रूँलेयो काव दीनानाथजी केँ उज्जल



५ मास ५३ अंक १०५)

गान्धीन संस्कृतम् ISSN 2229-547X **VIDEHA**

पोती-कुती पव थान-पानि उडरैत दलदलगत आग्र निरैव
गेल ।

दुख दोस्तक साङ्गकिन एका-एक करत । बामथेनारैणजी हल्ल
करैत काबरैनाके परिणाम शुक केलेह ।

दीनानाथजी- "बहए दियौ दोस्त किएक अगल झूठ खवाप करै
झी, एसी काब मै रैद कि सुनत, भागि गेल । ठनाहो ओ आठ
नाथक काब पव चलेत अछि, हम आठ मय के साङ्गकिन पव झी
तऽ पानि- थानक झीता तऽ हमले पवत । "

5- कथित मानरता

घब मै झुवाबीजिक कनियाँ अगल आठ रैथिक रैथी आ पाथ
रैथिक रैथी के कोलाना सन्तारे मै नागन, झुदा हुनक मोनक
भार सँ साफ देखा बहन डल जे हुनकव मोन पूर्तिः
झुवाबीजी पव नागन डलेल, जे की वातिक दम रैजना रौदो
एथल तक लोकवी सँ घब नहि एगथि ।

कोलाना दुख रैठारै सुतेनथि । समयक सुग मेलो आग्र बबहन
। दम सँ एगावह रौजन । हुनक मोन मै सका सरैहक आफ्मा
भेनाङ्ग सुभारिक डल । गला त एतेक वाति पहिले कहियोक
नहि भेलै । सहस करैत घब सँ रौहव निकैल, अगल भैसुवक
अगला पहुँचनी । हुनका सरै के कहना रौद शुक भेल हाहसुव
पव झुवाबीजिक थोज । झुदा सरै मेहनत थानी झुवाबीजिक



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कोलो पता नहि । हुनक आठमिन जाहिठाम ओ काज करैत
हुनथि सँ जगत भेल जे हुनक छुट्टी तऽ सौँस पहर पाँटे रैजए
तऽ जेन बहिन आ ओ अपन माँकनि सँ एहिठाम सँ रिदा सेहो
तय जेन बहथि ।

तकैत-तकैत तेल छवि रैजै हुनक मृत-देह पिपवा घाँक
मतवावा रैना धुवि पव भेलैन । देखते मातव सरहक हाथ-
पएव स्रग । कनहारव मचन । रौद सँ स्थानीय प्रतक्षदर्शी सँ
जगत भेल की ओ एहिठाम सौँस कए साते रैजै सँ छथि, किछ
छोठै हुनका हाथ-पएव मारैत देखि रैजैत बहेजे - 'रैसी
नेवारि पि क ज्ञान कय बहन अछि ।'

रूदा हाथ ले कृष्टित माणवता कियोक हुनक रौद्ररौक काव
रूमहक प्रयास नहि कएनक, नहि तऽ ओ एखन जिरैत बहथि
। हुनका तऽ एपेडेमीक दर्दक रैग बहिन आ समय पव उगटाव
नहि हेरौक कावणे ओ छवि रैमना ।

४.



५ मास ५३ अंक १०५

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



चन्द्र कथा सा

सबका, मदलेश्वर अल

मधुबनी, बिलब

बिहारी-कथा -रुद्र भगवा

कवमाण नागन लोक..अनघोत भेन सौमे गाम..झकले देखु
तकले आँखि मे लाव..सगरो सताप पसवन..बहि बहनथि रुद्र
तेया आँखि एहि दुनिया मे..पचामी रवथक अरुन्धा भ गेल बहनि
तगयो सब रुद्र भगये कहैत डनहि. लला-तुष्टका, जव-



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिली बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

जबरा, रूठ-प्रवाण, मूत्री-प्रकथ, सतक तैया, रूचु तैया डनाह.
अनकब कोण कथा अगला रैठा-पोता सत त रूचु भगये
कहेत डनहि कोला रैशी पठन-निखन नहि डनाह अदा रैरैहारिक
जोगाण सँ परिवर्ण, समाज ये घुनन-मिनन लोक, ककरो-कहियो
कोलाठा खवाग नहि मोचनथिह जौरन तबि, सतके हवदम नीके
बन्ता देखरैत बहनाह, तबि गाम ये ककरो ओहिठाम कोला
तबहक दमगवदा काज ये मीन-रैजौणह पङ्क्ति जागत
बहेत कोला तबहक बाग-द्वेष नहि, एकदम शुद्ध-मना, एही गुा सत
दुआले त२ एतेक सनाथ भेटै डनहि सतठा, अनकब कोण कथा
रैडका पडिजा मेहो हिनकब माण करै डनथिह, उमेव ये नमहव
बहिनो ओहो रूचु भगया कहेत डनथिह.

दनाण पब अरुमी नगा रैसन रूचु भगया... अरैत जागत
लोक, के छोठ, के पौघ, सरै रैगम बहेत डन हुका सँ दु
आखब स्वर्ण नय..... जिनगीक उट-नीट गुनरा नय..... थिम्मा-
पिहानी स्वर्ण नय, कला तब पाण, ठहरा मारैत रूचु भगया नजबि
के मोसाँ ओहिना नाटि बहन डुधि, अथि हमारो लोवा जेन.

माँस अगला उतव मुँहे सूतन डुधि रूचु भगया, मुँह पब एथला
हँसी पसबन, दिरा नगाठ, गौदान-रैतकी त जेन... रैसिक बथ
सराव रूचु भगया रिदह तेन डुधि अतिम यात्रा पब... कलारोले
उठन सगरो, नीति रूचु भगया .. आग नहि पौडनथिह ककरो
लोव, सिबलोना-पोडोना, आमक नकड़ ी रौसन जेन, सत काँठी
चटोनक शिखाजनि-सरकग, अथि पडन, सबर, पुन, पमकथि रूचु
भगया, चर्चा-परिचर्चा, कयो रैजनग- "एकरैव रूचु भगया के
कोला रात तेन तामि उठि जेन, रौसति कियो कहनकहि -
अरु के रैड तामि उठैत अछि, हमार त२ हवदम तामि उठने
बहेत अछि, चष्ट द२ कहल बहथिह रूचु भगया"- सत हँस
नागन... धवरा जेव त२ जेनग, हँसैत रूचु भगया.



এ বাচসপৰ অংশ মতৰ ggajendra@videha.com পৰ
পঠাউ ।



অন্তৰ্জীব

পাগ, মিশিবা আ জাতিবন্দক বজৰীতি-

অসময়ে এহি বীচ চলি বহন বিন্ধু পৰি কোলা জাতি বা
ধৰ্মি বীচন নহি অৰ্দ্ধি । কহি সকেত ভী এহি পাৰমিক অসব
পৰ সম্পূৰ্ণ অসামৰীক মৌলমে একেঠা শিষ্টক সঁচাব হোগড় আ
সে থিক থেম । থেম ঠেক থপ্ততিস, লোকস, সভ জীৰ-
জন্তুস । এহিয়ে ল কতহ কোলা বীচ ঠেক আ ল কোলা
সীমা । সভগোষ্ঠ এহি পুৰীত অসব পৰ অংশ মিথ্যা আ
মিলহকে এহি কপে ঙপস্থাপিত কৰেড, জে লোকক মৌলমে ঙ
অভিনায়া বৰ্যোভবি জোব মারেত বহেত ঠেক জে বিন্ধু কহিআ
আওত আ হম সভ ফেব এহি পাৰমিকে থেম-ভারস মণায়ৰ ।
হুগকা লোকমিক মৌলমে কতহ এহি বিয়ক চৰ্চা নহি জে বিন্ধু
কত সঁ আয়ন, ঙ ককব ভী, ও সভ তঁ মাত্ৰ এতৰে জলৈত
ভুথি জে ঙ থেমক পাৰমি থিক । জাপী,গমোড়া, বিন্ধু গীত ঙ
কিণকব, এহি পৰ কোলা মাথাপটী নহি, মাত্ৰ পাৰমিক ঙ সৰ্বজাম
অসমিয়াক থাতীক থিক ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

एहि प्रसंगकेँ एतए उठैतएँ हमर मतनरँ अछि जे
आग काल्हि, खासकए मिथिनामे, किछु हरा तुरक लोकनि रियस
रिना बुझल अगन ज्ञान माक उगयोग प्रारम्भ कए दैत छथि ।
एकर देखन गेल अछि जे किछु गोठे पागकेँ एकठाँ ज्ञाति सँ
रौहि मिथिनाक अस्मिता पर छेष्ट क बहन छथि, प्रायः हूँका
अस्मितक महता ज्ञात नहि छनि । किछु दिन पुरि पागक मादे
मलाज कर्ष उर्फ मल्लाजी कहलनि जे ए ज्ञाति आ कर्ष कायस्थक
उगयोगक छी । हूँदा, एतए हमर कहँ अछि जे ओ आबूक
गुठैराजीसँ प्रभावित भए ए राधा राउ कएलनि, हूँका प्रायः थुरी
नीक जकाँ बुझल हेतनि जे पाग सम्पूर्ण मिथिनाक लोचक
प्रतीक थिक, प्रायः हूँका देखन हेतनि जे मिथिनाक सभ
ज्ञातिक लोक अगन रिश्ताहमे एकए उगयोग करैत छथि, से
छाहे घुलसक भीतवमे हो रा मोचक । सब गुठी तँ एहन-एहन
मोचक कारणाँ हमरा कथला-कथला डब नलीत अछि जे ए
सभ कथला गेलो कहि सकैत छथि जे रिश्तागति मात्र ज्ञाति
रिश्तेयक साहचर्य थिकान, मथान मात्र ज्ञाति रिश्तेयक
उगयोगक रतु थिक, मोती परिवर तँ ज्ञाति रिश्तेय कर्तुरा
थिक आदि-आदि ।

एहि रियस पर मोचना पर नलीत जे जखन समाज अगनहिमे
नई कमजोर हुअ नलीत छथि तँ ओसभ एकठाँ नर
कुठनीतिक छानि छनि मोचितक लता रनि हूँका माथमे अगन
काज स्वतंत्रताक प्रयास प्रारम्भ कए दैत छथि आ तँ गेलो मोच
हमरा ज्ञाति ओली नर धावाक समाज मोचक उगजा छी । किछु
हूँका लोकनिकेँ आर सारधान भ ज्ञाति छानियेह जे अगल
कतरौ हूँक राजनीति कवर, अगल काज स्वतंत्रताक जन हाथ-
पएव मावर, हूँदा कार्यमिच्छि असम्वर । आर मिथिनाक आमजन
अगल अस्मिताक आ अस्मितक प्रति सचेत-सचेत, भए गेल
छथि । तँ ए पाग, मथान, माद कोला ज्ञाति रिश्तेयक संगतिक



५ मास ५३ अंक १०५

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X **VIDEHA**

घोषणा कबरौसँ पुरि आ मोटि लेरि आरुष्टक जे आ मिथिलाक
अस्मिता छी आ एहि पब सब मैथिलक अधिकार छैक । अस्तुमे
मिथिलामा जूड-शीतल चलि बहन अछि , गाढ-रौबिड क
जुडि मे पाणि देन जा बहन अछि, सब अंगन पुरिज आ
अंगनसँ छेँछेँ जूड । बहन छथि आ एहन समयमे हमरा मोन
पड़ैत अछि हरा साहित्यक धीरेन्द्र प्रेमर्षिक लिखन ओ आख

“भेन प्रेमक लोदी एहि जगमे
तै धकए सबतवि दारानन
जूडशीतलक जन-थपकीसन
रौबिड छिये कल प्रेमक
जन..... । ”

(मोव कोठिनाक रौलेत अछि आ पागसँ हवाक अछि । कर्ष
कागसुमे सेहो सिछासु हवाक आदिसे मात्र पाग पलीबि क
रिध होगत अछि, ओहो सब रियास कबए पाग ले मोव पलीबि
क जागत छथि । पूर्णियाँक बाँझामे नर-रिवाहिता रौबसागतमे
मोव पलीबि क रौबसँ धरि जागत छथि । पाग मात्र आ मात्र
मैथिल बाँझाक रियासक रिध-रौबक प्रतीक अछि । रिजय हमार
ठाकब लिथै छथि: “मिथिलाक पारिषद् स्केत्रमे एहि सामान्यरादी
हमीन पारिषद् रिचाकवारक प्रचार एहन सर्रासपी छल जे एखनहुँ
एहि पबसँवाक निम्नलिखित अरुणैय समाजमे रिद्यमान अछि: ... (घ)
पाग सेहो तारिक रिचाकवारसँ सँझ अछि । ” (मध्याकाशीन
मिथिला पृ.२७) - सम्पादक)



ई बचनपत्र अगल मतिर ggaj_endra@videha.com पब
पठाउ ।



बरि भूषण पाठक

उकुकव लेखक हम्मर सगल- ३

जेठक पोथरि सत प्रायः सुथि जागत ठेक ,रूदा एकदम
सुखले बुझि यदि पोथरि ले पाव कब नागर ,तखन पधव कनि
कनि धम नागत आ एक छप कनि ले अगल दू हाथ सँ एक
कोरौ माष्टि हठी ले देखिअओतबते जनक धाव अगल
उपस्थिति सँ अरगत कब दैत..... बिजा ले , गवरी सोथि ले
आ अर्क भ्रति धावणी मे अगल रिषय हस्तक्षेप करैत ,ते
अओ रौरु भैया सत्य ओह नग थिकज जे आथिक सम्पत्त हो
....सत्य कल उद्योगक माग सेहो करैत ठेक । ते ह्य अगल
गामक परिचय कोना दी ,रैष्ठ अमौकर्म मे पड़न छी ।
आ गाम मिथिलाक ,भावतक आ जिलाडक एकठा सधावणी ग्राम
.....अगल खेती-बाँझ ी ,खान-पान ,गीत-नाद ,रौली-राणी
,सामुहिकता क रिभिन्न कसौटी पब ...एकठा सधावणी ग्राम



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

। एकव चर्चा कोणा शुक कएन जाए , ठेन सँ ,जाति सँ ,थेत-
पथाव सँ ,रैडका लोकक संरक्षोषित महानता रा छेठका लोक
पव आबोषित ओडगण सँ..... सरँ गिनाके एके रात ठेक
। पहिले ठेन सँ शुक कएन जाए । टाक दिशो क नाम पव
टावि ठेन ,उत्तरवरावी ,दक्षिणवरावी ,पूरावी ,पडुरावी अथरा डीह
ठेन । दिशोधारित ए रिताजनक अनारो रैतनठेनी ,अश्वरठेनी
,छावठेनी ,दुमधठेनी आ बाजपुतक एकठा अगरो ठेन
। दुमाधक तीनठा रिखवन रिखवन ठेन ,तहिना छाव सभ मेहो
दू ठाम सभन..... ।

रिभिन्स ठेनक प्रति आन ठेनक नरीन नरीन कथ ,नरीन दृष्टि
आ ओकव चर्चा मे एकठा अगमानजनक ठेन । जेना उत्तरवरावी
ठेन अगना मुन सरँसँ रैशी असत्य ,दक्षिणवरावी ठेन सरँसँ
रैशी नरँ ,पूरावी ठेन सरँसँ रैशी एडरसि आ डीह ठेन सरँसँ
रैशी जेम्बगन डले ओ दोसव ठेनक हिसारो उत्तरवरावी ठेन मे
सरँसँ रैशी रैतनगण ,दक्षिणवरावी ठेन मे मूर्धता ,पूरावी ठेन मे
दिधारो आ डीह ठेन मे उथेवगण भवन बहे । आ एहिना मुन
,गोत्र आ रैसावी क हिसारो मेहो अगना के नीक ,सत्य आ
दोसव के ओड ,असत्य मानरो के रैहूत बान घटना ,कहरी
,वृत्तत.....आ जखन एक जाति मे एते रैखवा तखन पूरा गाम
मे कतेकओना आपसी गणिग मे पूरा गाम गामे डले
आ नीक-खवाग दुनु साथे चलेत डले.....

उमा रौरू भुगोन पठ थिण त ठंगड़ ी हिनरैत बहथिण आ
मेठका कवटी क सठक्की सँ अगन तवरा पव हवदम चनारैत
बहथिण जेना कि केओ मज्जुव अगन हसि के पिज्जुरैत ठेक
....ओ कहथिण जे आरौदी रैसि आ घबक समुहक गठन एकठा थाम
पैठैरन पव होए ठेक आ रिशेरक रिभिन्स भागक लोक सरँ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

अनग-अनग पैंठैरि पव अनग निराम रैगलैरैत ठैक ,उमा राँव
झाँहो कहथि जे यदि केरन भावते के देखन जाए त
उततव भावत आ दक्षिण मे अस्थान पैंठैरिगंगा
,गोदावरी ,वारी,गंडक ,कोशी सभक पैंठै मे अनग अनग त्रिगाव
। केरन मिथिले नग मिथिले मे समस्तीपुर के देखियौ
उततव मे अनग आ दक्षिण मे अनग । उततव मे घब पव
घब आ सठन सठन ठैल ,जखन कि दक्षिण मे लठन लठन घब
। रिशान थेत आ तखन एकठाँ दूठाँ घब ,खुरै फैलन गाडी
रिबडी तखन किछु ठाँ घब । आ घबक अरिहति केरन त
पौथरि ,रोड रा मंदिरक आस-पास । अगल गामक रिटाव
करियौ त पुवा जौलक आरादी नरकी पौथरि ,लोना आ रौरी
पौथरि टाक कात रा हब डीह पव कचहरी ,गसकुनक टाक
कात आ रोसड 1-रहेड 1 माझ पव । आ सरसँ उमसव
,रैजव ,सक्कत जमीन पव चमार आ दुमधक आरादी ,एकदम
रैबुव जैका ,कततड जगमि जागत हो ,थेतक आडि पव
,पौथरि मोहव पव ,गाडीक खता मे लोकपिया पव
,पीटरोडक दुनु कात आ मिशिन मे सेहो.....ल खाद देरौक
काज आ ल पाणि देरौक टिता । रुदा सरसँ सक्कत , सूर्य
तगरान आ सज्जताक समस्त गवमी के मोथेत जहिना के
तहिनाएकदम हबिब पततीरौतनक दाँत पव घुमसा
मारैत ,भोव सम.....आ जखन सभ हबिबका जजाति सुथि
जागत हो तखन रैबुवक पतती आ ओकव हब सभक जान
रैटाँरैत.....तहिना चमार आ दुमध सेहो अगल डोष्ट दुनिया मे
एकदम समत आ हबिब ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

गामक सँ सबन गेणहयन पाणि ,गणगी रैबसा आ रीना रैबसा के
पुर्वरिया ठगण होयत चमवठेनी दिस छति जायत । आ
चमवठेनी जे गामक पुर्वरिया सीमान पव रैसथन गेन छले
,समस्त अग्रह मेरा क नेन ,जत के लोक मभ के आ
कहराक अधिकार नग छले जे अउ रौरू अगन देहक ,घबक आ
दुःखध हम्बा दिसि किएक रैना बहन छी । आ आरानी जेकब
पेठ ,देह आ मोषक चर्चा तक अशिष्टीय छलेदेहे नग
मोष तक छुआ जाए रनागंगा जन ,नग गंगा जन नग
परिव कवत ,हस्ती तक छुआए रना गणगी.....सृति आ रर्षगत
रिभिन्स श्लोक ,कहरी ,हरा-पाणि ,भूत-धेत पर्षत तक
हैनन.....

मनुषि चमव सँ पुर्वरिये सीमान पव समष्टि गेन छले ,रूदा
दुःसाध सँ ज्ञायत बहे ,डीहक सककत ज्ञायन पव ...आ जेकवा
ज्ञान मे घुमन बहे सकठ निराका नेन सहस ,उद्याग ,आ ओ
मग्नत थेल बहे अगन बाजा ज्ञी केबाजा ज्ञी हुनकब हन
देवता नग बहथिन ,उकब अगन बाजा ज्ञी ,हँ मिथिनाक
आदिरानी दुःसाधक बाजा ज्ञीआ बाजा ज्ञी पहिले सहन ,गद्दी
,दवराव छोडनथिन आ कितारै ,धुवातत्र सँ सेहो हुनकब
निशानी मिष्टि जागत बहन.....रूदा बाजा ज्ञी रैसन बहनथिन दुःसाध
मभक कलेज मे -

कते घोड़ । तौहव बाजा

कते दुःखसा के
धवती छले अकशि हो.....

आ बाजा ज्ञी आ बाजा ज्ञी कः घोड़ । दुनु अगन मुन सकप
के पाणि ज्ञका छोडि देल बहे आ बाजा ज्ञी मल घोड़ । आ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

घोड़ । मल बाजा जी ,ते घोड़ । छत्रा क पूजा रेशी
धूमधाम सँ लोगत छले आ बाजा जी रना उत्सव दूमाध सभ मे
एकठा खास उत्साह,आत्मारिशिरास जगसाँरैत छले ,रूदा बाजा
जीक मन्दिर कोन ठाम रैले,रिवाज पव ,आचार्यक डीह पव रा
दूमधछेली मेइ थिसा कलक रौद.....

अण्ण गामक चर्चा कोना करी ,खुर मीठ प्रशिक्षा सँजेना कि
केरन मीठ-मीठ अण्णतर होए । केरन मीठ अण्णतर तखन
सँतर ,जखन कि एक-दू दिनक लेन पिकनिक पव आयन जाए
,रूदा जखन जिनगीए रितारै के अछि तखन केरन मैथिली
शेषण गुप्त क उँगिया न के कोना जीयरै आ रात रात मे
ग्रामीण जीरण ,भावतक प्राचीनता आ महाशता क पाठ कोना
कएन जाएआ मैथिली मे सेहो गुप्त जी नग मैथिली
शेषण सभक कमी नग ,जे रात रात मे मिथिलाक महाशताक
रँखन करैत बहता ,हूकव ग्रामीण जीरण क हर्षमेष्ट पहिले सँ
सुनिश्चित बहै छैक ,केरन रिरवण भवराक काज.....छोड़ू ए
सरै के.....तबु हम अण्ण डायरीक इ पाठ अहीक करिता सँ
प्राप्त करैत छी ।

(आगुक तीस-चाबि ठी पन्ना फछेन अछि)

क्याशे:

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष*



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

এ বচনগৰ অগ্নি মন্তব্য ggajendra@videha.com পৰ
পঠাওঁ ।



শ্রীমানন্দব শিশি

মুগি উঠল জনকপুৰবাসী

হুৱা নাঠকনা পৰিষদ পৰৱৰ্তী দেউৰী ৰিক্মী শিল্পত ২০৬৯কে পূৰি
সম্বন্ধ্যমে অন্তৰবাহিষ্টয় মৈথিলী নাঠক মহোৎসৱ আয়োজন কৰণক
জকব উদঘাটন গাঁতলৈ লগাৱক পহিৰ বাহুপতি ডা.বামনৰকা
যাদৱ কৰণনি । মহোৎসৱমে লগাৱ আ ভাৱতকে আঠ গোষ্ঠ
নাঠক সমূহ সহভাগী ভেল ।



চাৰি দিৱসীয় মহোৎসৱকে সমাপণ তথা শৰ্য্য ২০৬৯কে

मानुषिंह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

99



दोसव दिस प्रतिरिन्न नाँठ समूह अरधेने पोखेन लिखित 'कच्चा
डारिग' एर सीमारती मधुरनीक मिथिला अद्युत्ति नाँठ समूह महेंद्र
मर्गिया लिखित ऐतिहासिक नाँठक 'नसरदी' प्रदर्शन कएल छल
। महोत्सवके पहिल दिस भारत सहवसाक पटकोशी नाँठ समूह
हरिचोहन साक कथापर आधारित 'पाँचपत्र' आ मिथिला नाँठकना
परियद जनकपुर बमेश्वरजन सा लिखित तथा अमिनचन्द्र मिश्र
निर्देशित बुधियाव डौडा आ बाक्सनामक नाँठक मञ्चन कएल छल
। मिनापके नाँठक शिंप आ अतिथयके दृष्टिस रोजोड छल
।

नाँठ महोत्सवके किछ तस्वीर सेहो
तस्वीर ग्रामसुन्दर शशि, कान्तिपुर

ऐ बच्चापर अपन मतिर ggajendra@videha.com पर
पठाओ ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X



सुजीत कुमार सा -नाटकश्रुति बखुमे गजबर्क



समर्पण छव २ सुमित आनन्द- लोभ-पत्रिका मैथिली एर
मैथिली कार्रमे अर्वाकवक आकार्पण

5



सुजीत कुमार सा



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बाष्टकप्रति बज्रमे गज्रके समर्पण छव



जलकपुवक बागानन्द टोकक रैम बिस्वाष्टक समाचार डायिकन कवय
जलकपुव अछन अस्पताममे सोमदिस पहुँचते छी की पत्रकार
रैष्टक बाथ सा कलेत राजन बज्र दिदी मरि गेली । अ
मिागक बज्रहमनाही छै सँ एहि सँ रैमी नहि रहबाएन ।
हमनाही हुवागए नहि बहन छन रैष्टककेँ कोणा सांस्त्रना देन जए
। खू सँ नतगत बागानन्द हरा ननरक पुरि अथाक्ष वमने
ठाकब सेहो बज्रकेँ की भेलैक प्रुष्टि बहन छनथि । कम्पला
नहि छन वंगमाटक हनु बज्र सा हमनाही सत नग सँ अतक
जल्दी छनि जएती । बज्र संग वंगमाटमे प्रेममे कथनाक किछु
दिसकरौद परिचय भेल छन अन्त रात्रिगत कग सँ हमनाही कमे
रातटि होगत छन । जहिया कहियो भेलैत छनथि प्रणाम
दिदी कहैत छनिथि आ बज्र असेक क२ प्रणाम प्रणाम कहि दैत
छनी । अन्त एहि रैवक बाष्टक महोत्सवमे एक स्त्राणव रैम
क२ सत दिस बाष्टक देखैत छनहुँ एहि सँ किछु खूनि गेल बनी
। महोत्सवमे सत बाष्टककेँ हम समीक्षा कएल छनहुँ आ हमनाही
समीक्षाकेँ ओ रैवत रैडका प्रेमिक बनिथि । सत दिस बाष्टक
हमने भेलैथि आ हमनाही देखैते राजन नलीथि हम जे मोटल
छनहुँ सएह अणन समीक्षामे बाथि देनिथे ।
बज्रमे बाष्टककेँ प्रति गज्रकेँ समर्पण छन । वंग माटगव



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

बहियो बहैत डनी तैयो एकव खूँ आनन्द लेत डनी । किछु
दिन पूरि मिथिला नाछि कना पबियद जाणकी मन्दिरक प्राङ्गणमे
बूझिबाब डोडा आ बाबूज नाछि मण्डन कएल डन ।
एति नुज छैतीक जेन बिजुखन कवय ओत पङ्क्तिनहूँ तऽ सत
सँ पाछु ठाठ तऽ बजुकेँ नाछि देखैत देखनहूँ ।
बजु मिनापक मदन्य भेनाक रौदो असुष्ट डनहि तैयो नाछि
देखै नहि छोटनहि ।

महेन्द्र मर्गियाद्वारा लिखित छतहा घनि नाछिके कर्तवी देवीक
जिरनु अतिथय कएल डनी । गाम नग सुतेया, काँचक लोक
सहित दर्जन सँ रौनी नाछिके ओ अतिथय कएल डनी । हुनक
अतिथयकेँ सत नाछिके सवाहन जेन अछि ।

दिलीक मेजोवंग संस्था सँ किछु दिन पूरि समानित बजु मिनाप
संग असुष्टीक रौद ओतके मटपब नहि देखागत डनी । बजु
संग नाछि महोत्सवक क्रममे एक दिन पड़ल डनहूँ नाछि नहि
करैत डी तऽ ठाँगा पास कोना होगत अछि एहिपब ओ
टोकरै रौना रौत कहनहि एखन खानी गीत निथैत डी । ओ
जाणकारी देनहि जे एखनहि मैथिली भाषामे ३० ठाँ सँ रौनी
गीत तऽ जेन अछि । हम हएब सँ बजु कोना वंग मण्डपब
आरेख एहिने मऽ कऽ रौत छिन्ति डनहूँ । बरिवाति मात्रे
दास जिया सँ जनकपुर अरौतकान बागानन्द हरा ननरक अधर
नरिन हमार मित्र संग बजुक रियामे रौतछित कएल डनहूँ ।
जनकपुर अरौते मिनाप संग समोता कवाएँ एक प्रकार सँ
सम्पन्न थएल डनहूँ हृदा ओ सम्पन्न हमरा सतकेँ पुरा नहि तऽ
सकन । हृदा बजु मिथिला बाजक जेन जे सगथ थएल डनहि
मलेत अछि ओकरे पुरा कवाएँमे सतकेँ उर्जा नगरै पडत
।

२.

बि एन रु मिहै *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका 'बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



सुमित आनन्द

लोथ-पत्रिका मैथिली एर मैथिली कयमे अवकावक लोकगीत



मिथिलाक उद्योगक लेल लोथकार्य अरु आरथक अछि-अ गप्प
वसित नवाया मिथिला विश्वविद्यालयक कवगति डा. एम. पी. मि
निक 21.04.2012 लेँ विश्वविद्यालय मैथिली विभागमे लोथ-
पत्रिका मैथिली एर मैथिली कयमे अवकावक लोकगीत कयलक



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पत्रिका कलमनि । ओ कलमनि जे लोभकार्य शिक्षक एरि छात्र दुनूक लेख आरंभक छति । लोभक दृष्टिर्ष बिस्वविद्यालयकें आओरो आगु रैठय गछैक । ओ रैठयार जे एतय प्रतिभाशाल शिक्षककें अभाव नहि छति किन्तु दृढ आधुनिकीय एरि परिवर्तन उद्देश्यकें आरंभकता छति । ओ अला जलौवनि जे बिस्वविद्यालयकें विकासकें शिक्षणकें पहुँचयबैक लेख शिक्षक, छात्र, कर्म एरि सबकारक समस्त प्रयासकें आरंभकता छति । कवगति डा. मिह एहि बिज्ञानकें प्रोफेसर डा. कर्मा साहें मैथिली काव्यकें अवकाशकें प्रकाशक लेख साधुबद देवनि तथै एहिना लोभ कार्यकें अग्रसर लोभकें करीक लेख प्रेषित कयवनि ।



एहि अवसरकें बिस्वविद्यालयकें विज्ञानकें प्रोफेसर डा. कर्मा साहें लोभकें प्रकाशक लेख साधुबद देवनि तथै एहिना लोभ कार्यकें अग्रसर लोभकें करीक लेख प्रेषित कयवनि । बिज्ञानकें प्रोफेसर डा. कर्मा साहें लोभकें प्रकाशक लेख साधुबद देवनि तथै एहिना लोभ कार्यकें अग्रसर लोभकें करीक लेख प्रेषित कयवनि ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

लोखर्खक दुवना करैत रैख्यारु जे लोखर्खक लेखक संग बाखव जाअत अछि आ लोखर्खिका पत्रिकाक संग। तेँ लोखर्खक विशेष महत्त्वक भित। उ जेहो कलमनि जे छ। कया साक लोखर्खक मैथिली काखमे अवकाव निष्कक एरि छव दूक लेख महत्त्वपूर्ण अछि।

एहि अवसरपर छ। सुबेन्द्र सा, छ। लोखर्खक लेखक लेख, छ। श्रीराम नाथ मिश्र, छ। प्रह्लाद सा मयाक शक्ति विद्वान लेखनि लोखर्खिका एरि लोखर्खक दूक संस्थामे अपन अपन विचार बखनि। दस अक्षयमे विभिन्न मैथिली काखमे अवकावकेँ सभका उपयोगी माननि।

कार्यक्रमक शुभावसु नीतव कयावी, शुभावसु कयावी, सुनीता कयावी एरि सोनी कयावीक संगठनकार्य भेल। सोसाइटी दुहेक मैथिली एसीएव सुमित आनन्द आगत गान्धे आगत ऐतिहासिक आगत कयनि। मरि संचालन एरि धनराज लेखन छ। कया सा कयनि। छ। सा गहिर लेखि लोखर्खिकाक शकलमे विस्मयकारक महत्त्वक शक्ति आचार्य ज्ञानि कयनि। एहि अवसरपर छ। अरुण कयाव सा, छ। दुहेन्द्र सा, छ। उषा लेखनी, छ। वसन्त सा, छ। विभूति चन्द्र सा, छ। अलोक कयाव मेहता, छ। सुबेन्द्र सा शरीर लेखि अमर्त्य लेखन गीतक, सोनी कयाव, आनन्द, अमृता, किता, अरुण, श्यामल, सुबेन्द्र आदि अलक निष्कक, लोखर्खक एरि छव छवोका उपयोगी छनि।

ए बचनपर अपन मतिर ggajendra@videha.com पर पोछ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

माथिलिह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



सुजीत कुमार सा

नर रूपाव

साँसक सात रोजि गेन छन । साधना एखनधरि नहि आएन
छनीह । लेहा रबसाव उदास रैसन मनोके प्रतीक्षा क
बहन छन ।
जीतेन्द्र प्रसाद तितव कममे दर्दसँ पतेशोण छनाह । मनुषि
दर्द आग किछ कम छन दूदा, ओ तितवकै कछमझीसँ तनारमे
छनाह । साँसक चारि रैजे छह पिलाक साँदसँ ओ आ लेहा
साधनाक प्रतीक्षाक बहन बहेथि । चारि रैजे पंकज साँठ रैन
थेनऽ छनि गेन छन । बीणा मझीसँ भेटै कबऽ गेन छन ।
बहि गेन छना जीतेन्द्र प्रसाद आ लेहा ।
साधना बोले जनगणकऽ कऽ घरसँ निकलन छनीह, ओ कहिकऽ
जे रेबियाधरि छनि आएँ । रैहूत बाम काज अछि कहि गेन
छनीह, कण्ड । रौचरौक अछि, मिश्रीजीके घर भेटै कवरौक जेन
जएरौक अछि, महिना ननरमे अन्तर्विष्ट्रीय महिना दिसक
कार्यक्रममे जएरौक अछि आ रैजावसँ दौकाषक जेन समाज
किनराक अछि, रेबियाधरि आएँ जाएँ ।
जीतेन्द्र प्रसाद मोटि बहन छलेथि, 'की भऽ बहन अछि ?
साधना हवदम घरसँ रौहव बहऽ लागन छथि । की भऽ गेन
छेहि हूँका ? पता नहि कण्ड कि रागाव आ दौकाषकै की



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

भउगेल अछि ? किअ आरथकता अछि साधनाकेँ एतेक काज
ऊँठएरौक ?' ओ मोटेत जा बहन भनाह, 'एथन तअ आबूक
दरौग सेहो रँजावसँ लेरौक अछि । पंकज सेहो खेनकअ
नहि आएन अछि । नहि जानि की भउगेल अछि एहि घबकेँ
?'

लहाकेँ रँजाकअ ओ अगला नग रँसा लेलेहि । जीतेन्द
प्रसाद आ लहा दुनु उदाम बहेथि । प्रसंग रँदलेत जीतेन्द
लहाकेँ छह रँषएरौक लेन कहलेहि । रूमन भलेहि जे छी
समाधु भउ गेली दूदा, ककरो अषरौक पनथेत नहि छै, तखन
लहा गेलो कहनक जे 'घबमे छहपती नहि अछि ।'

जीतेन्द प्रसाद लहाक रात सुनलेहि । अषा भविके लेन ओ
किछु रिचनित भउगेलो आ हएव शृंगरे तोकअ नगनाह ।

जीतेन्द प्रसादक मोन रिदाहकअ ऊँठन, 'की एहलो कतहु घब
भेलेह, जतअ कोलो सामञ्जस्यता नहि । एकरो तअ छेठन
सेहो नहि कहन जा सकैह, की रिमार हएर कोलो अपवाद अछि
? ओ जानि रूमिकअ तअ रिमार नहि पडन छथि । डाकूँव
तअ कहत अछि रँहूत रँसा काज कथनासँ रँहूत थकारुँ आरि
गेन अछि, शिबीवकेँ आवास तथा मस्तिष्ककेँ शैथिल आरथकता
अछि । दूदा कहाँ अछि शैथिल ?' ओ मोटेत बहनाह,
मोटेते बहना ।

पंकज आरि गेल । बीणा सेहो आरि गेल । जीतेन्द
प्रसाद सत किछु देखेत बहनाह, हुनका किछु रँजरे, नहि रँजरे
रँवारले छन । एहि घबक सत सदस्य पूर्ण स्वतन्त्र छन ।
बीणा भासम घबकेँ एक सर्रेक्षण कथनक, हएव पंकजसँ किछु
कहनक, पंकज रँजावसँ किछु समाज अथनक । तोजन रँगन
। बाति आठसँ उगव रँजि बहन छन, दोकाष रँदकअ कअ
दीपक सेहो छनि आएन छन । बीणा दीपककेँ रँजाव पठाकअ
जीतेन्द प्रसादक लेन दरौग मगरौनक ।

बातिक दशे रँजि गेल अछि । लहा सुति बहन अछि । बीणा
आ पंकज अगला कमरे किछु पठि बहन छन । जीतेन्द



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

प्रसाद उडाएणपर पडन पडन किछु मोटि बहन बहेथि एकठा
रात जोडिक२ दोसब, दोसब जोडि क२ तेसब ।
साधनाक२ के० फुठबस२ जोडि गेलैहि । फुठबक आराज
सुनिक२ बीणा आ पंकज राहब आएन । साधना अरि२ जेतैन्द
प्रसादके कमरे चलि अएलीह तथा रंगनमे सुति बहलीह । बीणा
आ पंकज ठह्राएन सन किछु देब ठाठ बहन आ टुपटाप घुमि
गेल ।

जीतैन्द प्रसाद देखिते बहनाह, हेब रात चमराक हिसारस२
रंजनाह, 'कहाँ डनहुँ एखनबि, घबमे नहि चाहपती, नहि टिनी,
नहि चाँद, नहि दरौग । रैबिमे आँर कहल डनहुँ ?
है, मूदा कि कहुँ महिना नलर चलि गेलहुँ थीति पकडिक२
न२गेल । ओत२ सुयमा भेटै गेल । अन्तर्विष्ट्रीय महिना
दिरसक रैमाव डन मलोकमाक घबपर । निम आरि बहन अछि
। सुति बद्ध ? '

'किए, की रात अछि ? आँथि अहाँक नान रूमागत अछि ।'
है, कमि मनि न२ जेल डी, जेडिज ड्रिक । ओतेक नहि नलौत
डैक । नलरक आग रयगाँठि डन । मधु दिसस२ पाँठी डन ।
अगिला रैब हमले नल्लव अछि ।' साधना कहिते कहिते सुति
बहलीह ।

जीतैन्द प्रसाद सुलैत बहना आ मोटैत बहनाह, 'की भ२ गेल
अछि हिसका ? की भ२ गेल अछि एहि घबक२ ? केमहब
जा बहन अछि साधना ? की हएत आगाँ ? नहि, आरि एकब
अन्तु कबहे पडत । कोणा चम२ एणा ?' हुणक छदयक दर्द
रैति गेल । ओ हाथस२ डारीक२ दरी करैछ हेलेत बहनाह ।
कमले रंग जलैत बहन, ओ मोटैत बहनाह

आग एहि शैलबमे अएना नगभग दशे रय भ२ गेल अछि ।
आएन डना त२ कमि तनर डलैहि मूदा कतेक शोभु जीरण
डन, कतेक सुखद डन आ घब । सान पडिते अहिमस२ घब



५ मार्च २०१२ अंक १०५

मानविक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अएरौक मोन कबऽ नलौत डन । कतेक मोन डन घबळै
एक एक थोषीमे । तहियामँ कतेक अतुब आरि गेन अछि
एथन । तहियामँ तनरमे सेहो दुख्खा बूझि भऽगेन अछि ।
दने रयमे एहि शेरबकँ कोना कोना पविटित भऽगेन अछि ।
शेरबक सता सोसागरी सँ सँझक भऽगेन अछि । अ शेरब तऽ
आरि अगल भऽ गेन अछि ।

साधना आरि शेरबक महिना ननरमे जऽ जागन छथि । महिना
ननर आरि तऽ हूणकापव डा गेन छैहि । आरि साधनाकँ
कपेयाक लोभ भऽगेन अछि । तहिया कतेक नीक डनीह
साधना । थोडेर कपेयामे घबक थरि रँठियाँ जकाँ चना लेत
डनीह । घबके सत समाँ ओही पेमामँ कीनन गेन अछि आ
आग की भऽगेन अछि ? साधना दोसरके देखामिथी दोकाणा
थोनि लेल छथि । ओहमँ पैसा अरैत अछि दूदा, तैयो
घबक थरि नहि चलेत अछि । कहियो चाहपती नग, कहियो
टिनी नग, कहियो अ नग तऽ ओ नग ।

कतेक सगड़ ! ! है, ओ सगड़ तऽ डन दोकाण थोनरीक
लेन । कतेक समयलेन डनहूँ साधनाकँ । हमर असनी धन
तऽ लहा, बीना आ पकज अछि । यदि ओह सत ठीक जकाँ
पठि लिख लेत तऽ एहिमँ रँडका धन आओव कि हएत । एकरो
सतकँ युनमँ अनाक रौद मार छली । एकरो सतक
रियामे पडुअरना हेमरीक छली । दूदा की साधना कोना
रौतके रूमती ? माणनहूँ हम दोकाणमे किछ नहि करैत छी,
दूदा घब तऽ रिगवन जा बहन अछि । रँडा की बूनेत हएत
? की बूनेत साधना अ सतकऽ बहन छथि ? ओह की भऽ
गेन अछि साधनाकँ ?

कगड़ ! क रापाव । ओहो एकरी कथे अछि । साधना कहैत
डनीह, 'कगड़ ! रँठियाँ रिकाएत ।'

कतेक रिकाएत कगड़ ! ? महिना ननरक अ दोसब उंगलव
डन कि महिना ननरमे लोक कगड़ किनत दैनिक ? के



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बूझाओत साधनाकेँ । जगजग जग, सीतामती जग, कपड़ ।
गाँ, प्रदर्शनी नगाँ तखन जाकऽ थोकमे कपड़ । रिकामत
अछि । की भऽ गेल अछि हमर ज़िन्दगी ? सामने
अफिसर आँ तऽ झुग चह रैनाँ । दीपककेँ की पडल अछि
? आँगा हमरा घबमे अछि, कालि दोसर घबमे छल ज़ाएत
।

पैसा कतऽ रैछैत अछि ? हमर तनर अछि, दोकानकेँ पैसा
अछि झुदा एकठाँ जोड़को रिकामे कर्जा जेराक अरुआ छल
आएन । लोक ओतरेँ अछि । एह पकड़ अछि । पहिल
नमामे प्रथम करैत छन । शिक्षककेँ छिय छन । आँ हेल
होरैत नागन अछि । कतेक उदास बहैत अछि पता नहि
ककरा सतकेँ सगी रैना जेल अछि ?

‘की भऽ गेल अछि एहि दशे रयमे,’ ज़िन्दगी प्रसाद मोटेत
बहनाह, रँग ज़िन्दगी बहन । ओ कबोछ हेलैत बहनाह झुदा,
साधना निश्चिन्त सुतन बहनीह ।

बोवमे साधना दीपककेँ रँगाव पठाकऽ घबक जेल समाज
मगरौलेहि । घबकेँ ठीक कएलेहि । लहा, रीना, पकड़ सत
साधनाक आँगाँ कतेको समझा सुणओनक । साधना किछ देव
सुलैत बहनीह, किछ कानक रौद ओकरा सतकेँ किछ कहनीह
झुदा, रौतक अस्तु जेल लहाक पिछाँ ।

‘आँखि अहाँ कोन तमाँनी रँगा बहन जी ? की भऽ गेल अछि
? अहाँ कतऽ अरैत ज़ागत बहैत जी ? किछ देव घबमे
बहू आँ रँगाक देख जान कर,’ ज़िन्दगी प्रसादकेँ तामस रँगाकेँ
जबहन छन ।

‘तऽ की कर ? आँ सत काज रँगाकऽ दिओ ? आँ ज़खन
रँगावमे कपड़ । रिकाम नागन अछि, दोकान छन नागन अछि,
तऽ की रँगाकऽ दिओ दोकानकेँ ? घबमे ज़ेसन बहैत तऽ
सत काज ठप्प भऽ ज़ाएत ।’



५ मार्च २०१९

माथिली बिदेह, ISSN 2229-547X, VIDEHA

‘हमदा यवो त२ नहि छलैत अछि । यवमे कम पैसा त२ नहि अछि । यव चनएराक जेन रैठिअ तनरै भेटैत अछि । एहिमे कम तनरै भेटैत छन तहिया अ हाज नहि छन । एतेक मावि पीछ, एतेक सगड़ । नहि होगत छन ।’

‘हम त२ अहाँके किछु कबहोके जेन नहि कहैत छी, हम स्वयं क२ बहन छी । यव रौनव घुमि बहन छी । शुरूमे त२ अहूँ मदति कएल छनहूँ, रैछा आर त२ छोट नहि बहि गेल अछि, अगल काज स्वयं क२ सकैत अछि । यवमे एकठाँ लोकबो अछि । की हम लोकबणीए रैगिक२ बहूँ सत दिन ?’

‘ओह, अहाँ ओहो त२ मोट्टु जे हम रिमाव छी । उँठिक२ स्वयं छनि फिब नहि सकैत छी । रैजावसँ समाज नहि आनि सकैत छी । रैछाकँ पठाग सेहो रैठियाँ नहि छनि बहन अछि । एहिमे रैठिक२ त२ पैसा नहि अछि । जखन हमी सत नहि बहरै त२ की हएत पैसा न२ क२ ? नडका गुन्डा आरावा भ२ जाएत त२ की हएत ? अहाँकँ रैन्द कब२ पडत अ सत काबोराव । अ यव अछि कोनो रैजाव नहि, होछैन नहि । याद बाखू, यव अछि ।’

‘छाह जे त२ जाड, हम दोकास रैन्द नगँ कवरै । कपड़क रागाव नहि रैन्द कवरै । छाह रैछाकँ होस्टेलमे पठाड रा यवमे पढ़ाड । अहाँकँ रैमावीएमे कतेक खर्च भेल अछि, किछु बुझन अछि अहाँकँ ? यवक खर्च कतेक रैठि गेल अछि, किछु बुझन अछि अहाँकँ ?’

जोतेन्द्र प्रसाद छुँछ सन गेल छनाह, ‘हम की देखू ? रैछा होस्टेल जाएत त२ खर्चा रैठत की घटत ? हमरा रिमावीमे पैसा लागल त२ की हमर पैसा किछु नहि रैछन छन ? अहाँ की कह२ छहैत छी ? की मतनर अछि अहाँकँ ?’

दुल्ले स्वयं आराज रैठैत जा बहन छन । रौतछित आर सगड़क कप धाकाक२ जेल छन । तखन बीना छहक कप न२क२ कममे गहूँछन । टुप्पी ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

साधना चाहक कग जीतेन्द्र व प्रसाद दिस रैद । देवीह । किहु
देवक शक्ति । दुष एक दोसबकै देखेत बहन झुदा किहु नहि
राज्जन ।

साधना कगड । न२क२ राखकम छनि गेलीह । जीतेन्द्र प्रसाद
दुपचाप पठन बहनाह । पाएव नग लहा रैसन छन ।
एथनधरि पत्रिका सेहो छनि आएन छन । मोठे अक्षरमे महिना
दिवस मणेरौक कार्यक्रम छन छन । शेरबक लेडिज नगरमे
महिना रर्य मणेरौक पुवा कार्यक्रम छन । साधना कार्यक्रमक
संयोजक छलीह ।

कनरेन राजि उठन । लहा छै छोननक ।

मन्गी अडि, लौरा ?

है, छैक । अगल के ?

‘कहियौन्ह छित्री जी आएन छथि ।’

छित्रीजीक नाम सुनिते साधना जल्दी जल्दी राख कमसँ निकनलीह
।

रैछी, एक कग छह पियरियौन्ह, कली जल्दी ।

साधना कगडा रैदनि लेलीह । बीना चाहक कग कममे बखनक
साधना सेहो छित्री जी सँग छह पीलेहि आ रैग उठा लेलेहि

। ‘है, त२ हम जा बहन छियौ । जल्दीए अएरौक कोशिस
कबरी । बीना, भोजन रैनाहिँह । कपैया अनगारीमे छै

।’ जीतेन्द्र प्रसाद दुपचाप सुलेत बहनाह, साधना छित्रीजीक
फुठवगव रैसि रिदा भ२ गेलीह ।

ए बचोपव अगल मतिर ggaj_endra@videha.com पव
पठाउ ।

बि एच ए विदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका 'विदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३. पद्य



३.१

शोभन कुमार

३.२. दिलीप बस्निया-राम पत्रकार २



डूमेरी पामराण



३.३

जवाहरनाथ कश्यप



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



३४.

प्राथमिक सा



३५.

सुगदीने प्रसाद मल्ल



३६.

बागबिबास साहू

बि एन रु मिहै *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका 'बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



३.१. उद्देश कथाव सा



३.४. नवीन कथाव "आशि"-गर्भक आराज



आशिम स्मरण

मोण किये मिहसन पब

मोण किये मिहसन पब
घब मे आहत बामिण पब



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रान्ता ISSN 2229-547X

VIDEHA

काज कबय मे दौती लागय

तामस साढ़ी रौसल पव

ताज कक जे पाहुन जेकाँ

थाय छी कोणा आसन पव

थोछ-थरब नहि गिया-पुता के

रात सुनारी मोसन पव

गिना कमेल किछ नहि भेटैत

जीयरै खानी भाषा पव

कछु मोटिकय कहिया सुधवरै

जखन उमरि गिरमिस पव

सुमल समय पव काज कक

आ मोटु निज अनुमोसन पव

छवु रैमिकय केँ काणय छी

बीति गिगड़ा गेल ज्ञानय छी

छवु रैमिकय केँ काणय छी

असगकआ जेँ नहि नीक लागय

आओव लोक केँ आणय छी



५ मास ५३ अंक १०५

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

समाधान श्री काका हमरी
रात किये नहि मानय डी

पौष लोक के रात, मोचरय
के के एखन गुदामय डी

आम रार्थ डी रीना प्रयासक
हुमिये गप के तानय डी

नीक आओव अधनाह लोक के
किये एक सँग मानय डी

नर क२ चाननि सुमन राथ मे
नीक लोक के डामय डी

गवती रावग्राव कक

गवती रावग्राव कक
अधनाह सँ पाव कक

दुर्गम सँ के दुब जगत मे
निज-दुर्गम स्त्रीकाव कक

दाम समय के सर सँ रौसी
सदिखन किछु रागाव कक

अगले नीचा, मोन पानकी

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रान्ता, ISSN 2229-547X

VIDEHA

एहि पत्र कल रिटाव कर

बैठ बैठत सुगी, पठा कय

तला पत्र अधिकार कर

भाग्य बैठत कर्मै ठी फल सँ

आत्म कै बिराव कर

प्रेमक बाहव किछु नहि बैठत

प्रीति स्वप्न-सृष्टिगार कर

ए बचोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पत्र
पठाउ ।



१. दिलीप बसिया- २. उमेश पामराण

१

दिलीप बसिया

हम प्रकार



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम छी एकठा पत्रकाव
आय दिनाँर ले लेल छी भाव
जकब महिमा बहन अछि अपाव
रूदा तैयो किए मलैत अछि पत्रकाव

कहलै छी हमही देशक तेसर आँखि
नगा क२ सूर्यपंखी घोड़ १क पाँखि
अन्धाय निकाली हम सब तकि-तकि
सब आ निष्ठा पब बहे छी अँधन
तैयो किए पत्रकाले के गर्दिनि कँठन

हम सब करै छी सब तथा के खोज
सुरैहसँ शोमतक चाहे तुखन बही रोज
चाहे बह२ पब रौदमे खजूबक पात जेकाँ सोगत
तब जाके कबलै छी जलतारै मही रातकै अरगत
तैयो किया सब देखाँरैये हमले नग तागत
राँवाके मवायन रिलेन्द्र मोह, ककवा आगन भुन ओह
तब मवायन दिदी उमा मिह, जकवा केनक सँबासँ रिन्द
अखन देखू यादरै पौडेलके भेल उहे गती, तैयो ले आगन
अछि मोह
बोक्क ए अलचाव ले तँ आरै कबलै हम सब गिन क२ पत्रकाव
जलझाँति ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



डमेशि पासराषक तीक्ष्ण करिता-

डव

हे यौ केशा कहे छि

ले छै डव

आहिममे हाकिमक डव

घबमे घबरातीक डव

देशमे

आतंकवादी-गाँववादीक डव

हे यौ केशा कहे छि

ले छै डव



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जगतार्के लतासँ डब

रागार्के रैठासँ डब

मान्साके गुतोहसँ डब

रिजनी बहिनो

गाँउमगीकबक डब

थेनमे मोट हिकुर्मिगक डब

कपेयामे जानी लोठक डब

हे यो केशा कह छिँ

ले छै डब

गोसागळे भगतसँ डब

मन्दिरक चन्दाके पाडासँ डब

यो खबिदर तँ

डनडासँ डब

प्रेम कबर तँ पोखाक डब

हे यो केशा कह छिँ

बि दे ह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,

मानक बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

ले डे डब ।



बर्ष

मोठा मोठोरि

हेतो बर्षिया

तोवा मंग अली रैव गो

कबरौ हम दूयोन

अली नगमये

एतो घरमे मोतीन

उन्नि उं नि अरैमे ले डे देवी गो

मोठा मोठोरि

हेतो बर्षिया

आठ रैजे नि धवि

मूतन बहे डे तू

गुनम कबरौ डे दूली-टोकाक काम



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह *ISSN 2229-547X*

VIDEHA

केहने करे छै तू अशहबे गे

मोठा-मोठौरनि

हेतो नष्टनिया

बहे छै घरमे रैनम

करे छै उकठा-पेट

लेहले नागे तावा नीक गे

छेजे-छेजे घुमन मिले छै

कामक रैनमे अंगलमे

नागि जाग छै दिक गे

मोठा-मोठौरनि

हेतो नष्टनिया

बाँरु तोहब गामक दूधिया

रैठी तेकब दूधारी गे

सम्बर-तेनुबकेँ दिखब सभ बुनै छै

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

माथगब किअक ले नग डै साङ ी गे

उत सन तू

रौत रैजे डै

रुना कली रुम तौरा

मिथिलाक बाबी गे

मोठा-मोठौरलि

हेतो नष्टिया ।



रौताह

गुम-सुम

लैसन बहे ओ

अपुन हाथक

नकिब निहारी क२

हैसै ओ

गुज-गुज अहविग्या

बातिमे असगले

घुमन-हिङ्गै ओ

गित गुनगुनागत अछि तँ

कथला जेबसँ

गरैसै ओ

हूक भेय-तुसा देखि क२



लोग कहै ओ हिनका

छवि रैताह

सुनि क२ रिखनि-रिखनि

गारि पठै ओ

गहिवल हाठै-अगा-पोठै

नम्रव-नम्रव

केशि-दाठ १

रैछल बहै ओ

घुमि-घुमि क२

माँलि-चाँलि क२ खाँल ओ

जखन कियो

दूतकावैल हिनका

लौम हाँडि क२ कालै ओ

कि साँटे रैताह अछि ओ ?

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

এ বাসোপৰ অংশ ফতৰ ggajendran@videha.com পৰ
পঠাওঁ ।



জৱাহৰনাথ কণ্ঠপ

পানিক বৃদ্ধ চট্টেত খড়ি আদি পৰ

পানিক বৃদ্ধ চট্টেত খড়ি আদি পৰ

বলৈত খড়ি ভাফ

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मिलित अङ्गि प्रकृति मे

थमे लेखत अङ्गि ओकव अङ्गि

तखन रिलेत अङ्गि

सुद्ध निर्माण जन /

आदमी छैत अङ्गि सस्क ताप पव

रिलेत अङ्गि दयाशील

मिलित अङ्गि प्रकृति मे

थमे लेखत अङ्गि ओकव अङ्गि

तखन रिलेत अङ्गि

मानर महामानर /

ए बचनपव अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पव
पठाउ ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA



उत्प्रेक्षि ना

गजल

लैषक डुवी लै टनारुं यै मजनिगाँ

कोना क२ ज़ीयरै रैतारुं यै मजनिगाँ

लै टेरि केनौं किय़ा डवरै हय-अहाँ

स्वनेटे ज़गना स्वनारुं यै मजनिगाँ

डी हय पिय़ासन अहाँ प्रेयक धाव डी

आँजूव मँ हयवा पिय़ारुं यै मजनिगाँ



रैखा कलेजक किया ले सुनलौं अहाँ

हमरा मैं लला नगारुं ये मज्जियाँ

छुटै छै कले छाँ तक्रियो एखै अहाँ

"उमक कलेजा झुडारुं ये मज्जियाँ

रैखल-मगीव

रुद्रुह गङ्गा-हा गंगातुल-रुद्रुह गङ्गा

दीर्घ-दीर्घ-झन्न-दीर्घ, दीर्घ-झन्न-दीर्घ-दीर्घ, दीर्घ-दीर्घ-झन्न-दीर्घ

गज्जल

तक्रियो कनी कालै उघावत लोक
गाडरै कते, दुख मे रैखु गाडत लोक

धबले बहत सरै हथियाव शिखागाव
रैखलै सिमागत त्रुथे समावत लोक

छै भवत टिगगीये छै कलेजा जवत
अहूँ कै उखाडत सरैछाँ, उखाडत लोक

लोकक रैखे बाजुभरण, ग गेलौं रिसवि
खानी कर अरैखे खिहावत लोक

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ई बच्चापन अगल मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



जगदीश प्रसाद मल्लिक पत्र-

गीत-३३

हवा-गड़ । तेबिश्वाएन तेब

भोव-साँस भूमकित बहे छै ।

भोव-साँस.... ।

जग डीह छठि षठि या भूकै



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बरबन्ना, ISSN 2229-547X

VIDEHA

उसवण-रिसवण होगत बहे छै

उसवण-रिसवण होगत बहे छै ।

हवा-गड़ १... ।

ताण मारि, मारि तानि कियो

डिङ्कि-डिङ्कि डिङ्किआगत बहे छै ।

डिङ्कि-डिङ्कि डिङ्किआगत बहे छै ।

हवा-गड़ १... ।

राँखन दोष कबाम झलि

उबदा-थेवहा दोष करै छै

आमा-आम नागि नगौल

तिने-तिन तिनमिनागत चलै छै ।

हवा-गड़ १ ठेबिआएन ठेब

भोव-साम भूमकैत बहे छै ।

भावे-साम... ।



))((

गीत-४०

घात नगोल घात नगन डै
हन कवली अरघात मठन डै
घात नगोल घात नगन डै
कवली हन अरघात मठन डै ।
घात नगोल.... ।
तिलकमिया रंशी रंनि-रंनि
पानि रीट घतिया पड़न डै ।
गंध लोव स्वर्गध कहि-कहि
झूठ मध् अरघात करै डै ।
घात नगोल घात नगन डै ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

बिषय अरघाते होगत बहे छै

गनहउ घात नहोत बहे छै ।

ही-जी डिडिया-डिडिया

ऊनछि-सुनछि सुनछोत बहे छै ।

घात नहोले घात नगन छै ।

))((

गीत-४५

ऊँछि ते आनि तनकि मल

झुका डोती मावि कह छै,

तान-तान गिना रेतान

मग राहि आराज भले छै ।



उठिते आनि तनकि मल.... ।

टट्टा ते कातिक गाडी-बिबडी

गाय-गाय अथाड स्वाग डै,

जाड-हाड संग गिनि दू

जडा अथन जान तोडेत बहे डै ।

उठिते आनि तनकि मल.... ।

सुशम तेन तबरुथी जलिना

रैछा सिब धडेत बहे डै

धरिते तेन पकडि केशे

अलिआगत आनि पारैत बहे डै ।

उठिते आनि तनकि मल,

झुका डाली मावि कहे डै ।

तान-तान गिना रौतान

संग राहि आराज भले डै ।



))((

गीत-४२

देहमँ नमरुव ठाँग जेकब

आरु - धुव रएह कुदि ठेपे छै ।

ठाँग ठेगान हाथो कहैत

बाली बार गकड़ा छले छै ।

देहमँ नमरुव ठाँग जेकब...

ठाँग जेकब हाथी मदृगे

बाँध छुँठ कहाँ बूने छै

छाँ न आछाँ गकड़ा - गएव

बछड़ा अपन करैत बहे छै ।

देहमँ नमरुव ठाँग जेकब...

रुसुक मल गाँव रुसुकी



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मल-मल मलकाष भले डै ।

हला-हला हरिय अरौत

कुदि-हाणि कहैत बहे डै ।

देहसँ मरुव ठाँग जेकब डै... ।

)))

गीत-४३

बग मियाली बोशिलाग रँनि-रँनि

लेहे-लेहे मियाह घोवाग डै ।

भार-अभार अतार रँनि-रँनि

गीत प्रेम लेखागत बहे डै ।

बग मियाली बोशिलाग रँनि-रँनि

लेहे-लेहे मियाह घोड़ एग डै ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

गहवाएन गहन प्रेमि दास जहिला

गजोत-अन्तर रसहाएन छै ।

तहिला ल दिला-दीनाराथ

भक्त-गजोत भक्त कथिआगत बहै छै ।

बग मियाली रोशिलाग रसि-रसि

लेहे-लेहे मियाह घोराग छै ।

कहि रोशिल छयवि मियाह

लेख कर्म निथेत बहै छै ।

तिजे-तिज तिमकि जख जहिला

हरण कंड जलेत बहै छै ।

बग मियाली रोशिलाग रसि-रसि

लेहे-लेहे मियाह घोराग छै ।

भार-अभार कभार रसि-रसि

गीत प्रेम निथागत बहै छै ।



))((

गीत-४४

जिन्गीमे जे संग पुछैए
संगी रहै कहैत बहै ।
संग समवि, दृष्टि-प्रसक्ति
प्रेमी मित्र कहैत बहै ।
जिन्गीमे जे संग पुछैए
संगी रहै कहैत बहै ।
मित्र रनि मैत्रीगी पकड़ि
जिन्गीक मुन मुलैत बहै
जेथ-जेथ कर्मक करैत



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गुण गुण मल गुणोत बहए ।

जिहगीमे जे मंग गुडैए

मंगी रएह कहलैत बहए ।

मंगी, धेगी दोस्त भजब

लैमि रौठ रतिआगत बहए ।

मंग-कर्मग, कर्मग-मंग

गीड लाव निमिआगत बहए ।

जिहगीमे जे मंग गुडैए

मंगी रएह कहलैत बहए ।

मंग मसवि घुसुकि-घुसुकि

धेगी मित्र कहलैत बहए ।

))((



हे रँहिना केना क२ जेरँग ओग घवरौ

थूँक हेकि जग घब निकनलौ

केना जेरँग ओग दुखवरौ हे रँहिना

केना क२ जेरँग ओग घवरौ

थूँक हेकि... ।

केना जेरँग.... ।

जनि-जनि रीखा राणी-रानि

नतरे-चतरे डै हूनरतरी

सुरास-हरास रनि-रनि

सत किछु देखिँ गसरौ

हे रँहिना केना क२ जेरँग ओग घवरौ

पुनःपुनः कहलौ ले एका

कबटे के रंगरंगरी



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

घबहबिया एको ले रौटले

रौटले के घबहबिया

हे रौटले केना क२ जेरैंग ओग घबहबिया ।

गीत- ४३

मठड । हेन हेले डी, भाय यौ

मठड । हेन हेले डी ।

ठकि-ठकि, हूँसिया-पसिया

जिहगी संग थेले डी, भाय यौ

जिहगी संग थेले डी, मठड । हेन...

जुग डन जमाणा डन

कनणि कुंशे नाली डन



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सोम-सोम श्रुतका-श्रुतका

छानि थिथिब रँगन छन ।

अथ स्मृति पारित बहे छी

नठड़ । खेन खेलेत बहे छी ।

नठड़ । लेन लेलेत बहे छी ।

नठड़ । जलिया गाछ उल्ले छै

तकवाड़ छानि पकड़ि छले छै ।

शरद-श्रुत बिष कप गढ़ि-गढ़ि

नठड़ । श्रुत देखलेत बहे छै ।

देख-देख अनिसाएन बहे छी

नठड़ । खेन खेलेत बहे छी ।

ताय यौ, नठड़ । लेन लेलेत बहे छी ।

२

बैठगवन



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दुईकड १-दुईकड १ रैनि अक जहिसा

भूमि भार संग चनए गेलौ छै ।

अकाम-गतान रीट अतब बहिनो

हिनगिन-मिनगिन कबए गेलौ छै ।

जुड़ि-जुड़ि अकब शेरद सधै छै

अक कुदि गन-भाग करै छै ।

चलि-ठालि दुलुक दु बहिनो

प्रेमक प्रेमी कग धड़ छै ।

चलि शिकाबी घोड़ १ जहिसा

कुदि-शानि बस्ता रैगलै छै

अकागयो दहाग चलि तहिसा

गवहनि रीठ गवहनि बटे छै ।

गुबजा-डुबजा रैनि-रैनि अक

पौआ-अवगग कनया-कनग छै ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अप-पवमाप जूग जे रैनो

अक अक भकवाड रैनन छै ।

कप-गुण सब उल्ला-उल्ला

मून तत्र आधाव रैनन छै ।

रिग्न रीछे ठाठ केना बहते

नमगव-डडगव कडरी रैन ।

रैनो-रूक तल्ला बह छै

धरि-धीव धेल छी आस

अछपछ-नछपछ खन छल छै

आमक गाढ महकारी हड छै

गंध आम पमावि-पमावि

मीठ-तीत सेहो रैनन छै ।

भार-भूमि भरजान पमावि

नजवि धिवा तकिंत बह छै ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

नौजो-झरुण समेष्ट-समेष्ट

हरा रीच उड़लैत बहे छै ।

रिडि । रीच लौआगत-ठरुणागत

देथिनिहारो देथेत बहे छै ।

पकड़ि पेटे खोआटा छोड़ि

दुधक फेड़-फाड़ देथे छै ।

झुदा तेयो, आंग्रव छुष्टा रनि

रीछि-रीछि रीखा पकड़ि छै ।

गनि-गनि झुष्टा-ठष्टा

धवतीक भार बूँसे छै ।

स्ववर्णिमा टालि पकड़ि -पकड़ि

सगाड़-जान तोड़ित चलै छै ।

जलिआ कोंगव कप रसि रनि

ठैपी थोनि अकास धड़ि छै ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पाठ-पठना कछु मिबजि

बाँठ रौस धरैए नली छै ।

आशा-आस नगा एक-दोसब

मुना जिनगी मुनए नली छै ।

मोधि-उमि मिबजि कोणव

रीठ रंगि करैए नली छै ।

अतिम छोव नीना जिनगीक

आशा आस नगरैए नली छै ।

फुर्दा-फुना हबिआ-हबिआ

पविराव-गाम रौनरैए नली छै ।

सङ्ग-नर्क उत्तवि अकास

रौड़ि या-रिस्तव समष्टि छै ।

~~फाँसरी~~ २



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माइथिली बरबन्दा ISSN 2229-547X

VIDEHA

हँसि हँसरी जेकि धवनि

पीड़ एत मल तमसागत केलौ ।

बस जिनगीक रूमि ले पारि

कवली अगले मवली रँगलौ ।

ओमरी तनि-तनि दारि गव-गड़

एँठि-एँठि केनक मल मवदनि ।

होगत मवद कवजनि देखि-देखि

ब्रुतिगा-ब्रुतिगा केनक गवजनि ।

जिनगीक दोहरी रौंठ रँगन डे

रँड़की-डोठकी नाँउ कह डे ।

रँड़कीगव रँड़की चले डे

डोठकी-डोठकी डिडिआग डे ।

उँठि भोव धाव धड़ि दू

संगे-संग चमरौ करे डे ।



माबि-आथि रँडकी छैकै

गब-हामि नगलैत बहै छै ।

गबदमि गकड़ा गझड़ा पानि

हबदा-हबदी रँजुरैए नछै छै ।

हाबन-माबन आकि माबन हाबन

हामि गब नगलैत बहै छै ।

हामिबीस गीक हामिबीस गीक छै

क२ ध२ किछु छटैत बहै छै ।

गुरै-उत्तर देखि निहारि

हामि-कामि गलैत बहै छै ।

बिचरित मम

गलैत, झूठगब केशा ले रँजुरै ?

डुअ-गाँठ दिस बाति कलै छै



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

तंग अंग अथतिथारि करै छी

घोरि-घाड़ि घिसिआगत छलै छी

कहिया धरि एना चलै

पछैल, अहंगव केश लै रैलै ।

कठवा ककड़ १ तरना रैलै छै

ढोलक-ढोल मेहो रैलै छै ।

बस-अबस पकड़ि - पकड़ि

काबिगव अह मेहो रैलै छै ।

अहाँ छोड़ि केकवा कहलै

पछैल, अहंगव केश लै रैलै ।

कियो अहक मालि मदि रैजालै

तँ कियो मूव अह भलै छै ।

अनापि तान कियो कह छै

जय-जयकाव कियो मेहो करै छै ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

तग रीट केना क२ चनरौ

पछैलव, झूठगव केना ले रँगरौ ।

झूठक ताग माग मापे छै

गमड़ । जोड़ गगरीत बहे छै ।

मुंगगा, जख रीठ रँग-रँग

तीग लोक भूभाग तौले छै ।

तग रीट केना क२ रँचरौ,

पछैलव, आरो कहु कि कवरौ

पछैलव, आरो....

दूगिगकि बंगमि सज्ज छै

बागि-बागि दृष्टि रँगन छै ।

मेनाक छै-रँजाव रीट

कावी झूठ दूग केना सजेरौ

कावीख-दूग गगेरौ,

पछैलव, कावीख-दूग गगेरौ ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

माथिली बिदेह, ISSN 2229-547X

))((

ई बचनपत्र अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाई ।



बामनराम साहूक दर्जन भरि
कविता-

कतेक दुख काँठरै हबि हे

हबि हे, दुखक ल कोला ओब

दुखक धार रैहए चहुँब

टँटन मन चतुर्बाग कबए

रीट भँवरमे घुबिआगत बहए



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

थाकन तन-मन उरिआगत बहए

जन्मसँ मका धरि डी अनाथ

कतेक दुख काँठरै हरि ते ।

अहाँ रिय हम केना जीअरै

जन्मसँ रैधन केना तोड़रै

थाकन पार चरै केना

दुख सहैत भेलौ मजबूरै

दुखक आस निवास तेन

हरि ते हम डी अनाथ

कतेक दुख काँठरै हरि ते ।

काँठक नार दुखिया सराव

चहुँव रहै रैगाव

रीट धाव भौव खेनागत



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

उत्तिष्ठाएन धावमे डूमे सरौब

थाकन तन हावन मल

अहक शैकामे डी आएन पड एन

कतेक दुख काठरै हयि हे ।

सत्सक नार धर्मक पतरौबि

हयि थोरैया गाव नगरैए

अगल मल मदिबमे रैमारैए

जन्मक दुखसँ झुक्ति पारैए

आत्माक बहस्य जानि

भरसागवकै हयि गाव नगरैए

कतेक दुख काठरै हयि हे ।

रौबलो मस



अगरुहक आगमसँ सत सुथ पारैए

गुसक सई हरा दुथ रैठ रैए

उस फहेससँ जाड रैठ रैए

माघक जाड हाव हिनारैए

फागुन मास सत फगुना पारैए

बैग-अरैव गुना उँड रैए

रौजए कोगनी कु-कु

मोव-पगीला पी-पी

रसन्ती हरामँ सत हर्य मारैए

आम-नीटी रौवसँ रौड एन

फुलक मरुकसँ हरा पगलएन

टैत मास चना-जुअ गहुम पकए

महुआक फुल सत दिस गमकए

रैसाथक रौद धवती तगारैए



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

अमृतम माथिलिह संस्कृतम् पत्रिका

जेठमे खेतीरुव खेत जेतारैए

धानक रीश्व खेत खमारैए

रैमियाँ-रैकान अन्नक भंडार रैठ रैए

अमृतमे आम-जामून खारैए

पाकन आमसँ ठाँ मज्जारैए

खेतक धुव मज्जगत रैगारैए

मारण-भानो किसान करै खेत कानो

खेतमे नगरैए धानक टास

रौटि - पानि दग शोक-मताप

आमिष जगारैए पारनि-तोहारक आम

कातिक मास पौष्टक दूध सतारैए

तेवरुम मास कर्जा रैठ रैए

अग्रहण आगमसँ सब सुख पारैए ।



संस्कृत रीति नाट्य

मासिक समय पूर्ण रीति

द्वितीय स्वर्ण चण्डिका

घर-घरमे दीप जलेत

अकाममे तरेगण चमकेत

राग-रंगिटा मर-मर करेते

टिङ्ग-टुङ्गलीक चरक शीत भेन

गामक टोङ्गरीयागव पमवत

हठ-रंजव उमरि शीत भेन

अदा हव कान्त

ले घर घुमि अएन

उ एरौ कवत केन

रैसन अछि दकथान

दाक पीर रंजन अछि मन्तना



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

मस्तीमे हर्षिता केनक

हार-पाँज्रव तोड़ि लेकाम रँगव

काज तँ रैड घिलौषा केनक

नड़खवागत निशौमे छलैत

सड़कपर नुक्तेत-पड़ैत

नागामे धड़खवागत गिवन

निशौमे लेहोनि पड़न डन

रूदा कहैत डन आ नाग

दिनमे बहैत सड़कक कात

बाँतमे आँखि जागै

सड़कक रीछे-रीछ

हमरा गिवरैत थिछ अगल दिस

रूदा हम तँ छी अगल गीछ

जखन हम होमिमे एरै



आदि बलिने आरुह

गहरव-गहरव गोसाँग थेले

भगता-भगतिमियाँ ठगिमियाँ

देरी-देरताक ठिकेदाव

अमन धर्माज रैनन

पाव-फुल अछुत नडू

दीप-धूप अगवरती भवन

बंग-रिबंगक डाली मज्जन

डाली नगरै गहरवमे तुतिमियाँ

मालि मृदंगक धाग संगे

मूँ-मूँ गारै देरी गीत

गोसाँग थेले भगता-भगतिमियाँ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दुर्लभ देरी टोदहो देरी

अखन छौ देहगव रिबजमान

जे मांगरै मे पुवा कबतौ

कावणीक सभ रोग रियाधि हबतौ

हुन-अछुतसँ रबदान देतौ

रिगवत काज मलोकामला

छुईकी रजिते पुवा कबतौ

रदनामे नहु-डागव-पाठी मांगतौ

रौं जेना कुदि-कुदि घुमेत

रौतक छुईकेँ हिनिते

आहुत जड़ित देखिते

भुत-प्रेत सभ भाषि जेतौ

अबहुन हुनसँ देरी रजारैए

रौन जय गंगक प्रकार नगारैए



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भूत-प्रेत नगन कावणीके

मोठी पकड़ि नूनारै-भगारै

कोथिया गोहारि गहरैवम कवै

करुनामे भागव-पाठी रति मागै

रिषा देल ले देरी मागै

कन-खनदास रौन-रौटाके सतेतौ

गामक-गाम सुझाव कवतौ

सभ डरि एकठगा कन जोड़ि

देरीके मलोनक-रुमोनक

मम भवि नहुँ अँटवी छठ नोनक

भागव-पाठी रति देनक

तँव-मँसँ रौनहन जँतव

अगल-अगल कँठहाव रौनोनक

अखला धरि समाजक लोक

अधरिगिराममे हँसि मले



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

हिंसा-हत्यामे रिश्वरस करैए

एकैसम सदी रैडगनिक सगळै

आण्हव रैनि कर्णकित करैए

धर्मियाँ-उमा-गुणी भगता-भगतिनियाँ

जंतव-गंतवगव रिश्वरस करैए

आँखि बहितो अखन धरि लोक

आण्हव रैनि अण्हवा कहलैए ।

भाग बरोसे

कोला काज एना ले होगए

सोचन सममन काज रैलैए

पूरि निर्योजित मनमे ठालैए

रिग्न जामि रूमि हामि होगए



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

गनत मोर्चा बाह भेटैए

मान-समानापर ठैस पहुँचैए

जेहेन मन ओलेन काज होए

कर्मक फल ओलेन परैए

मोटी समझि जूँ हूँए काज

अहित कम हित काज होए

काजे जेन दुनियाँ रँजन-ए

काज कोला ले छोट-पेघ होए

छोट-पेघ तँ कर्मि रँलैए

कर्मक फल अरुण्य भेटैए

बाज-बक हूँए रा फकिब

सह जी कि मुठ से कियो ले बूझैए

सरहक हित अगिब करैए

अगिब रिष ले पता हिलैए

सभ किछु नाश्विब अगव ले होए



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

सत्य डगव कटिण होगए

रूदा सत् कर्मिँ रिजय भेटैए

अगल काज अगला जेन सत करैए

जे काज लोक दुनियाँ जेन करैए

कर्मरीव ठहए कहैए

सुबरीव-कर्मरीव-कर्मरीवकेँ

तीनु लोकमे जगह भेटैए

भाग्य बनोमे ले किछ होगए ।

हुन-पता

हुन तँ हुन होग डै

पता ले कोणा कम होग डै

रिग पता ले हुन हुनाग डै

पता संगे हुन बहै डै



जल्मि दूथ-सूथ संगे होग छै

सिख गता ले हुनक शोभा होग छै

गता हुन संग काठे होग छै

काठे हुनक बछ्छा कले छै

सूथक संग हुन दग छै

दूथक संग गता काठे दग छै

हुन-हृदय गच्छा सत कले छै

गताक उपेक्षा कले छै

हुन त हुन होग छै

गता ले कोणा कम होग छै ।

भदरौ

तीस दिक मासमे

छह दिक भदरौ बहे छै



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

मान भविष्ये

रौतबि दिन होग छै

लोक कहै भदरौकै

काजमे रौया करै

एहेन कोन रौया

जगसँ मयथे प्रभावित होग

धवतीपव नाथो ज़ीर होग

लेकरो भदरौ ले रौया करै

रूदा मयथेकै महिलामे

छह दिन लेना हासि करै

धवती मुर्ज-चास नम्र

सब दिन अपना गतिये बहै

प्रजाति अपना बचना करै

एहेन पौय काजके

भदरौ कहाँ लोकै



भदरामे जन्म-मर्ण होगए

तखन भदरौ किञ्चए ले बोकेए

भदरामे काज अशुभ होगटे

जखन भदरामे दोख होगटे

तँ सब काज भदरामे ककि जगटे

ले भदरामे खेती होगटे

आ ले पेट भरि कियो खगटे

तद्धमे भदरौ रीया करिटे

भदरौक ले कोला दोख छै

सब दोख मयथेके छै

अगन सूर्यमे आनहव रनि

भदरौके रँदनाम करै छै

भदरौ कोला रीया होगटे

सृष्टि-वृष्टिके बोकि दगटे ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बौर बौर बौर

की केरौ की पोरौ

जेहेन कबर तेहेन पएँ

बौरक बैनी बरोसे

ले चेत कोला काज

अगना बरोसे होग छै काज

जौ बौर बरोसे

बौरकदारी नडरै

तखन पबजय हएत

जे काज जल्ला हेतग

ओला ले कबए पड़त

अगना बरोसे ले होग छै काज

अगन काज जौ अगन कबरै

तखन प्रगति दिन-बाति हएत



सुरावरनरी जाधवि ले रँगरँ

ताधवि पबजरीरी रँगरन बहरँ

की कवरँ मोटि कवरँ

समए सँग काज कवरँ

तखन जिणगीक महत बहत

रतमानमे कवरँ तँ भरियँ रँगत

भूत तँ रीत गोन रतमानपव

भरियँ उँज्जरन बहत

समाव काजसँ चले

जाधवि अणन काज

अणनसँ ले कवरँ

ताधवि आत्मा िनर्तव ले रँगरँ

आत्मानिर्तव भेनाग

सरँहक कर्तव्य रँले

ले तँ एक-दोसराक सँग



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

जिन्गीक गिमागत बहै

अगन जिन्गीक भावसँ

लोक सुर्ग दरैत बहै

दोसबाक भाव केना सहैत बहै

दरि-दरि जिन्गी मलैत बहै

की कहँ कहँ ले जागै

मे हान प्रमात्ता जलै छथि

अगन विकास जेँ सभ कबत

केकरोपव ले निभैत बहै

सभ सुखी, दुखी ले कोण बहैत ।

केकरोपव ले काँस

हान-दान की कहँ

जेकरोपव ले कलै छी



उकवा आथि लाव ले

अगल हावत की कहै

दूख कियो पोछे रौंछे लेत

सुखक साथी सत रौंछे ले

दूखमे जानत अगल हावत ले

केकवा ले काषरै

ले हमर लाव पोछि देत

सत देखि-देखि दूख लेवै

धीवज देखिहायो ले लेवै

हमले देखि लेवै बहै

जहना जवतगव

बुन छिष्ट या रौंछै

घी द२ आगि रौंछै

केकवा देखिहाव कोग ले लेवै

जहने देखे ले अगले बहै



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रवर्तमान ISSN 2229-547X

VIDEHA

मतनरी याव तै रहुतो भेटैए

दुनियाँमे केकरो कोण ले

सुनारिमे एक-दोसबके नुष्टैए

केकवा कहलै के पतियेते

जेकरे कहि छै रहल हँसैए

केकवा जे काषरै

रहल नतिगलैए ।

परिवर्तन

गन-गन क्षण-क्षण सम्यै रँठैए

क्षण-क्षण यौसम रँदलैए

दिन-रँदलि बाति रँलैए

बाति रँदलि दिन कहलैए

खाम यौसम भृत कहलै



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सत भृत्य रैदलोत वैहै

कन-कन डन-डन नदी रैहैत

मागव गिलि महामागव रैहैत

कान रैदलि शग रैदलोत

शगक संग सत किछ रैदलोत

रैदलि-रैदलि नर प्रवान होगैत

प्रपति रैदलि अप्रति रैदलोत

तन-मन रैदलि टोना रैदलोत

परिवर्तन संभावक निश्चय छै

उत्पति-प्रवृत्ति संभाव छलै छै

कवम-धवम नीति रैदलोत छै

रैदलि-रैदलि जिनगी चलेरैत

अहिना जँ सृष्टि रैदलि जाएत

तँ जँ संभाव केना छलैत

सत किछ रैदलितो



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

सुब्रह्म-दास कहाँ रैदले।

मागयक मयता

मागयक मयताक ले अछि जेब

नख मास धरि गर्भमे पालि

तीन मास धरि कोबामे खेना

मुना-मुनारै लोबी सुना

अचवाक डहँसँ दुख रैदा

जिनगी भवि अपन मयतासँ

धीया-पुतारै दीर्घाय रैगारै

भगवानक मयतासँ रैसी

मागयक मयता सुख पहुँचारै

भुखन-दुखनमे डाली नगारै

मागयक मयता अछि रैजेब



सुखक खान मागयक ममाताक

ले अछि कोना मोन तोन

मागवमँ गहीव मागयक दिन

धीबछ अछैन हिमानय मन

जे सुख मागयक अछवामे साँपन

रैछाकै कोवामे मिले छै

ओ सुख ल सुखमे मिले छै

मागयक ममाताक ले अछि

दुनियाँमे कोना जोव ।

पबदेनियाँ गहूँ

आएन गहूँ राँठे अछि गेन

की गायक राँठे भूनि गेन

मन उगकेए साँकि-साँकि देखितो



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

आकि रौं छल दूर देखितो

ओव-छोव ले देखे छी

मल्लै पल्लक रौं छल छल

कि दिनमे कोला कछे छल भल

कि कबरे किछ ले हूँवा छल

दिन-राति मल घरेवा छल

कि हमबामे कोला दोख हूँमा छल

जानि-मानि ले तँ भेल कोला हानि

मान-समानमे जँ कोला कमी भेल

तँ हमरा कोला उगवागो ले देल

रिग्न अपवाद पाल्ल छल छल

हमबामे किछ कल छल

सब दिने तँ पल्ल छल

कोल-कोल कबल ले करे छी



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

पहना पबदेशिया जखल भेल

अपन घब अगना भुलि गेल

कि कोला सौतिनियाँ मंग गलि गेल

उज-ठैलसँ मल मोहि जेलक

आएन पाहुन किअए रौष्ट भुलि गेल

पहना पवाया ल तँ रमि गेल

दिल-बाति सुबता पहनापव नगल-ए

सुबता कबिते लोअए मुर्छा

देहक खुन अथि पानि रलैए

पहना यादि बहि-बहि रलैए

लोला पहना किअए करैलौ

असँ नीक अगामिये बहिलौ

पहनाक अगामिये कहियो ल पछि तौ

दिलक बागसँ दूरे बहिलौ

किअक एहेन दुख अगामिये सहिलौ



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिक्रय, ISSN 2229-547X

VIDEHA

पाहुन जौ पावछा तेते

अपन जिनगी पावदेमे गमेते

केना कोन पाहुनाव रिग्रास कबते

अपन जूआनी-जिनगीके नाम कबते ।

ई बचनोव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।



मदन कुमार झा

सबबा, मदलगेव अल, मधुबनी, बिहार

पृष्ठ-1

कमाना-कौशिक धाव मे दहायल जिनगी



थान-कादो मनायन मष्टिआयन जिनगी

निशो ताड़ पीकेव मातन रौवायन जिनगी

माष्टि टाँग्रव मँ कोलेडु बुखायन जिनगी

लौद जेठ केव जावन हुनायन जिनगी

एमी घब देखु रैसन घमायन जिनगी

हुँअव-ठांगव बगुगठे ठौआयन जिनगी

देखु माजि-मस्कावन उबिआयन जिनगी

देखु लैनेत कलैत आ थौसायन जिनगी

"टँदल" कग अलकहू देखायन जिनगी

गखव-2



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

संगीत लोचक धाव रौताउत

जाति-जाति केव बाति रौताउत

साज-संगीत सौहार्द ले किछु

रिबहा-आदि कलेज जवाउत

भत मे चमकन जखन टंदा

हियामे धेमक झरि उठाउत

कोकनी सौतिन झूठ दूमे अछि

कु-कु-कुकि के लोनि उड़ौत

अचके रौतम एनाह अंगना

"टंदा" सजनी मोन झूड़ौत



गद्य-3

तलौ अछि तान अहाँकेव गान जहिना निगुबिया आम

अहाँ केव टास मन झूँवा देखि टाला रैनन गुनाम

केशि काबि घण्टा घणघोव आमारस बाति मन नागस

लैन काजब सजन टमकन रीझूरी के छँन घास

जएह रौली अहाँक ठोव केव छुमि कय रँहबागछ

महूँआ गाछ पब कोगली सँह रौजन रैनन सुनाम

डेग बाखन जत धवती माँछ रँगिगेन ओत टास

कनमूँ पजेरै-सँकाव सँ अँगना रैनन सुबधाम



कमलम जूझनी देख सुनिबूझि हमर हेबायन

पिरी जेन लहबम रीकन भमरा भंगेन रीदनाम

"टंढर" पत्रिका पासन प्रेम केव रीष्ट पब रीक्षा गछ

दिउ ल लहबम एकवा पिआय रीगमा कलेजा-धाम

गछन- 4

रीष्टि खेनक गमाला रीजाव मे

गछ-धाखी सजेनक सटाव मे

भाव-रीपो सँ देखु गछ-त डे

प्रेम देखु हृमि डे भजाव मे

आरि मातोक मता रीकाय डे

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

लह-लता भमेनक गेब मे

जे कहलै नरगा समाज मे

मेह नामी रेशन डै जराव मे

देखि "टंढल" पवन डी रिटाव मे

माधु-मते कमल रेडिटाव मे

झजागल

212-212-212-12

गद्य-5

हमत२ कनिते बली आर्थिक लाले सुखा गेलग

अगल कागरी पव देखु हमरा हँसा गेलग

लोक पृथुनक जखन कहल ल भेल किछु



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

असंगत आग सत रौत अलले रौजा गेनग

साओन-रौदवी जे आगि उलठे धरकि उठन

आग सैह आगि एकबूँद गमेल पना गेनग

रैमि अँगना भवि बाति गलेत डुलौ तरेगन

आग सैह तरेगन केयो आँचव सजा गेनग

कतेको मान सँ पठरौत डुलौजे गाढ "टँदल"

आग अँगना मे सैह बोगन गाढ हुना गेनग

-----रौ-१+-----

करोअ-१

तामन सभलौ सगना लावक धार मे

कष्ट दरौगन जग हमार गृहमार मे



रैमन छी एकात निजहि परिवार मे

सौंगव थोसि बहन छी छुठन चाव मे ।

कथा-2

लोक भुखले पेट टिकबैछ रौठ पव

छै ठकबैत सबकाव मृतन खाष्ट पव

मिन्न छुटैछै लताक आरि करन

कोला आम जनतासँ नागन चाष्ट पव ।

कथा-3

अगल महीय कबहुनिए नाथरै

सुगले गुरू सँ टिगरी पाथरै

छी स्वतंत्र देशे के रानी तर्ग

की रबछी सँ मना गाथरै ?



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आन्तरिक दूरदर्शन केन्द्र से दूर ५०-०३-२००४ के तब-
कृष्ण कार्यलय से प्रसारित एक ही कविता:-

(1) हमारे पठारे और

बोरो यो, कीमि दिख ल हमरो कितारै

बोरो यो, हमारे पठारे क, थ, ग, घ और ।

मिदिम हम गङ्गा जेरे,

पठारिथि क२ आरिम्ब रँगरे,

कवरे हमारे री.ए.एम.ए. पास,

बोरो यो, गामो पव कवरे मन्थी काज,

बोरो यो, कीमि दिख ल हमरो कितारै

बोरो यो, हमारे पठारे क, थ, ग, घ और ।

रैथी-रैथी मे नहि बहते अतव

हमारे रँगरे डाकठव, गङ्गा निसव,



५ मास ५३ अंक १०५

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बहि कबलै और ककरो आस,

बारू यो, बहि बहलै और हम लेकाव,

बारू यो, कनि दिख ल हमरो कितारै

बारू यो, हमर पढ़लै क,ख,ग,घ और ।

अरना सँ सरना हम रँगलै,

देशे समाजक मेरा कबलै,

बहि मलै हम ककरो बोखारै,

बारू यो, चिन्हलै हमर अप्पन अधिकार,

बारू यो, कनि दिख ल हमरो कितारै

बारू यो, हमर पढ़लै क,ख,ग,घ और ।

दहेज-प्रथा केव भूतो भगतग



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बाबी समाजक शोषण बकतग

तखनहि हेतग देशेक पूर्ण-विकास,

बाबू यो, जखल पठरौ हमर किताब,

बाबू यो, कीनि दिखल हमरो किताब

बाबू यो, हमर पठरौ क,ख,ग,घ आरौ ।

हाथक

काबी अकामि

बिजुबी चकमक

बैर्या मरले

माष्टिक गंध

गमगम गमके

बाचय मोब

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पाल्शिक अ बिदेह' १०५ म अंक ०१ मइ २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मान्द्विह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

साँष्ट रिहाई

थरुचनक आग

कटा अटाव

आमक गाडी

थोपड़ १ डारगड

पमेलो घाम

जोति रिवाव

कयनक राँडग

धानक रिया

झंग जलव

हबियव कटोव

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पालिक ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मइ २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह **ISSN 2229-547X**

VIDEHA

सगरो रीध

हब रीबद

अशिष्टित प्रयक

जोतय खेत ।

ई बसोपब अश मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाड ।



नरीन हमार 'अशि'
गर्भक आराज

गर्भमे तोहब हकमिगारी काँठी
जूमि हमार सता लीय माँ ।
एक रीब जन्म नय कय,



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जिन्गीक दुःख-सुख मिथय दे लोय माँ ।

माँ तुहि बूमयै दुःख हमर,

दुनियाँ मै पौव पम्पौव दे लोय माँ ।

दाय, बाँबा आ बाँबू कतरौ सतेथि,

मबरम तुहि त गपेय लोय माँ ।

गर्भ मै तोहब हकमियारी कष्टी,

एक रैब जग दय दे लोय माँ ।

बाँबू कतरौ कहथि अभिगोप,

हम दुबुक आम रँगरौय लोय माँ ।

गर्भ मै रौंठी हकमियारी काष्ठे,

उकवा जूनि सता लोय माँ ।

रौंठी जूँ बहि जेते जग,

दुनियाँ कोणा रँठतेय लोय माँ ।

गर्भ मै तोहब रिणती करियौ,

जग हमरा दय दे लोय माँ ।

ई बचनोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।

बिदेह बुतन अंक मिथिला कला संगीत



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,

मासिक संस्कृत, ISSN 2229-547X

VIDEHA



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला स्वागत शो

चित्रमय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.



उमेश मंडल

मिथिलाक रसपति स्वागत शो

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine*



५ मास ५३ अंक १०५)

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिलाक ज़ीर-जुड़ु झागड मो

मिथिलाक ज़िन्गी झागड मो

मिथिलाक रत्नपति/ मिथिलाक ज़ीर जुड़ु/ मिथिलाक ज़िन्गी
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई बच्चापन अपन मतिर ggajendra@videha.com पब
पठाउ ।

बिदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक उदय शर्मा (मूल हिन्दीसँ
मैथिलीमे अनूवाद रिलीज उपेन)

मोहनदास (मैथिली-देरनागरी)



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चक्रान्तर ISSN 2229-547X

VIDEHA

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतसक हिन्दी उपन्यासक सुश्रीमा सा द्वारा मैथिली अनुवाद

छिन्नमस्ता

३. कनकमणि दीक्षित (मुम लण्काई) मैथिली अनुवाद श्रीमती कर्मा श्रीक श्री श्री श्रीराम शर्मा

भगवत रैडक देश-भ्रम



४. मोहनदास गायन केव दूरी हिन्दी कविताक मैथिली



अनुवाद अनुवाद कर्ता

आशीष अनन्तराव उ.प्र.भूत



अभि कर्माक मैथिली अनुवाद

आशीष अनन्तराव

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद* बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष

५ मास ५३ अंक १०५)



मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७. "लेखनपत्र बन्धु" -



श्री काशीनाथ सिंह (हिन्दीमै)

मैथिली अक्षराद



श्री विनीत उग्रेन) १. अक्षराद

रज्जुत- हम हिन्दी भा हिन्दी कथाक मैथिली कथासुबि विनीत



उग्रेन द्वावा-

८.



निर्वाणद गायन केव दुष्टा हिन्दी करिताक मैथिली



अक्षराद अक्षराद कर्ता

आशीय अक्षराद



हम ले छै छी अगला उंगर संदेह

हमरा अहाँक माँस

एहिना रँगन बरए दूरी

अम अगल सहाज दए क ले कबए छैत छी

अगला उंगर संदेह

आ ले अहीकेँ कबए छैत छी

रौंगळत.....

२

लोद पघिसि बरए अछि



मन्त्र अथवा बहल अछि ज्ञवि कए

आ बौद पयलि बहल अछि-----

बाज्जा नृष्ट बहल

मन्त्री मुति बहल

उकील ज्ञाणि बहल

बिपक्ष नाटि बहल

कुकुर रौठपव भुक्ति बहल

हम

देखि बहल छी छुपछाप अ मत्त ।

अ

शब्द अछि क्वाणक मैथिली अग्रद



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X



अनुवाद कर्ता (आशीष अनुवाद)

साथ-- ए अनुवाद मधु संगम सदन द्वारा अवरी-हिन्दी कवाण
पत्र आधारित छि---

तु शुक करैत छी आगम कवाण केव मैथिली अनुवाद ।

कवाणक पहिल अध्यायक " अनु-संज्ञा" कहल जागत छै ।
एहि अध्यायमे सात ठाँ आयत छै (आयत मल्ल श्लोक) । ए
सातठो आयत पैगयब मोहनाद मल्ल नामक जगल पत्र कहल ।

१) शुक करैत छी आगम खुदा भगवानक नामसँ जे की एकमात्र
प्रमाण केव हकदार छथि ।

२) जे की रीझका प्रमाणित आ दयारल छथि ।

३) जे की बोजे-बजा (रीझना केरए आ देरएके) मानिक
छथि ।



५ मास ५३ अंक १०५)

गान्धीन संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४) जिनकब हम सब पूजा करैत छिन्हि आ जिनकासँ मदति माँहो छिन्हि ।

३.) जे की हमरा मोन आ मनी राँठपव चरौ जेन प्रेषित करै छथि ।

३) ओहि लोकक राँठ पव सेहो चरौक जेन कहै छथि जे की खुदा केव हिय छथि ।

१) आ हुनका संग बहरौ जेन सेहो प्रेषित करै छथि जे की ल नीट छथि आ ल पथञ्जलि ।

३.



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X



“बबलब बग्गु” -

श्री कशीनाथ मिश्र



(हिन्दीसँ मैथिली अन्वयाद

श्री रिशीत उपेन्द्र)

श्री कशीनाथ मिश्र जन्म:०५ जनवरि १९३१, कथा संग्रह: कलशी
उपखान, उपखान- अगला मोर्चा, कशी का अम्मी, बेहल गब
बग्गु । संस्कार: घर का जोगी जोगड़ ।, याद हो कि न
याद हो, नाटक: घोश्वास

रिशीत उपेन्द्र रिशीत उपेन्द्र (जन्म: 7 अप्रैल, 1978, नमिहान
पूर्विका जिलाक सुखसेना गाममे) । पेट्रिक घर: आनंदपुरा,
मधेपुरा । प्रारंभिक शिक्षा ऋंगेव जिला अंतर्गत बांग्राम आ
तावापुरमे । तिनकासमी भागनपुर विश्वविद्यालय, भागनपुर सँ
गणित विषय मे बी.एस.सी. (ऑनर्स), यावराडी कानेज,
भागनपुर । जर्मिया मिथिया ग्लोबिया, नग्न दिमी क हिंदी रिभाग



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह बिदेह, ISSN 2229-547X, VIDEHA

मैं जन्मदाता और बचाने के लेख में स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
तावतीय बिदेह तब, नए दिने मैं अंग्रेजी पत्रकारिता में
स्नातकोत्तर डिप्लोमा। एक जन्मदाता बिदेहविद्यालय, हिमाचल मैं
जन्मदाता में मास्टर डिग्री। जर्मिया मिथिया ग्लोबिया, नए
दिने क लेखन मंडला में एव फॉर पीस एंड कानूनिकल
बिदेहविद्यालय क पहिल रैंक डाक्टर और मॉडर्निजेशन प्राप्त।
तावतीय बिदेह तब, नए दिने मैं फ्रेड भाषा क शिक्षा। डाक्टर
जीवनमें बोर्डिंग कनवें, भागनख (बोर्डिंग ऑनबलेशनक हरा
माथा) मैं जुड़न, कएकठा मरिछ पत्र-पत्रिकाक संपादन। जर्मिया
मिथिया ग्लोबिया, नए दिने हिन्दी विभागमें अध्यापक दोबारा
"हमावी पहचान" नामक पारिभाषिक समाचार पत्रक संपादनक मंडलक
मदत। दिनेमैं प्रकाशित कएकठा बाह्यीय अंग्रेजी समाचार
पत्रमें ग्रामीण विकासक वार्षिक बिदेह, हिन्दीक प्रचार-प्रसारमें
केन्द्रीय रित्त मंत्रालयमें योगदानक अनारा गुजरात मंडलमें
अंग्रेजी और गुजराती मीडियाक भूमिकापर मधुमोष। हिन्दी,
मैथिली, अंग्रेजी भाषामें विपुल लेखन और स्वीता नावायन, मेनि
थकन, महेश वैभवजन आदिक लेख सतक अंग्रेजीमैं हिन्दीमें
अनुवाद। रविश पत्रकार अवरिद मोहन द्वारा संपादित
"लोकतंत्र का नया लोक" में उपन्यास द्विपात्र भंडार्य,
जी.कोठेश्वर प्रसाद और नमिनी वैजल मोहनिक अंग्रेजी लेख
सतक अनुवाद और पुनर्लेखन। अनियमितकालीन कला पत्रिका
"कैलराम" में समग्र संपादन। मैथिली करिता संग्रह "हम पुछैत
छी" प्रकाशित।
साहित्य अकादमी मैं प्रवृत्त हिन्दीक रविश कथाकार उदयप्रकाशक
दीर्घ-कथा/ उपन्यास "मोहनदास" क मैथिली अनुवाद। पत्रकार,
लेखक, कवि और अनुवादक विनीत उपेन, दैनिक भास्कर, दिने
प्रेस, हिन्दुस्तान, देशेर्षुमें पत्रकारिताक रीद और-कालि बाह्यीय
सहावा, नए दिनेमें रविश उपसंपादनक पदपर कार्यरत छथि।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेह बिदेह

(गदिय अकर्म आगा)

अहाँक सीनियर मेहो, कलामेहो मेहो। ह्मदा रैछी भावी
मकठमे छी, अही उँरारि सके छी ए मकठसँ। पछिना रैवथ आ
राजम छन जे रियाह कवर तँ मजसम, ले तँ ले कवर
रियाह। अगना तीतव नुकेल बहलौ ए गगलै। आग राजि
बहन छी, मेहो ए दुआले जे ह्येननाक घडी आरि गेन अछि।
तीन-टासि मास आब अछि कैमिहोमिया जेरामे। ए रीट रियाह
अछि, हराग छकठ अछि, पासपोर्छ अछि, रीजा अछि, सभछी
तैयारी अछि। मोहन अमेरिका आ हनीमूनकेँ न२ क२ उँमोहित
अछि।”

उ आँखि पोछनक आ मजसमकेँ देखनक।

“सभ रीगक सगना होग छै आ हमरो अछि। ले हेतिँ तँ
मेहो काब किए लेतिँ? अगना लेन किए छै तँ डेरै कवन।
नर घब गृहस्थीक सगना किए जूँछैरितिँ? अहाँक नग्रमे एकछी
कालोनी अछि अशोक रिहाव। उँगमे एकछी छोट सन रीगना
रैवले छी। सभ किछ कम्प्लैट अछि। रैम हिनशिग छी रीकी
अछि। मोहमे बही जे एत२सँ छिठायव कवर तँ काशीराम
कवर। सभ लोक गएह छै छै। अहाँक पागा-गन्गी मेहो
छै छै। ह्मदा मोहमे छी जे कालि मोहन
रिह्येनियाममे ज्वाग कवत तँ कतए बहत? हमर तँ सभछी
जीवन बाँटिमे रीतव, सभछी दोस्त-मित्र, सब-संस्कार एतए
अछि। उँत२ ज्ञा क२ की कवर? त२सँ रीगना उँकले नाम
क२ बहन छी।”



५ मार्च १०५

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मंजुषा टिप्पित भेल । ओकर आँखिमे पापा-मनकी छेला घुमि
बहन छल । ओकरा लागि बहन छल जे ओ हुनका हँ करैमे
जन्मी कऽ देल छल । राजन ~ रँड देव कऽ देलौं सब
मोशनक रौत रँतलैमे । “

“देव मरैव किछु ले होगत अछि मंजु, सब टीकक लेव होग
छै । आँ यएह देखु, हमर माँ, पोहोसब अस्त्रालै रँगावस
मे एहल घडीपर बनपति किछु हाँकि देल छल जखन मोशन
थिसि जमा कऽ बहन छल ? “

ओ सिगरेट जलेनक- “ओना तँ सिगरेट मला अछि दूदा कहियो
कान एकाय मोठी नऽ लेत छी । तँ अहाँक पापा । हुनकर
पनेली रूमि मलेत छी । कहत बहन छी हुनका नऽ कऽ ।
छेष्ट भाग अछि अहीक । पछिना तीन-चारि रँथिँ छेष्ट-छेष्ट
पवीका दऽ बहन अछि । लोक मेरा आयोगक पवीका दऽ
बहन अछि । आ कोलामे ले आँ बहन अछि- ओकर
पनेली । गप आँएन रीचमे तँ, पनेली भऽ कऽ किछु कऽ
ले लिअ तँ ओम् पनेली कोला मेलाजमेष्ट ओम्पुष्टमे
नामाकन करा दियो । एना ले तँ कोलमेन दऽ कऽ । एँ यौ,
कत नागत ? डेट नाथ, दू नाथ, आव की ? अहाँ रँतेल
छलौं जे अहाँक गढ़ा ग लेन भू लेन लेन छल आ खेत
मेला भवनापव बाथन अछि । एँ सब पनेलीसँ रँहाव होगले
कतेक जकवति हएत हुनका ? हुनकासँ गप कऽ कए तँ
देखु । की छहित छथि ओ । देखु, रँवियाती, धुम-धवला,
गाजा-राजा एँ सब हुमियातीक रँथेवा छी । कोला जकवति
ले अछि देखारपी रँहाव आ तमाशिक । रियाह लेन कोष्ट अछि
आ दोस महीन लेन एकठा स्वागत समारोह बाथि देलौं । एँ हम
कऽ देर, हेर ? ओना एकठा गप रँता दै छी, जेहेन कम्पनी
आ जेहेन शक्तिपव अमेरिका जेराक अछि ओम् तीन रँवथमे



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कियो एते कमा जेत जे जौँ ओकब राग छह तँ गायक गाय
कनि जेत । रूमजौ ? ”

“प्रथम जे ले अछि सब । पित्तजी कल लोक-नाज आ जाति-
पातिमे रिश्ता कबरैना पुरान ठुल लोक छथि । ”

संस्कार गह्वर भऽ गेल । कनी कान धरि टुंग बहनथि । ए
रीट मोहन साजीमे आएन । थागक जेन रजारीक जेन ।

“देखु सज्जु । नाँ ऑफ थ्रेशोल्डिंगक निश्चय गाढ आ फड धरि
जेन मात्र नागू ले होगत अछि । मयबखक सङ्ग्रहण मेहो नागू
होगत अछि । सत रैठा-रैठीक माँ-राग पृथ्वी अछि । रैठा
हुँगब जागले छहैत अछि आब हुँगब, कनिक आब हुँगब तँ माँ-
राग अगल आकर्षण ओकबा छहैत अछि । आकर्षण सङ्काव भऽ
सकैत अछि आ प्रेम मेहो, माया-मोह मेहो । मणि गिबारीक
ले होगत अछि । दूदा थमा दैत अछि । जँ हम अगल रागक
सुनल हेतियँ तँ हेतमप्रथमे पठरावी रनि गेल हेतियँ । तँ जे
अछि । हमरा जे कहँक बहए, से कहि देजौ । अहाँकै जे
नीक नलीत अछि से कक । हँ, जागसँ पहिल मोहनसँ गप
कऽ जे । ”

४

जुनागमे रियाह भऽ गेल टिबजरी सज्जु आ मोहनक
कोठमे ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

बहिये बहियेती आ बहिये बहिये-गहिये।

प्रीतिबोधक जेन लोत आँखन डन, बहियेथक नामसँ सेहो।
रूदा ओ ले गेला।

एहेन छोट नागन डन बहियेथ आ नीलाकेँ जे ओ दोसबकेँ ले
देखा सकेत डन आ बहिये ककरोसँ ब्रुका सके डन। एहेन
ठागन जेहँ ओ रूद क२ देल डन जत२ दु-चाँचि गोठे
जुमेत होथि। ओ माँस जेन डन जे दु रूँठेमे एकठा रूँठे
महि गेल। जखन माँ-रूपक प्रतिष्ठाक ओकरा टिष्ठ ले तँ
मबल रूँमु। सितरुवमे ओ अमेरिका जेहँ आकि नरक, एँसँ ओकरा
कोला सरोकार ले।

एँ घडी जेन ओ ओकरा पानल-गोमल डन, पढ़ल-लिखल डन,
गाढ कठल डन, कर्ज जेल डन, भवनापन खेत देल डन, आ
दुनियाँ भरिक तगेदो स्वल डन ?

हृणकव नाथ मला केलाक रूँदो बाजू गेल डन, बामु माल
सजयक भाँ धरजय, घुबल तँ ओकरा हाथमे एकठा खीचकेने
डन जे बहियेथ जेन सङ्गला पठेल डन।

बहियेथ काबेजक तैयारी क२ बहन डन। कमोनसँ खीचकेने
दिने देखनक आ रूँजन- “बाथि दिहो।”

“एँ, एला कोला बाथि दी। अप्पन सँदुकमे बाथु।”

रूँरी जमाणाक सँदुकमे की कर्न बाथे डन बहियेथ आ ओकर
चाँची ओ ककरो ले दै डन। रूँरी किड रूँजल ओ चाँची ओकरा
दिने हेलि देनक। बाजू खीचकेनेकेँ सँदुकमे बाथि चाँची घुब
देनक आ रूँजन, “आब किड ले पढ़र ?”



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बरबन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

श्रीना उद्दाम मोक्षम दवरञ्जनाव ठाठि डन, भीतव चलि गेलि ।

“अहाँ सत तँ एना थुना डी जेना कोना रिगति आरि गेल”,
बाजु हँसत माँक पाछाँ भीतव चलि गेल । “कनियाँ एहेन जे
नाथमे एक । माँ अहाँ चिन्ता ले कक । सत किछ कवत ओ जे
सँजय रोजेत डन । हाथ-पएव जाँतत, झूठ दराँएत, रँतन
माँजत, रौठनि नगाँएत, खेनाग रँगाँएत, जे जे चाहत से सत
किछ कवत । कनी अमेरिकामँ घुबिकर आरँर तँ दियौ । अथन
हनीमूनपव जा बहन अडि दार्जिलिंग, ओतएँ दमादमा हराग अड्डा,
होब ओतएँ अमेरिका । रँटि गेलौँ अहाँ, जँ गेल बहिती तँ
झूठ देखाग देरँर पडिती । ओ निअ, अहाँले हगाँठे पठेनक
अडि स्वागत समारोहक... ।”

बाजु ले जानि की-की रँजेत बहन, ओ सुनिने बहन, नहियो
सुनिने बहन ।

दुनु गोठेक हगाँठे ओतए पडन बहन जतः ओ रँसल डन ।
एकठा मल कहि बहन डन, “देखी”, दोसव कहि बहन डन,
“डोड़, जाए दियौ” ।

सतठा सथ धवले बहि गेल ।

वाति भः गेल डन ।

गाममे सगठा पसरि गेल डन ।

एक दिन पहिलहिये खुर रँवखा रूझी भेल डन । हबिसवी पसरि
गेल डन । मिथुनक अराज गामकेँ गनगलल डन । मेघ



५ मार्च १०५ अंक १०५)

मानविक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

घटांठेप केलें छल । दुब अकशिमे रिजलौका लौके छल ।
उरुव कतौ पाणि पडल हेतै, एरुव लै भेल ।

बघुनाथक घर दुआव गामक राहबी गलकामे छल । घरक
अंगनका हिम्मा दुआव पडलका घर । दुआवक माल दलल आ
रैबडा । ए रैबडामे सुते छल बघुनाथ आ बाबू । बाबूक
सुतलक बाद बघुनाथ आध बातिमे बुका कऽ तीतव गेल, छिरबी
लसनक आ सन्दुकसँ जूँफकेने निकाललक । जखन ओ छिरबी आ
जूँफकेने नऽ कऽ शीलाक रँगनरँगना कोठनी गेल तँ ओकरा मोल
पडलै जे जूँफकेनेक छाती तँ बाबू देखै लै केनक । ओ
बकसँ बाबूकेँ जगेलक । बाबू रैतेनक जे जूँफकेने छातीसँ
लै नय्नबसँ खूजत, ए नय्नबसँ । आ रैड-रैड करैत जूँफकेने
खूजि गेल । बघुनाथ जूँफकेनेकेँ खोललक तँ भार-रिबोव ।
रैठा सँजलकेँ नऽ कऽ जठ तामस बहे सब ठाँ रीना गेलै ।
ठाँकाक एतेक गल्ली अगल आँखिक मोमाँ एकठाँ जूँफकेनेमे ओ
पहिल रौव देखि बहन छल । आ ओ कोला सिलमा लै
रासुनिकता छलै ।

गामक लोक बघुनाथकेँ सगड़ 1-सँसटिसँ दुब बहरना ह्मदा
कँजूसक श्रेणीमे गणती करै छल जे ठाँकामे अठग्री भजलैत
अछि । लोक ओहो कहै छल जे रँडु लोभ लै केल बहिती
तँ ओ दिन लै देखऽ पडिती ।

बघुनाथ ब्रिष्टकेँ अगला दिस घिचलक । पहिल सए-सएक गल्ली
गलनाग शुक केनक । ओ एक-एक रँडनक सँखा सेहो निथि
बहन छल । हएव ओ पाँट-पाँट सएक लोठक गल्ली उठा कऽ
गलरँ आ निथरँ शुक केनक । गलैत-गलैत बाति रैणी भऽ
गेल आ सबठाँ कपेयाक जोड भेल दारि नाथ साँठि हज्जार ।



५ मास ५३ अंक १०५

मानकीह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

ও একটুক বাজুকে দেখেই বহন, “এটা ত কিছ এসব-ওসব লৈ
কেল ভী ?”

“হম জলৈ ভলৌ জে যএহ শেক কবরী এহাঁ, এহাঁ স্নাতকসঁ শেকী
ভী।”

“চুপ্পা”, শীলা রাজনি, “এহিলা রাগসঁ গপ্পা কএন জাগ টে ?”

“বুঁমি গোলৌ, যএহ চোলেমক এছি। বৈতেনক লৈ।”

“পহিল বুঁমি জেরৌক চাহী। চোবা কতৌ বৈতলৈ টে জে চোবি
বএহ কেল এছি”, বাজু রাজনি।

বঘুনাথ আশ্চর্যসঁ দেখনক ওকবাদিস, “কী ভ২ গেল টে এ
ভৌড় লকৈ। একব ভাএ কম্পূৰ্ণব অভিযন্তা। ও এ তবলৈ
কহিয়ৌ গপ লৈ কেল এছি রাগসঁ।”

“গপ্পা লৈ কেনক, তৌ এহিলেসঁ চুপ্পাচাপ বিয়াহ ক২ লেনক আ
রাগলৈ খৰিবি ধবি লৈ কেনক।”

সমসমা উঠল গুমা সঁ বঘুনাথ। মল ভেল-ওকবা ঘব সঁ নিকনি
জায়েক কহিয়ৌ হুদা নহি জাণি কী মোচলি কে ওতয় সঁ উঠল
আ আগল মে আরি গেল। কোলা মে বৈসখট পচল ভল, ওহি
পব বৈসি গেল। ও ভগবানক লেন মাথ উঠেনক আসমাণ
দিস।

দেখু মা, হম ডেউ বৈবথ সঁ কহি বহন ভলহু হিলাকা সঁ জে
মোঠবরৌগক দ২ দিয়ৌ। ঘবালাক সত ভৌড়। মগ এছি, একটা
হমলী ভী জকবা মগ নহি এছি। হিলাকব কহরী ভল জে হাথ-
পাগব তোডরৌক এছি কী ? মাথ হোডরৌক এছি কী ? চোবি-



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

टकावी आ नहंगअ कबरौक अछि की ? डाका डगरौक अछि की ? केकर हाथ-पगव छूँछैन अछि, कहूँ ते ? ते मज्जु हमरा म प्रभुनक-अहाँ के की चाहि ? जखैन हम उतय म घुबहि मागनहुँ । हम कहनहुँ- 'हाँ, मोछैबरौगक । ओ हमरा छका थमा देनक । ओ जौँ हिकेस ये म देनक या कतय म देनक हमरा नहि पता । "

'सवासव मुठ । ओ जालैत अछि जे मज्जय आर नहि आरय रैना अछि । हम नहि पुछि सकरैँ ओकरा म । " वयूनाथ के ओ मुठ रैदँत नहि भेल ।

शीना ठाठ-ठाठ डिउँबीक महिमा बोधैनी ये कानि बहन छनि । ओ अप्पन रैछौक अछि कप म अणजान छनि ।

'आँव कहूँ । हमर रौगजानक दूरी रैछौ-मज्जु आ हम । ओ एका आँधि म हमरा देखनक तक नहि । मज्जु मैलनत आ मज्जु पाय ओ ओकरे पव खटि कवनथि । पठैनक, लिखैनक, कपूँछैव गँजीमियव रैलैनक आ हमरा जेन । कामर्म पढ़ू । जकरा पठहि ये नहि ते मदद कइ सकैत छन, नहि हमरा मन नालैत छन । कोला तबहे रीकाय कवनहुँ ते कोटिग कर, ओ छैसुँ दियो, ओ छैसुँ दियो । हम थानि जेन छी छैसुँ दैत-दैत । लिका म कहियो, ओ छका कतौ गमठ-उमठ खटि नहि करैथ, डोलमेल जेन बाथैथ । शीना डोलमेल कतौ एडमिशन नहि हम रैना छै । पवछा के रैता दैत छी । "

'जौँ डोलमेलक छका नहि देखै तइ ? "

'ते कहियो नहि पुछरैँ जे ओ की कइ बहन छी ? " कियअ कइ बहन छी ? "



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह ISSN 2229-547X **VIDEHA**

'की कवर ? डाका डार ? तखरी कवर ? गजि हेलो गल
रोटर ? कउन कवर ? "

की रक-रक क२ बहन डी अर ? हानत ? समागव के शीना
राजन, 'आओव अर टुप बद्ध । अनाप-शेनाप कहि बहन डी राग
मे । "

बाजु कमा म राहव निकलेत पिता म राजन, रस कहि
देनह । "

'सुनु-सुनु । भागु नहि । अगना न२ क२ मोटेत डी आ
कहियो अप्पल रहिन क२ न२ क२ मोटेत डी ? जखेन होयत
अडि तखन जागत डी हजार पाँट मो मवि के अरि जायत
डी ओकरा म ? ओकर राह क२ न२ क२ कथला मोटेत
डी ? "

'देखि बहन डी हिनकर ? " ओ माँ दिस दूउन, 'जकरा म
कहराक डन, ओकरा म नहि कहन, कहि हमरा म बहन अडि,
जे एखन पठि बहन अडि । डोलेशनक गप आयन ते दीदीक
थान अरि बहन अडि । पहिले हिनका म कहियोक जे कजुमी
आ दरिद्रता डोड़क अर । हमी उँड रिते अडि लोक । आ
ठिरवी आ नानठेन डोड़ग आ आन जना ताव थीटराके-कम मे
कम अगल आ दरराजा पव नष्ट ते नगराय गिये । गजोत
हूये घर मे । एकव मगे हेल नगा बहन अडि लोक । घर
मे हेल होयत ते मजु जखन चाहत, गप क२ जेत । अर
मवना दीदी म गप क२ जेत । दीदी मे छी किया भोजी म
मेले । "

माथा हेलडेत हेल म रस गेल बघुनाथ-यहि डी भाग ।
जकरा जेन कजुमी कवनह, 'ओकरे महे मे आ सुनराक डन । "



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“आओव एकठा गग कहि दैत छी अहाँ से आओव हिनको सँ ।
होव एहन रौरकुशी नहि करैथ जेहन सँजुक काग मे कगन
अछि । दीदी से पबडा के गग क२ नहुँ छे ओ हिनकव तय
कवन सँ रौह कवत या नहि । अ ते दौड-भाग क२ कती
तय क२ अगथिण आ ओ कहि दिये जे हमरा रौह नहि कवरौक
अछि । होव भद छिँत हिनकव । ”

“अ अहाँ कोला कहि सकैत छी । ”

“कियेकि हम एकठा आदमी के अकसव हुँका सँग देखनी छी ।
के छी ओ नहि जालैत छी । ”

“देखनिये ले ? एकवा शेक धरि छी नहि अछि रहिण क२ न२
के अहि तबहे गग करैत ? ” वयूनाथ दाँत पीसित ओतय सँ
रौज्ज ।

३.

सवना दूरिधा मे डन-रौह करि आ नहि करि ?
पक्का एतरेक छी डन जे ओकवा ओ रौह नहि कवरौक अछि जे
पापा थोछि के आगत ।
कतेक बाम लोटा डन ओकव दूरिधा मे !
आजुक सँ कोला मात-आँठ रैवथ पहिल । ओ अगना तीतव
किछ अजुरै-मण महसूस केल डल-मण उँथडन बहैत डन, कती
हवायन-हवायन मण डन, रिना गप्पक हँसी आँरैत डन, हवदा



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

गुणगुणारेक ज्ञी छहिन डन, रौतव आरौत डन, ते दोस्तनी सर
हम के कहय लागत डन-देखु-देखु। पौरवक चप्पन-दु
डिजागलक। कनाम कहानी के, कितारै करिताक हाथ मे। अ
रहि दिन डन जखन नगव मे आरि रौना कोना फिन्ना ओकरा म
नहि डुठैत डन।

अहिना मे नहि जानि कोना कौशिक सब नुका के आगन आ
ओकर दिन मे आरि के रैसि गेल।

कौशिक सब करिताक अध्यागक। रौड गंभीर आ दुप बहि रौना
आ सिद्धांतरादी। पातव-दुर्व, नमव गव आ देखहि मे
आकर्षक। अथेड आ तीन लना नहि हराक पिता? अद्भुत
'सैम ऑफ हूमर'क मालिक। हुनका म प्रेम कबहि मे कोना
खतवा नहि डन। नहि कोना खतवा, नहि कोना तबहक
सदेह। ओ रौड बुधियावी आ बिरैक म काज लेल डन अप्पन
'रौयब्रैड' दुनहि मे। डोड 1-डोडीक 'गामिप'क डव सेहो
नहि डन।

कौशिक सब प्रतङ्ग आ अतिभुत डन। मित्रव होयत
जिगगीक अंतिम पार। सेहो सबना जेहन सुनव डोडी म।
पटाम-पटगलक उमर मे ते कियो सोचहि नहि सकैत अछि,
एहन भाग्यक न२ क२।

सबनाक मन रैटेल डन, देह सेहो। रौम प्रेमक गप आ
तडप। आव किछ नहि। स२ ते ओकर सहेलीक मंग भ२
बहन डन। किछ ते अनग हूये-कौशिक सब कोना विद्यार्थी
पौडै अछि। अहिल गछा कौशिक सब के सेहो डन रुदा
नगव मे कतौ एहन ठाम नहि डन, जतय हुनका कियो नहि
जालैत हूये।

निश्चित तेन जे कौशिक सब एक दिन टैक्नी म 'अद्भुत ठाम'
पहुँचत, ओतय म सबना के 'पिकअप' कबत आव दु-टावि
घण्टाक लेन सावनाथ। हेल सौचन जागत 'एकांत' आ
'निर्जन'क न२ क२।

प्रेम रौद आ स्वस्मित कोठनीक टीज नहि अछि। खतवा म



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

खेनहिक नाम अछि प्रेम। लोकक तीर सँ रौद्ररौत, हूणका धन
रौतारौत, हूणकब नजरि के चकमा दैत जे कवन जायत
अछि-ओ अछि प्रेम। रौत सँ पहिले यहि छहिनत छन सबन।
रौतक रौत ते ओ बिश्रामघात होयत, रौतारौत होयत,
अलौकिक होयत। जे कवरौक अछि, पहिले क२ गियथ।
अबुधर क२ गियथ एक रौत। मर्दक रौत। एकठा एडरौत।

जस्तु हौत हन।

सबन रौतारौत छन। नरस छन आ उन्तजित सेहो।

जहि दिन जेरौक छन ओकवा सँ पहिलेक बाति। ओ स्रुति नहि
सकन नीक सँ। नीद नहि आरि बहन छन। कतेक बान गप,
कतेक बानक थान, कतेक बानक गदगद। अगल सँ नजरौत
छन, अगल आग हँसत छन। ओ मोट जेल छन जे अरसब
भेँस पव एत आगु नहि रौतक दैक अछि लौकिक सब के
जे ओ ओकवा गनत रूमि गियथ। ओ ते शुकथात अछि...

एथन नहि जानि कतेक नूनाकात रौकी अछि। नहि, आरि कतय
नूनाकात? 'होयबरेन' भ२ छन अछि। दु-चारि दिन आब
छनि सकैत अछि नाना, ओकवा रौत ते गमतेह। होय कतय
सँभर अछि भेँस? कोन रौत बहत भेँस कवरौक जेल?
लौकिक सब लोकप्रिय लोक छन। बिश्वविद्यालयक नहि, नगबक
सेहो। जानहि रौत रौत छन। तबह-तबहक लोक। अहि
रौतक गरि छन सबन के जे ओ जेकवा सँ पाव करैत छन,
ओ कियो सँभर रौतारौत रौत, नागल मावहि रौत सडक भाग
बिद्यार्थी नहि, बिद्यार्थी अछि।

लौकिक सब रौत सारधानी रौततक-ओ छुट्टीक दिन नहि हूँ,
युन-कालेज खुल्ल हूँ, कियोकि छोट 1-छोट पठहि मे आ
अध्यापक पढ़ रौत मे रात हूँ, पिकनिक आ भ्रमणक कार्यक्रम
नहि रौतारौत, सावनाथक मेला सेहो नहि हूँ ओहि दिन।
अहि सारधानीक संग लौकिक सब सबनक संग छैक्री सँ गहँ छन
टोखडी तुप। सावनाथ से गहने। सडकक कात गहनीयमा



५ मार्च १०५

मानवीय संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

तुडक ठुंगव थडलव जेहन धूँल-धूँल तुंग ! ठाड भ२ जाडु
ते पुवा सावनाथ ते नहि, दुब-दुब धरि गाम गिबारी आव राग-
रंगीटा नज्जव आगत । खानी गडन डन तुंग ! नीटा टोकीदाव,
मिगाली, माली अप्पल-अप्पल काज मे लागन डन । एकदम
मिर्जन असगव ठाड डन तुंग ! 'हिमगिरि के उतुंग शिखर' के
तबहे । कियो दर्शनार्थी नहि ।

मल्ल त्रिछा म देखनक !

त्रिछा मल्ल के देखनक !

दुधु धैर्या सडकक कात मे ठाड कवनक आ चलि गडन ।
मुगारदाव रैठ से चक्रव काँठेत । आगा-पाछा नहि, अगन-
रंगन । मंगे-मंग । हाथ मे हाथ लेन ! सबना असगरे मे
कौशिक सब के मीतू कहैत डन । ओहि दिन ओ सत मे मीतू
भ२ गेन डन । सबना-जे सदिखन समीज मनराव आ दुगुष्टा मे
बैत डन-ओ सबना हवका रौडिक रौसती साडी मे गजरे द ।
बहन डन । रौडिक रंगक साडी म मेच कबैत रौगाँज आब
माथ पव छैठ-सल नान रिन्दी । हरा उड्डा गन जा बहन डन
आँचन के, जकवा ओ रैव-रैव सँभारि बहन डन ।

ओ चढा य खमे क२ तुंगक नग पहुँचन आ चारो दिस देखनक-
दुधु धूँल म एक मंग निकसन-जेहन अडोव, अर्गत, असीम
हरियानीक सद्गद । आब ओहि मे पीयब फुलन तौडीक जतय-
ततय खेत--एहन नागि बहन डन जेहन पान रौली हिलेत-
डुलैत डौगी ! आ हय ? " सबना पडनक ! कौशिक सब
दुधुवायन ! रौजन-मनुन रौगा रौड पौग जहाज के डेक
पव । "

तुंग के अहि धरि डहि डन आ ओहि धरि फणफणी रौद ! डहि
नस्ब होयत ओतय धरि चलि गेन डन, जतय माली काज क२
बहन डन । ओ ओहि कात गेन रौद मे, जिस्ब सद्गद डन आ
हिलेत-डुलैत पीयब डौगी ।

ओ तुंग से सँठन साह-सुथव ठाम पव रैसि गेन-दुगटाप ! ओ
दुग डन ददा हुनकव दिन रौजि बहन डन-अगल आग म, आब



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

एक-दोसब म सेहो ! हुनका गग की बहि गेन डन कहक-
सुलैक जेन ? डेठ रैवथ म यहि ते भ२ बहन डन-गग, गग
आव गप्पा छै ! गग म उ थाकि गेन डन आ मन सेहो डुरि
गेन डन । सबना रैगन ये रैसन गगाताव कौशिक सब दिस
देखहि जा बहन डन आ उ देखहि के देखेत दूरी लै लै छै
बहन डन । हेब एकछक दिगीप फाव सृष्टागत ये झुझुवा के
राज्य-हुँ ! की कहनिये ! हँसत सबना अप्पन मिव हुनक
कान्हा पव बाथि देनक-रैड बाम गग ? सुनहुँ तथै नहि ! "
उ दिन, जे आरि धरि थडहवक पाछा गृष्टव गुँ क२ बहन डन,
फकडू कुँ कबहि नागन डन भवि दुगहविया ये ! कौशिक सब
सबनाक पीछक पाछा म हाथ रैड के ओकव सुडौन गोलाग मसन
देनक ! सबनाक पूरा रैदन ये एकछा सुबसरी भेन आ उ
शेवमारैत हुनक कोवा ये ठहि गेन ।
अरैकी रैव कौशिक सब कनि जेव म मसनक ।
टिहँ क कव सीकोव क२ उठन सबना आ आथि रैद क२ जेनक-
'जगनिये डिये की ! "
कौशिक सब माथ म निरौ के ओकव आथि के चुमि जेनक !
'ग की भ२ बहन अछि टटा ? " अछासके एकछा कडकड ती
आराज आ आगु म ठाड ऐतिहासिक धरोहरक गहनेदार आ
मिगाली थाकी रैदी ये !

(जारी...)

१.



५ मास ५३ अंक १०५

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

असगव रजाहत- हम हिन्दु छी

हिन्दी कथाक मैथिली कथासुवर्ण रिलीजत उद्घोष द्वारा



हम हिन्दु छी (वधू कथा)

एहल कलामोहल जे झुनो कलमे ठाठ भऽ जाए । नागल जे
अर्राज सोने कल नगल अएल अछि । ओग हिलिमे.. हम कुदि
कऽ रिडोणल रेलि गेलो, अकामे अथला तरेगल डल..
किशगत बातिक तील राजल हएत । अर्राजल उठि कऽ रेलि
गेलो । कलामोहल फेरल सुलाग पडल । सय अगल अथल ।
थलपल पडल टिकडि बहल डल । अगलमे एक दिसल सतक
थल नागल डल ।

‘नालोनरिनाकलत. . . अर्राजल नालोन पडलहि खुदा ले जानि
अ किअ सतनेमे किअ टिकोब कबऽ नलीए ।’ अन्ना रजनी ।
‘अन्ना एकबा बाति भरी डोड । सत डवलैत बह डे. . . हम



५ मास ५३ अंक १०५

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अस्त्राजानक रोगावे भागक सभसँ छोट सन्तान सैफुद्दीन प्रसिद्ध
सैफ जखन अगल घबक सभ लोककेँ टाक दिस घेबल देखलक
तँ ओ अकरका क२ ठाठ भ२ गेल । सैफक अस्त्रा कौंसव टाक
मबरौक खरबि लेल आएन कोनमे कठन पोस्टकार्डि हमरा अथला
नीक जकाँ मोन अछि । गामक लोक सभ टिष्टीमे कौंसव टाक
मबरौकेँ छी खरबि ले देल छला संगमे जहो लिखल छला जे
हूणक सभसँ छोट सन्तान सैफ आरँ ए दुनियामे असगव बहि
गेल अछि । सैफक पैघ भाग ओकवा अगला संग रँगै ले न२
गेल । ओ माफे कहि देनहि जे सैफ लेल ओ किछ ले क२
सकेँ छथि । आरँ अस्त्राजानक अगारै ओकव ए दुनियामे कियो
ले छै । कोन कठन पोस्ट कार्डि पकडि अस्त्राजान रहुत काल
धरि छुपाप रौसन बहथि । अन्तर्माँ कएक रौब जगड । केनाक
रौद अस्त्राजान गैहक गाम धरराथेड । गेलथि आ रौदन जमीन
रौटि, सैफकेँ संग न२ घुबलथि । सैफकेँ देखि हमरा सभकेँ हँसी
आएन बहए । कोला देहाती रौटाकेँ देखि अनीगठ झल्लिग
हमिरमिष्टीक युनमे पठैरानी सफियाक आव की प्रतिफिया भ२
सकेँ, पहिले दिस जे रूमा गेल जे सैफ खाली देहातिये ले
रबल अछि-रौताहमन मोम रा मुर्थ छल । हमसभ ओकवा
करँदारेत आ फुटियारेत बहै छलथि । एकव एकठाँ फाएदा
सैफकेँ एना भेलै जे अस्त्राजान आ अन्तर्माँ छदय ओ जीत
लेलक । सैफ खुर मेहनति कबए । काजसँ ओ देह ले
बुकारै । अन्तर्माँ ओकव जे रारहाव खुर पमिल पडे । जँ दुष्टा
रोष्टी रौमी थाएए तँ की ? काज तँ मेहो देह मारि क२
करैए । मानक मान रौतेत गेलै आ सैफ हमर सभक जिणगीक
अंग रँगि गेल । हम सभ ओकवा संग सामान्य लोगत गेलौ ।
आरँ मोहलाक कोला रौटा जँ ओकवा रौताह कहि दै तँ हम
ओकव झूट लौटि ले छलथि । हमर भाग अछि जे एकवा तँ
रौताह कोला कहै छै ? झूदा घबक भीतव सैफक की स्थिति बहै
से हमले सभ ठाँकेँ रूमान छल ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

बनबने दंगल ओहिल शुक्र भेल जेना भेल करै भेल, माल
मज्जिदम ककरो एकठो पोछेरी भेटेल, जगमे कोना एकावक
माँस दुल्ले आ माँसकेँ रिन देखल आ मालि ले जाग भेल जे
किएक तँ आ माँस मज्जिदमे छेकन गेल भेल तँ आ स्वप्नक
माँस हेरै छी कबत । तकर रदनामे दूगल छैनमे गाय काँटे
देन गेल आ दंगल शुक्र भेल । किछु दोकास जडि गेल
दूदा रैनीकेँ बूछेल गेल । डूबी-छुकुल ठेब बाम घुँघराये मोछी-
मोछी सात-आठ गोठे दूगल आ प्रमोक्षण एतेक सरदरशील
भेल जे कर्तु नगा देन गेल । आग-काहिरौना रात ले भेल
जखन हजारक हजार लोकक दूगलक रौदो दूधधारी मोछिगब
तार दैत घुँघेत डूधि आ कहैत डूधि जे, जे किछु भेल छी
भेल ।

दंगल किएक तँ नगणमक गायोमे पसवि गेल भेल तँ दूधाले
कर्तु रैद । देन गेल भेल । दूगलधरा दूधनगणक सभसँ पौघ
मोहला भेल से ओत२ कर्तुक प्रभार भेल आ जिहद सभ
रातारका मोहो रैनि गेल भेल । मोहलाये तँ गली-कुटी
होते छै दूदा कएकठो दंगलक रौद आ अन्तर कएन गेल जे
घबक भितरसँ मोहो बन्ता हेरौक छली । माल आधुनिक
बान्ना । से घबक भितरसँ, डातक दुँधसँ देरावकेँ तडपेत
किछु एहला बन्ता रैनि गेल भेल जे ओकवा जालेरौना मोहलाक
एक कोणसँ दोसब कोण आवामसँ जा सकैत भेल । मोहलाक
लोक तैयारी हाँ जकाँ केल भेल । एहल रैरौना बँह जे जँ
एक मस धरि जँ कर्तु जागए तैयो जकबतक रौदुजात
मोहलाये भेटै जह ।



दंगा मोहलाक डुरावी सभकेँ अछुते उमोह देखैवाक मोका
दैत छन । तौ.. हम सभ तँ ई हिन्दु सभकेँ गर्दी फँका देलै..
की बुझि बाखल अछि ए पोती राखैरना सभ.. धुँव डबसोक
होगा जाग ए सभ । .. एक दूसनमाँस दम हिन्दुपव भारी
पडैए.. हँसि क२ जेले डी पाकिस्तान, गडि क२ जेरै हिन्दुस्तान..
एहले सभ रातरकाँ रँसि जाग छन । दूदा मोहलासँ राहव
निकलैक नामपव सभक जाण निकल२ गाली छलै । पी.ए.सी.क
टोकी दूनु दिस बहै । पी.ए.सी.क रूँठ आ बागमनक हथोक मारि
कतेको गोठैकेँ मोण बहै, से मोथिक धरि तँ सभ ठीक बहै
दूदा ओगसँ आगाँ..

सकठमे एकता लोक सीथि लैत अछि । एकता अनुशोसन आ
रैरहव । सभ घबसँ एकठाँ छौड़ । पहवापव बहत । हमव
घबमे हमवा अगारै, आ हम २३. रँवथ पाव क२ गेल बली से
हमवा छौड़ । लै कहल जा सकैत छन, छौड़ सँफ ठी छन, से
ओका बतुका पहवापव बह२ पडैत छलै । बतुका पहवा
छातपव होगत छन । दूगनपुवा किएक तँ नथक सभसँ उपवका
हिम्मासे छन से छातपव सँ सम्पूर्ण नथ देखाग पडैत छन ।
मोहलाक छौड़ । सभक सँग सँफ पहवापव जागत छन । ए
हमवा जेन अरौ जेन आ माफिया जेन रँडु नीक गग छन । जूँ
हमवा घबमे सँफ लै बहियै तँ मागत हमले बातिमे धक्का खाए
पडियै । सँफक फवापव जेरौक कावसँ ओका किछु सुनिवा
सेहो देन गेल बहै, जेना आठ रँजे धरि ओका सूत२ देन
जागत बहै । ओकासँ राठनि लै दिशाएन जागत बहै । ए
काज माफियाक जिन्ना भ२ गेल छन जे माफियाकेँ एका बती
पमिल लै बहै ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कथला-कथला बातिमे हम सेहो डातपब छल जागत बल,
नाग्री, नकडी आ गजेरौक ठेवी एखब ओखब नागन डले । दु
चाबिछा छोड़ । नग देशी पेश्तीन आ रेशी नग चक्रु बहे ।
ओखे सँ सभ छोठे-मेछे काज करैरना कारीगर हुना । रेशी
छोठे तानाक कारखानामे काज करै हुना । किछु दज्जी, काठ-
नकडी सभ काज करैत हुना । एखब रँजाव रँग हुन से हुनकब
सभक काज सेहो रँग हुन । एखे रेशी छोठेक घबमे कर्जसँ
दुखि जवि बहन डले । दूदा ओ सभ प्रेमल बहनि । डातपब
रेशी क२ ओ सभ दंगक नर खरबि पब ठीका-छेपाणी करै
जाग हुना आ ले तँ हिन्दु सभकेँ गारि पठे जागत हुना ।
हिन्दुसँ रेशी गारि ओ सभ पी.ए.सी.केँ दैत हुना । पाकिस्तान
रेडियोक सभठाँ कार्यक्रम हुनका सभकेँ जराणी मोन हुनहि आ
कम अराजमे ओ सभ रेडियो नालेब सुनन कबनि । ए छोड़ ।
सभमे दु-चाबि छोठे जे पाकिस्तान गोन बहनि हुनकब सभक
गच्छति हाजरी सभ हुन । ओ सभ पाकिस्तानक बेनगाडी
“तेजगाम” आ “प्रमोद गोरान कारोनी” क एहेन फिस्मा
सुनरैत बहनि जे नली हुन जे सुन्या जँ कतौ अछि तँ ओ
पाकिस्तानमे अछि । पाकिस्तानक रँड । गसँ जखन हुनकब सभक
मोन भवि जाग हुनहि तखन ओ सँफ सँगो हँसी करै जाग
हुना । सँफ पाकिस्तान, पाकिस्तान आ पाकिस्तानक रणन सुननाक
बाद एक दिन गृधि देल बहए जे ए पाकिस्तान अछि कत२ ?
एपब सभ छोठे ओकवा सँग रँड हँसी केल बहनि । ओ किछ
सुनल बहए दूदा ओकवा ठीकसँ ए पता ले चलै जे पाकिस्तान
अछि कत२ ?

ए पहकआ छोड़ । सभ सँफकेँ मज्जाकमे दवरैत बहनि, “देख
सँफ, जँ हिन्दु तोवा देख जेतौ तँ रूमो डही की कबतौ ?
पहिल तोवा नाछे क२ देतौ ।” छोड़ । सभकेँ सुमन बहे जे
सँफ अछि रँताह हेरौक बादो नंगछे बेलागकेँ रँड खवाग आ



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

अधना गगन रूने छन, “तकब रौद हिन्दू सब तौवा तेनसँ
मानि”त कबतौ।”

“किए, तेन-मानि”त किए कबत ?”

“किएकि जखन ओ सब तौवा रौतसँ मालो तँ तौहब खान
निकलि जाई। तकब रौद धीगन छुटसँ तौवा दाली जेतौ।...”

“ले”, ओकवा रिसवास ले भेलै।

बातिमे ओकवा डरोल आ मारि-काष्टि रौवा जे थिसा सुनाउन
जाग छन, ओसँ ओ खुरि डवा गेल छन। कथला कान ओ
हमवासँ भसियाएन गगन कबन नाली छन। हमबा वज्र होग छन
आ ओकवा टुग कवा दै छलौ, दूदा ओकब मोलक प्रमक उतब
ले भेटै पारै छलै। एक दिन ओ गुडन नागन- “लेया,
पाकिस्तानमे सेहो माष्टि होग छै की ?”

“किए ? ओतन माष्टि किए ले छेतै ?”

“ओतन खाली सडके सडक ले छै ? ओतन छैबीनीन भेटै छै..
ओतन सड छै.. आ”

“देखु ए सडछा मोलक गठन गगन अछि... तँ अतोह आ ओकब
सगी सडक गगन काल ले दिख।” हम ओकवा रूमेनिष।

“लेया, की हिन्दू आँखि रौवा कन ले छथि..”

“हुमि.. ए तौवा के कहनको ?”



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“रैछि ।”

“बुझि ।”

“तखन चवसा सेहो ले थिटेत छथि ?”

“ऊँह.. अ की सत गुडि बहन छै..”

उ छुप भऽ गेल, झुदा ओकवा आँखिमे सँकड़ि क सँथामे प्रेम
छलै । हम राँहव छनि गेलौं । ओ साँझिमाँ यँह सत गप
कबऽ नागन ।

कहँ रैछि गेल । बहका पहरेदारी सेहो छलैत बहन ।
हमव घबसँ सेहो जागत बहन । किछु दिन राँद एक दिन
अनछेक स्वतन्त्रमे सेहो टिकडऽ नागन । हम सत घरँड । गेलौं
झुदा अ बूमरौमे भाँडल ले बहन जे अ सत ओकवा डराएन
जएँक कावसँ अछि । अँरौकेँ छेड़ । सतगव रँड पित
नहडन छनहि आ ओ मोहलक एकाध झँहपुख लोकिनेँ अ गप
कहलियो बहलिन, झुदा तकर कोलाठी असनि ले भेल ।
छेड़ । सत आ सेहो मोहलक छेड़ । सत किएँ ए
मलावँजनेँ छेड़िथि ?

राँत कतऽसँ कतऽ धरि पहुँचि गेल अछि एकव कनियो अँदेशो
हमवा ओग दिन धरि ले भेल जहिया सेहो हमवासँ खुरँ गम्वीव
भऽ पछनक, “तेया, हम हिन्दू रँनि जाड ?” प्रेम सुनि हम
गम्वी पडि गेलौं, झुदा तबत हमवा बूमऽ से आँरि गेल जे अ
बातिमे डरौल थिमा सुनाउन जएँक परिणाम अछि । हमवा
तामस उँठि गेल, सेहो मोहलक जे रँतहगव तामस केनासँ नीक



५ मास ५३ अंक १०५

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

जे ताम्र पौरी जाग आ ओकरा रूमेरौक प्रयोगे कबी । हम
पुछनि,

“किए ? अहाँ हिन्दू किए रैन ? चहि छी ? रचरौ तेन ? एकव
माल तेन जे हम ले रचि पाएँ ? ”

“तँ अछि रनि जाड..”, ओ राजन ।

“आ तोह कक्का, हमर अरौ”, हम अगल अरौ आ ओकर कक्काक
गग पुछनि ।

“ले.. हुक सभकेँ..”, ओ किछु मोट्ठ नागर । अरौजाक
ऊँकर आ नमगर दायरे कते ओ ओसवा तेन छन ।

“देखलौ, ओ सभ छोड़ । सभक किवदानी छी जे अहाँकेँ
भेटकारै । ओ जे ओ सभ अहाँकेँ कहि छथि, से सभठा मूर्छ
अछि । तौ, महमेकेँ ले चहि छै ? ”

“ओ जे फुठवग अरौ छथि..” ओ प्रमल भन तेन ।

“हँ हँ, रएन । ”

“ओ हिन्दू छथि ? ”

“हँ हिन्दू छथि”, हम कहनि । पहिल तँ ओकर अँहग
निवासीक छान एते खेव ओ गुन भन तेन ।

“ओ सभ छोड़ सभक काज छी.. नहिये हिन्दू नडेते अछि आ
नहिये अमरगल.. छोड़ सभ नडेते अछि, रूमलौ ? ”

[illegible]



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धीनिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हुनि.. बिहारीमे जौनस दलितक डारस रैटैत हुनि.. तँ की
तज्जब लोक आकि मन्वथ कद्रु माव अडिये एहेन जे नडिते
बहः टहिए ? उवा देखु तँ जूना आ मैकुमे रैड दौडियारी
टै । तँ किए ले मैकु आ जूना रैनि जाग.. एह, केहेन रात
कहि देलौ, माल.. माल.. माल..

हम भोले-भोले बेडियोक काण अमेरि बहन डलौ, माहिया
रैहारी बहन डलि आकि बाज्जक डोष्ट भाग अकबम भालीत
भालीत अएन आ हुनन माँसकेँ लोकलोक असहन प्रगले कबैत
राजन, “सैफकेँ पी.ए.सी. रैना सब मावि बहन अछि ।”

“की ? की कहि बहन डी ?”

“सैफकेँ पी.ए.सी. रैना मावि बहन अछि”, ओ कल ककि कः
राजन ।

“किए मावि बहन अछि ? की रात अछि ?”

“की ज्ञानी.. टोरेष्टियागव..”

“उतः जतः पी.ए.सी.क टोकी अछि ?”

“है, उते ।”

“अदा किए..”, हमवा रूमन डन जे आठ रैजे सँ दस रैजे
धरि कर्तु खूजः लागल अछि आ सैफकेँ आठ रैजेक कबीर अन्ना
दूध अणरी लेन पठेल डलि । सैफ सन रैतालोकेँ रूमन बहे जे
जन्दी-जन्दी आपस एरौक अछि, आर तँ दस रैजि गेल अछि ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चर्चामा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

“चनु हम चले जी।”, रेडियोसँ रहबागत अण्ठैठन अराजक
टिप्पणी केल रीति हम तेजीसँ रहलेजौ। रताहकेँ कि ए मरि
बहन अछि पी.ए.सी.रना सत, ओ कोन एहेन कर्म केनक अछि ?
ओ कगये की सकैत अछि ? अगले एहेन भयभीत बहैत अछि
जे ओकरा मावरीक आरंभकते की.. हब की कावण भ२
सकैए ? पाग ओझी ओकरा तँ अना दू ठका देल अछि। दू
ठका जेन पी.ए.सी. रना सत ओकरा मावत ?

टोरेष्टियागव झुथा सडकक रैवारैव कोठागव मोहलाक किछ गोठे
जमा बहथि। सोसायै सैफ पी.ए.सी.रनाक संग ठाठ डन।
ओकर सोसायै पी.ए.सी.क जराण सत डन। सैफ जेब-जेबसँ
टिकडि बहन डन, “हमरा तू सत कि ए मावले.. हम हिन्दू जी..
हिन्दू जी..”

हम आगाँ गेलौ। हमरा देखनाक बादो सैफ रजिते बहन,
“है, है हम हिन्दू जी..”, ओ खबखा बहन डन। ओकर ठोठक
कोनसँ शोषितक एक बूझ निकलि क२ ठघवि क२ ठोठगव ठाठ
डन। “तू हमरा मावले कोना.. हम हिन्दू..”।

“सैफ... ओ की भ२ बहन अछि... सब चनु।”

“हम.. हम हिन्दू जी।”

हमरा रीति आश्चर्य भेल.. की ओ रहल सैफ जी जे ओ डन.. एकव
तँ कणे रैदनि गेल अछि। ओ एकवा भ२ की गेल अछि ?

“सैफ, हमेशे आउ”, हम ओकरागव जेबसँ तमसैलि।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मोहनाक लोक सब ले जानि केकवापव तितले तीतव दुवसँ
हँसि बहन बहथि । हमरा पितु छठन । माव, ज्ञ सब ज्ञ ले
बूने छथि जे ओ रँताह अछि ।

“ ज्ञ अहाँक के अछि ? ”, एकठा पी.ए.सी. रँना हमवासँ पृष्ठनक ।

“ हमर भाए जी.. कलक मासिक पत्रेणारी छै एकवा । ”

“ तँ एकवा घर नऽ जाउँ ”, एकठा सिंगारी राजन ।

“ हमरा सबकेँ रँताह रँना देनक ”, दोसव राजन ।

“ छवू.. सँफ घर छवू । कहुँ नागन अछि, कहुँ.. ” ।

“ ले जाएँ.. हम हिन्दु जी.. हिन्दु.. हमरा.. हमरा.. ”, ओ
हरोठकाव कासऽ नागन ।

“ मावनक.. हमरा मावनक.. हमरा मावनक.. हम हिन्दु जी.. हम,
सँफ छिटग पिटा खसन.. मागत रँहोमि भऽ जेन छन.. आरँ
ओकरा उठा कऽ नऽ जेनाग आमान छन ।

ए वचनापव अपन मतिर ggajendra@videha.com पर
पठाउँ ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम् ISSN 2229-547X

बौनाना प्रते



१. जगदीने प्रसाद माडनक एकठा रौन कथा 'एकठा ल'



२. टन कयाव सा- रौन गजव

३.



जगदीने प्रसाद माडनक एकठा रौन कथा

'एकठा ल'

प्रबन्धप्रबन्ध गाममे प्रबन्ध कक्का परिवारकेँ गोश्वारेँ आ
अनगोश्वारेँ प्रबन्ध परिवारकेँ जलेत छन्हि । ओना अस्सी रैथिक
अरन्ध्रमे कहियो प्रबन्ध काका कन्या-कन्या ले गठनमे दूदा
कन्या-कन्या दुनू किवदानी देखि-देखि सदिखन झुँझ बहे



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हुथि। गले ल रैसै हुनहि जे जे रसुत तबजुगव बथि
रैठिखाड़ सँ तौनन ज़ात, ओ जै रैठैत-थोठैत, पौआ-कनमा
होगत बती-माशामे छलि ज़ात तै छलि ज़ात, ह्रदा दुनियाँक
एते नमहव धवती केना रैठैत-थोठैत कनमा-कनग-हलै
दिसि पहुँचि जाय। रौदनक किवदानी की पतानक पाणि मोथि
लेत ? जै मोथए चाहत तै बाखत कतए ? हरा-रिहाड़ि
केतकान अँठका क२ बथि सकेए। थैव जे होड़ ह्रदा पुवण
काका करैना नतीक मटान ज़काँ अणषा परिवारकेँ रैना हरिअव,
तड़गव थैलेँ करै हुथि। ज़हिला सकत-कड़गव रीआ धवती
धावण करिते, दीयाक तेन-रैती ज़काँ अणष तिन-तिन अर्पित
कवए नतीत अछि तहिला ल करैलोक रीआ केले अछि। रएह
अहव ल धवती धावण करैत हुँगव आरि नती रैनि नतड़ए
नगन। भनहि पातव-डीतव कड़कीक आनम संग मटानगव किअए
ल पहुँचन हुअए। तै कि ओ अणष शीवीक वट्टा करैत ह्रह
रैठैत लै पहुँचन ? ज़कव पहुँचन अछि।

पुवण काकाक परिवारोक सत तेहल हुनहि जे अणषामे जे
घघौज होनहि ह्रदा काका नग पहुँचते मल सकदम भ२ ज़ागत
हुनहि, किअए तै सत रूँतेत जे अणषाएनमे हँसियो ली-ली-आ
क२ धड़ैत डै। तै ज़हिला वस्तागव अँठैत-जूँठैत छलैत
साँप रौहरिमे प्रवेशि करिते सोम भ२ ज़ागत तहिला काकाक
सोममे परिवारक सदस्य। ओना, रिंग पएवक छलैरैना साँप
माँठगव छलि केना सकेए। मल-टित मारि पुवला काका वाति-
दिस परिवारोक पाछु नगन बहै हुथि। अथला मलमे ओहिला ओ
रात तड़गव रैगन हुनहि जे रीव जोग्या रैसुधवा। जे ए



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

धवतीसँ प्रेम कबत ओकरे प्रेमी रनि धवतियो चूम्या जेत ।
कखला माए रनि, कखला भाए-रनि रनि ।

चेतनसँ रानरौध धरि पविराव प्रवण काकाक डुगहि । तारो
मेन अजोर डुगहि । चेतन सभ प्रवणकाकारे गार्जन बुमि अगण
डुगि लण बहए तँ रानो-रौध सभ अगण रानो बुमि अगण सभ
किड बुमि । पविरावक सभसँ डोष्ट रौछा टारि सानक डुगहि ।
तारो-मेन नीक डुगहि । अगणक सभ समाचारक समादिया
बहियो मर्याद-रौधक काज करिजे डुगहि । एहेन चेना भेटैरौ
मोसकिन । हृद मे तँ डुगहिये । नरका दैसितियाले तँ
रौमीकान एकठाम बहल चलो-रिम्फुठ मंगे करे डुगि । काका
खुशी जे अगण रौत पहिल उमरि, तबि दिन गग सुलेले
तैयार बहए । आ पोता दीनमा खुशी जे आँखि-काण तँ तखल
काजक रौत जखन ओकरासँ काज कराएँ । नग तँ गमे-गमे
गोड़ रनि जाएत । हृद मे कल लोण, एक काल सुले आ
दोसब काल उड़ि जाए । उड़-त-उड़-त स्वतनी बातिये सभ
उड़ि जाए ।

रसगतक आगमन भऽ गेल । किड दिन पूर्ण जे जाइसँ
जड़ि आन भेल, गानासँ गनएन भेल ओ हृदहृद । कऽ उठल ।
सुखएन-सडन नती आ हृमली जकाँ परिवे रसगती हरामे उड़
नगन । हृद तैयो रौदरंग भेल धवती, घब-अ । अगण जकाँ
रौहरी-मोहरी जे गिरी दिखए नगन । बसे-बसे बस भवन



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

हराक बमकी बमकए नगन । जहिया मेरा निरवृत्तिक समए कोला
अहमबकेँ मरुआ सुनेत तँ कोलाक आगुमे नागठ नर्कक नाट
होगत अछि, तहिया शिबिब -सिबमिबागत समए- रसगत रीट
होगत । अहमे से रीत प्रबल काकाक परिवारमे ले छुह ।
कोलाक रीटद जकाँ मत परिवारक अगल-अगल नाटक पाछ
नागन बहेत छुह ।

दिन उगिते दीनमा, राँगन था जताक -माष्टिक रँगाउन- दुनु
पक्षी दुनु हाथमे लेल दवरँजजाक आगुमे लेसि, बसताक धुवा-
गवदाकेँ जतामे पीमए नगन । रँग देखलौ आशा रँगले बहे
जे राँगा दवरँजजेमे छथि । सुतन छथि कि जागन, तँगसँ
कोल मतनरँ दीनमाकेँ । ओ तँ अगल काजमे रोहन । मसमे
बहरेँ करे जे टाहक रेब भँ गेल अछि माए टाह आनि देरें
कबतनि, हमरँ पीरें कवरें । परिवारक रौमसँ दरँग पोछ बहे
जे नून ले अछि तँ केसक ताबीथपव जाए गइत । जहिया
तहरेण्डा तहरेण्डितनमे बसल बहेत तहिया दीनमा अगल काजमे
हवाएन । कोल मतनरँ ओकरा बहे जे सुनेत, काजक हवाएन
अथखड् आ बहि जाए ।

मागक हाथक टाह देखिते दीनमा, जता जोरि आगुए आगु
दवरँजजाक उँपव छठन । दीनमापव नजबि गइत ते प्रबल काका
असकी दैत कहनथि-

“ की दीनमारँ, टाहो-टाहक रेब भेलैए आनि ले ? ”



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

तहि रीट चाह लल थोहो पड़ै गेलनि । दीनमाक नज्जि
देरौनमे छँगल लखाम जिकि जातीक बागपव पड़ै गेल ।
देरौनमे सँन हठाँ देथि दीनमा रौजल-

“रौरी, उ हठाँ उतावि दिख ।”

दीनमाक रौत सुनि पोहोरेत प्रबलकाका कहलथि-

“रौरी, पहिल चाह पीरि निख, पढ़ाति अ मल हेतग ?”

जना बुझल बहे तलि दीनमा रौजल-

“पहिल अहाँ पीरि ल निख, पाढ़ु हम पीरि ।”

रौहल पकड़ गेल देखि प्रबलकाका कहलथि-

“हमरा हाथमे गिनाम अछि केना उतावल हएत ?”

चाह पीरि, थिड़कीव बाखल खुशी उतावि प्रबलकाका रौड़ि-
माड़ि दिमि रिदा होगक रिदाव केवनि । हाथसँ खुशी छिलेत
दीनमा आगु-आगु रिदा भेल ।

दाड़ि मक रौड़ि पड़ै काका हिया-हिया हियरँ नगलल ।
गाढक जड़ि मे पाँच अठार बुझि पड़लनि । दूदा गाढक
डगडगी आ हुनसँ नदल गाढ देखि मल नलिया गेलनि । नाल-



५ मास ५३ अंक १०५)

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

वान हुनसँ लदन गाढ । सब डारिमे हुन नागन । खुप्री लल
दीनमा थानि खुलक जगह हिरैत । जै कियो पौघ अहमब ले
रैनि गाउत तँ कि ओ उल्ला बहि जाएत । हिया-हिया हुनके
देखैत हबिआएन-हबिआएन हड । देखनि । मल भेननि जे
जतरै-ततरै जर्जि सरहक खठ उखाडि दिऐ । ह्रदा नजबि
दाडि मक काँठिपव गेननि । डारिमे काँठि भ२ जागए । हुँगव-
निछा संगतवि काँठि । जखल अगल खठ उखाडि नगरै तखल
गहो-दीनयो- किछ ल किछ कवए नगत । तहमे खुप्री
हाथेमे छै । तेहेन माडि अछि जे स्वगरी माँप जकाँ माथमे
गड्ढै कि गवदनिमे तेकव केन ठैकाण । जखल काँठि गड्ढै
कि काणरै शुक कवत । जखल काणत तखल ओकवा टुंग कवरै
आकि गाढक जर्जि क खठ उखाडि । समनोता करैत काज
ममे एननि । काज अ जे हडक गिणती क२ नी । दीनमा
हाथक खुप्री आडि पव बधि, कोबामे उठा काका कहनिथि-

“लौआ, अहाँकेँ लल हम ठहनेर आ अहाँ हड गनरै ।”

नर हडक गिणतीक काज देखि दीनमाक मल खुप्री आलो खुपिया
गेन । ह्रदा कष्टा भनि माडि कि रैगामे पाचामे हुँगव गाढक
हड केना गनि जेरै । तहमे रीमे तक गनन होगए । गाढक
सब हड अगल हिया-हिया देखि, जे हडक रीट कीड ाक
असब तेनकेँ आकि ले । अगल तँ एकठा गाढक हड देखि
अन्दाजि नेननि जे कते हएत ? जहिया गोन-गोन, किछ
नमती लल नान-नान हुन हबिआव होगत अगल जिनगीक हन
पकडि बहन अछि, तहिया तँ गोष्टि-पडवा कड् आएन आमक
आकाव सेहो पकडि बहन अछि । एकसँ दोसब गाढक हड
गलेमे दीनमा रैव-रैव रिसवि जाए । कथला गिणतिये छुष्टि



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

जाग तँ कथला अँके रिसवि जाए । कथला रीसमँ डुगव ले
रैठन । अँतमे काका प्छुनथि-

“रौंथा, कते हफ़ भेनह ?”

राँराक धम्म सुनि दीनमाक झूहमँ निकलि गेल-

“दसए ।”

“अच्छा रैडरैठा या । आरै एतए आरि के खेनह ।
उगवरैठियो भँ जेतह आ खेनरौ कवरैठ ।”

नीक हसन भेनथि । खेरा जोगव हन हूँ नगन । हफ़ हन
रैनि गेल । उला सज्जमि हफ़क-हफ़क बहि जागत । झुदा
दाँडा म, आम, नताम गत्यादि हफ़मँ हन रैनि जागत अछि ।
अंतिम अरमथा अरैत-अरैत तुरि-तुरि हन अगल थमए
नगन ।

गाढक सत हन समाप्त भँ गेल । जलिया पवसौती जनालाई
देख-भानक जकबति पड़ैत तलिया ले राँडा यो-माँडा क
अछि । ए मोटि प्रबलकाका दीनमाक संगे दाँडा मक गाढ नग
पहुँचनह । जे कहियो हफ़ हुनमँ नदन छन ओ सुन-सुन भेन,
अगल रौंथा सुना बहन अछि । रयथित मल दीनमाकै प्छुनथि-



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“लौक्य, कते फड अडि ?”

रिचरित लोगत दीनमा रोजन-

“एकेछी ल ।”

“ए लेन रिचरित किअए लोग डी । जलिया सम्र आएन डनग
तलिया फेला ठेते ।”

“केना ठेते ?”

“सम्र अक्षुमार एकव ताक-हेबि कवरौ तँ एरौ कवटे ।”

२.



टंदन कमार सा

सबबा, मदलगेव अल

मधुबनी, बिलब



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेह-गजव-१

मस्जिद जखल गबन अजान

कोशली ठगनक गवाती गान

लौआ डकनक खेत खरिहान

रैगना खता रिट कवय नान

गब-गब दू दूँड रैथान

ठक-ठक पड़क नगौल धान

बारी छथि बाढ़ी बारी छथि मटान

बारी अंगना मेँ नगारैथि गान

दूँह-दूँह नान गुरै अमगान



এ বচনাপব অংশ মতিৰ ggajendra@videha.com পৰ
পঠাও ।

ৰচা লোকনি দ্বাৰা স্বৰ্ণীয় শ্লোক

১.প্রাতি: কাল জঁহুদুদুৰ্ত্ত (সূৰ্যোদয়ক এক ঘণ্টা পহিল) সৰ্বপ্রথম
অংশ দুখ হাথ দেখৰাক ঢালি, আৰু গ্ল শ্লোক ৰঁজৰাক ঢালি ।

কবাপ্ৰে ৰসতে নক্ষা: কবাপ্ৰা সবস্বতী ।

কবমূলে হিতো জঁহা প্রভাতে কবদৰ্শনম্ ॥

কবক আগলৈ নক্ষা ৰসতে ভুখি, কবক মধ্যমে সবস্বতী, কবক
মূলমে জঁহা হিত ভুখি । ভোবমে তাহি দ্বাৰে কবক দৰ্শন
কবৰাক থীক ।

২.সন্ধ্যা কাল দীপ জেসৰাক কাল-

দীপমূলে হিতো জঁহা দীপমধ্য জলদৰ্শন: ।

দীপাপ্ৰে শেফব: প্রাক্ত: সন্ধ্যাজ্যতিৰ্ণমো২স্তুতে ॥



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

दीपक मुन भागमे जैना, दीपक मध्याभागेमे जगदीश (रिपु) आऽ
दीपक अग्र भागमे शक्ति हित छथि । हे संध्याज्योति ! अहाँकेँ
नमस्कार ।

३. स्वतंत्रक काम-

बार्म कर्ण हनुमान् रौप्येयं ब्रूकोदवम् ।

शेखर यः सारस्वतं दुःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सत दिन स्वतंत्रक पहिल बार्म कर्णवन्धनी, हनुमान् गकड
आऽ तीमक सारण करैत छथि, हनुमान् दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत
छथि ।

४. नहरौक समय-

गङ्गा च यद्गङ्गा तैर गोदारवि सवन्तति ।

नर्मदा सिङ्गु कारेवि जलेशसिन् सन्निधि कक ॥

हे गङ्गा, यद्गङ्गा, गोदारवी, सवन्तती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ
कारेवी पाव । एहि जलमे अपन सन्निधि दिअ ।

५. उन्तवै नर्मदाद्वय हिमाद्रेश्च दक्षिणम् ।

रथं तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

नर्मदाक उन्तवमे आऽ हिमाद्रेश्च दक्षिणमे भावत अछि आऽ
उन्तका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

६. अहम्या दीपदी सीता तावा मन्दादवी तथा ।



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X **VIDEHA**
पञ्चक ना सारस्वत महापातकनामिकम् ॥

जे सत दिन अहना, दीपना, सीता, तारा आऽ मन्दोदरी, एहि पाँच माझी-झुकी सब कबैत छथि, हुनकर सत पाप नष्ट भऽ जागत छन्हि ।

१. अश्विथोमा रत्निर्यामो हनुमान् रितीयाः ।

प्रपः पञ्चवामश सन्तुते चित्रश्रीरिणः ॥

अश्विथोमा, रत्नि, राम, हनुमान्, रितीया, प्रपादार्थ आऽ पञ्चवाम-
श सात ठाँ चित्रश्री कहबैत छथि ।

+ साते भवतु स्रष्टा देरी शिखर रामिनी

उत्प्रेष तपसा अहो यया पञ्चपतिः पतिः ।

मिहिः साक्ष्य सतामन्त्र प्रसादान्तर्य धूर्जठैः

जान्तरिहर्षणनेथेर यन्त्रि शेषिणः कना ॥

६. रौलोऽहं जगद्वन्द न मे रौलो सबन्धती ।

अपूर्णे पंचमे रमे र्ण्यामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मन्त्रेश्वर गजुर्देद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ अक्षरिण्य प्रजापतिवन्द्यः । त्रिभोक्ता देवताः ।

स्वाङ्कुरेतिष्ठन्तः । यद्वज्रः स्वः ॥

आ अक्षरिण्य प्रजापतिवन्द्यः । त्रिभोक्ता देवताः ।

स्वाङ्कुरेतिष्ठन्तः । यद्वज्रः स्वः ॥



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

यज्ञमाणस्य-बाज्याक बाज्यामे

रीयो-रीयो पबजित कबएँना

मिकामे-मिकामे-मिष्टान्नकतु कार्यमे

नः-हमरा सभक

पुर्ज्या-मेघ

रयतु-रया होए

फलरवा-उत्तम फल रीना

उषसः-उषसिः

पादपुत्रि-पाक

योगेष्मो-अनन्त नन्त करैक हेतु कएन जेन योगक बन्ना

नः-हमरा सभक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

ग्रिथिथक अश्वराद- हे जेना, हमरा बाज्यामे जेना नीक धार्मिक
रिग्या रीना, बाज्या-रीव,तीव्रदाज, दुध दए रीना गाय, दौगय रीना
जन्तु, उद्यमी नावी होयि । पाज्या आरथकता पडना पब रया
देयि, फल देय रीना पाड पाक, हम सभ संपत्ति
अर्जित/संवर्धित कबी ।

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

8.M DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words - GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium-

GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha
chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (IN ENGLISH)- SHEFALI KA

VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma
and Dr. Jaya Verma

बिदेह नूतन अंक भाषागत बचना-लेखन

Input : (कोष्ठकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोन्टिक-
बोम्बमे षागग कक। Input in Devanagari,
Mithilakshara or Phonetic-Roman.)



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

Output : (परिणाम देरनागरी, मिथिलाक्षर
आ हलन्टिक-रोमन/ रोमनमे। Result in
Devanagari, Mithilakshara and Phonetic -
Roman/ Roman.)

English to Maithili

Maithili to English

अंग्रेजी-मैथिली-कोष / मैथिली-अंग्रेजी-कोष प्रोजेक्टके आगु
रैद डि, अगल सुमार आ योगदान अ-मेत द्वारा
ggajendra@videha.com पर पठाई ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टवर्णपर
पहिल रैव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्वर आधारित -
Based on ms-sql server Maithili-English
and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ लपारक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा
रैनाउव मानक मेळी आ २.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

१.लपार आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लोकनि द्वारा
रैनाउव मानक मेळी

१.१. लपारक मैथिली भाषा लेखनिक लोकनि द्वारा रैनाउव
मानक उच्चारण आ लेखन मेळी



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

(भाषाशिल्पी डा. बागारताव यादवक धाकाके पूर्ण कर्णम सङ्ग न२
निर्धारित)

मैथिलीमे उँचाकी तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावक: पञ्चमाक्षरावकत ७, ए३, ए१, न एरै म
अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षरावक शिष्टक अक्षरमे जाहि रङ्गाक
अक्षर बहैत अछि ओही रङ्गाक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-
अक्षर (क रङ्गाक बहैरौक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)
पञ्च (ट रङ्गाक बहैरौक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि ।)
खण्ड (ठ रङ्गाक बहैरौक कावणे अक्षरमे ए१ आएन अछि ।)
सङ्घि (त रङ्गाक बहैरौक कावणे अक्षरमे न् आएन अछि ।)
खण्ड (प रङ्गाक बहैरौक कावणे अक्षरमे म् आएन अछि ।)
उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक
रैदनामे अधिकनि जगहपव अक्षरावक प्रयोग देखन जागड ।
जेना- अँक, पँट, खँड, सँधि, खँड आदि । र्याकवारिद पडित
गोरिन्द नाक कहैरै छनि जे करञ्ज, टरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर्ण
अक्षरावक निखन जाए तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर
निखन जाए । जेना- अँक, टँक, अँडा, अँड तथा कँषण ।
झुदा हिन्दीक निकट बहल आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि
मानैत छथि । ओ लोकनि अक्षर आ कँषणक जगहपव सेहो अँत
आ कँषण निखैत देखन जागत छथि ।
नरीन पछति किछु स्वरिवाजक अरुष्ट छैक । किएक तँ एहिमे
समय आ स्थानक रैकत होगत छैक । झुदा कतोक रैव
हस्तलेखन वा झुदामे अक्षरावक छोट सन रिन्दु स्पष्ट नहि
बेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि ।
अक्षरावक प्रयोगमे उँचाकी-दोषक समझारना सेहो ततरै देखन
जागत अछि । एतदर्थ कम न२ क२ परञ्ज धरि पञ्चमाक्षरक
प्रयोग कवरै उँचित अछि । यम न२ क२ छे धरि अक्षरक
सङ्ग अक्षरावक प्रयोग कवरै कतहु कोना रिवाद नहि देखन
जागड ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

२.ठ आ ठ : ठक उँचावण “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः
जतः “व ह”क उँचावण हो ओतः मात्र ठ लिखन जाय । आन
ठाग खाली ठ लिखन जायँक छली । जेना-
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठङ्ग, ठेरी, ठाकनि, ठाँ
आदि ।
ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रूँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ,
मीठ, पीठ आदि ।
उपर्युक्त शब्द, सबकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे
साधारणतया शब्दक श्रुतिमे ठ आ मरा तथा अन्तमे ठ अरौत
अछि । एह निम ड आ डक सम्बन्ध सेहो नागु होगत
अछि ।

३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचावण रँ कएन जागत अछि,
झुदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन जायँक छली । जेना-
उँचावण : रँगनाथ, रँद्या, रँर, देरँता, रँष्ट्र, रँनि, रँदना
आदि । एहि सबक स्वरूप कएनि: रँगनाथ, रँद्या, रँर, देरँता,
रँष्ट्र, रँनि, रँदना लिखँक छली । सामान्यतया र उँचावणक लेन
ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहु-कतहु “य”क उँचावण “ज”जकाँ करैत
देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखँक छली ।
उँचावणमे यर, जदि, जझना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम
आदि कहन जायँक छली, सबकेँ कएनि: यर, यदि, यझना, यग,
यारत, योगी, यदु, यम लिखँक छली ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत
अछि ।
प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, हेत, माए, भाए, गाए आदि ।

मानुषिंह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

৩. হি, হু তথা একাব, ওকাব : মৌখিক প্রাচীন লেখন-পৰম্পরায় কোলা রীতপৰ বৈদ্য কান শিষ্টক পাঠ্য হি, হু নগাওন জাগত টেক। জেগা- হুগকহি, ঞগনহু, ওকবহু, তকোবহি, চোষ্টহি, ঞগনহু আদি। দ্বন্দ্ব আধুনিক লেখনমে হিক স্থানপৰ একাব এর হুক স্থানপৰ ওকাবক প্রয়োগ করিত দেখন জাগত ঞছি। জেগা- হুগকে, ঞগনা, তকোজ, চোষ্ট, ঞগা আদি।

+. ধ্বনি-রোপ : নিম্নলিখিত প্রস্থানে শেঁদেঁ ধ্বনি-রোপ ভ২ জাগত
প্রতি:

252



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

आगाँ लोग-सूचक छि रा बिकारी (१ / २) नगाउन जागछ ।

जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय)
पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उठ पडतोक ।

पठय गेनाह, कय जेन, उठय पडतोक ।

(ख) पुरिकारिक प्रत आय (आए) प्रत्यये य (ए) ब्रुं भ२

जागछ, ह्दा लोग-सूचक बिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) जेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य)
अएनाह ।

अपूर्ण कप : था जेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्यय एक उच्चारण क्रियापद, मंडा, ओ विशेषण तीनुमे
ब्रुं भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसरि मारिनि छि जेनि ।

अपूर्ण कप : दोसर मारिनि छि जेन ।

(घ) वर्तमान प्रदन्तक अन्तिम त ब्रुं भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमाण एक, उँक, एँक तथा लीकमे ब्रुं भ२
जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : छियोक, छियोक, छलीक, छोक, छैक, अरितैक,
होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छियो, छली, छो, छै, अरितै, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय ह्, ह् तथा हकारक लोग भ२ जागछ ।

जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहवहि, कहवहूँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहवनि, कहवौँ, गेनय, नग, नगि, ले ।

६. ध्वनि स्थानान्तरण : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अगला जगहसँ हटि

क२ दोसर ठाम छि जागत अछि । थाम क२ द्वाय ग आ उँक



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

संस्कृतमे अ रौत नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भ२ गेन
शेदक मया रा अस्तुमे जै द्यु ग रा उ आरै तै ठकव धुनि
स्वाभावित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना-
मिनि (मिनि), पाणि (पाणि), दाहि (दाहि), माष्ट (माष्ट),
काहु (काहु), मास (मास) आदि । दूदा तसेम शेद, सभमे अ
निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बमिके बगम आ
स्वाधिके स्वाडिस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हस्त ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हस्त ()क
आवृत्तता नहि होगत अछि । कावण जे शेदक अस्तुमे अ
उटाका नहि होगत अछि । दूदा संस्कृत भाषामे जहिनाक तहिना
मैथिलीमे आएन (तसेम) शेद, सभमे हस्त प्रयोग कएन जागत
अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संस्कृत शेदकेँ मैथिली भाषा
संस्कृत निश्चय अक्षरसभ हस्तबिहीन राखन गेन अछि । दूदा
राकवण संस्कृत प्रयोजक जेन अक्षरसभ स्वाभाव कतहु-कतहु
हस्त देन गेन अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखक प्राप्ति
आ नरीन दू शैलीक सवन आ समीप पक्ष सभकेँ समष्टि क२
रूप-रिक्त कएन गेन अछि । स्वाभाव आ समयमे रचित संस्कृत
हस्त-लेख तथा तकनीकी दृष्टिसे सैना सवन होरैरना हिमालय
रूप-रिक्त गिनाएन गेन अछि । वर्तमान समयमे मैथिली
मातृभाषी पक्षकेँ आन भाषाक मध्यम मैथिलीक त्रुण जेरे
पडि बहन परिश्रममे लेखमे सहजता तथा एककतापव
धान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषता सभ
कठिनाई नहि होगत, तादृ दिम लेखक-संस्कृत सचेत अछि ।

प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहने छनि जे
सवनताक अनुसंधानमे एहन अनुसंधान किछु ल आरै देरीक चाली
जे भाषाक विशेषता भौहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसेँ संक्षिप्त
न२ निर्धारित)



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा नियमित मैथिली लेखन-मेला

१. जे मेला, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रीतिमे प्राचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रीतिमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखन

ठाग

जेकब, तेकब

तिनकब

अछि

अग्रह

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिगा, ठिना, ठिमा

जेकब, तेकब

तिनकब। (रैकपिक कएँ ग्राह)

अछि, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कवि रैकपिकतया अग्रणाउन जायः
भ२ गेन, भय गेन रा भ३ गेन। जा बहन अछि, जाय बहन
अछि, जाए बहन अछि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए
गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत
अछि यथा कहननि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय लिखल जाय जत स्पष्टतः 'अग' तथा



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

‘अ’ सद्रूपे उच्चारण गच्छेत् । यथा- देखेत्, छलेत्, लोका, लोके गच्छेत् ।

३. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जेह, सेह, गेह, ओह, तेह तथा देह ।

४. ह्रस्व अकारांत शब्दमे ‘अ’ ले वृत्त कवरि सामान्यतः अग्रहण थिक । यथा- ग्राह देखि आरह, मानिनि गेलि (मन्त्रमात्रमे) ।

५. स्वतंत्र रूपे ‘ए’ रा ‘य’ प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथावत बाखन जाय, किन्तु आधुनिक प्रयोगमे रैकल्पिक रूपे ‘ए’ रा ‘य’ लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जए गच्छेत् ।

६. उच्चारणमे दु स्रवक रीट जे ‘य’ ध्वनि स्रवतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकल्पिक रूपे देन जाय । यथा- धीआ, अछेआ, रिआह, रा धीआ, अछेआ, रिआह ।

७. सांख्यिक स्वतंत्र स्रवक स्थान यथावत ‘ए’ लिखन जाय रा सांख्यिक स्रव । यथा:- मैएग, कनिएग, किवतनिएग रा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ ।

८. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे । ‘मे’ मे अव्यय स्रवतः लज्जा थिक । ‘क’ क रैकल्पिक रूप केव बाखन जा सकैत अछि ।

९. पुरातनिक प्रियापदक रीति ‘कय’ रा ‘कए’ अरथ रैकल्पिक रूपे नगण्य जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि कए ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिली बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि लिखन जाय ।

१३. अई न' ओ अई मा' क रँदना अस्माव नहि लिखन जाय,
किंतु भाँपाक स्वरिधार्थ अई 'ँ' , 'ँ', तथा 'ँ' क रँदना
अस्मावो लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अई, रा अँक, अँउन
रा अँउन, कँठ रा कँठ ।

१४. ठनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक रंग
अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सभ एकन कावक छि शेट्ठमे सँ क लिखन जाय, छँ
क नहि, सँश्रु रिभञ्जिक हेतु हवाक लिखन जाय, यथा यव
पवक ।

१६. अस्मासिकलै छन्दरिन्दु द्वारा राख कएन जाय । पर्वत
रुद्राक स्वरिधार्थ हि समाज जँठन मात्रापर अस्मावक प्रयोग
छन्दरिन्दु क रँदना कएन जा सकैत अछि । यथा- हि केव
रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवाज पासोसँ (।) सृष्टि कएन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हाँगहँसँ जोडि क
, छँ क नहि ।

१९. लिख तथा दिख शेट्ठमे रँकावी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अँक देरनागरी कएने बाखन जाय ।

२१. किछु ध्वनिक जेन नरीन छि रँनराउन जाय । जाँ अँ नहि
रँनन अछि तँरैत एहि दुनु ध्वनिक रँदना पुरैरत् अँ/ आँ/ अँ/



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आए/ आउ/ अउ लिखत जाय। आकि ऐ रा ओ मँ राउ कएन जाय।

ह./- गोरिनद मा ११/+/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/+/१७ अलेख मा "स्वप्न" ११/०+/१७

२. मैथिलीमे भाषा संपादन गार्हस्थ्य

२.१. उच्चारण निर्देशः (रौलड कएन कए ज्ञात):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह मँठत- जेना रौजू नाम ,
झुदा न क उच्चारणमे जीह मुँहमे मँठत (ले मँठैत तँ उच्चारण
दोष अछि)- जेना रौजू गणेशे। तानरा मेमे जीह तानसँ ,
समे मुँहसँ आ दन्त समे दाँतसँ मँठत। निर्गो, मँठ आ मोषण
रौजि कए देखु। मैथिलीमे स केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ अ
मेलो उच्चरित कएन जागत अछि, जेना रयाँ, दोष। य
अलको अलणव ज जकाँ उच्चरित होगत अछि आ न ड जकाँ
(यथा संयोग आ गणेशे संज्ञास आ

गङ्गमे उच्चरित होगत अछि)। मैथिलीमे र क उच्चारण रँ, मे
क उच्चारण म आ य क उच्चारण ज मेलो होगत अछि।

ओहिना क्षत्र ग ऐश्वरीकाम मैथिलीमे पहिल रौजव जागत अछि
काका देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे क्षत्र ग अक्षरक पहिल
लिखला जागत आ रौजला जयराँक छली। काका जे हिन्दीमे
एकर दोषपूर्ण उच्चारण होगत अछि (लिखत तँ पहिल जागत
अछि झुदा रौजव रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पद्धतिक
दोषक काका लग मँठ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ठगसँ कए रहल
छी।

अछि- अ ग ड एँड (उच्चारण)

डथि- ड ग थ - डैथ (उच्चारण)

गङ्गटि- ग ङ्ग ग ट (उच्चारण)

आरौ अ आ ग जा ए एँ ओ उ अ अः म एँ मँठ लेल गाला
मेलो अछि, झुदा एँमे जा एँ ओ उ अ अः म केँ संश्लेषक



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

कगमे गमत कगमे प्रशङ्क आ उचवित कएन जागत अछि ।
जेना म केँ बी कगमे उचवित कवरै । आ देखियो- ए जेन
देखिओ क प्रयोग अछि । कदा देखिओ जेन देखियो
अछि । क म ह धवि अ समितित जेनाम क म ह रेलैत
अछि, कदा उचावण कान हनतु हाउ गेहक अछि उचावक
प्रशङ्क रैत अछि, कदा ह्य जखन मलाजमे ज् अछि रैत
छी, तखना प्रवणका लोककेँ रैत स्वर्ण- मलाज, रातुरमे
ओ अ हाउ ज् = ज् रैत छी ।

ह्यव त् अछि ज् आ ए क मशङ्क कदा गमत उचावण होगत
अछि- गा । ओहिना अछि क् आ य क मशङ्क कदा उचावण
होगत अछि छ । ह्यव ने आ व क मशङ्क अछि छे (जेना
प्रिया) आ म् आ व क मशङ्क अछि म् (जेना मिस) । ए जेन
त+व ।

उचावक आँडियो हागत बिदेह आँकग

<http://www.videha.co.in/> पब उगव अछि । ह्यव केँ
/ म / पब पुरि अछि म सँ क लिख कदा ट / क छी
क । एमे म मे गहिम सँ क लिख आ रौदरना छी क ।
अकक रौद छी लिख सँ क कदा अछि छी छी लिख छी क-
जेना

छेली कदा म छी । ह्यव उअ म मातम लिख- छेली मातम
ले । घबरावमे रव कदा घबरावमे राव प्रशङ्क कक ।

बह-

बह कदा सके (उचाव सके-ए) ।

कदा कथना कान बह आ बह मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना
मे कया जगहमे गहिम कवरै अछि बह ओकवा । गुरुनापव
पता नागव जे दुन दुन नामा आ डागरव कन छे मसक गहिममे
काज करैत बह ।

छेली, छेली मे सेहो ए तबहक जेन । छेली क उचावण छेली-
सेहो ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

संयोगल- (उँचाका संयोगल)

कै/ क२

केव- क (

कैव क प्रयोग गद्यमे ले कक, पद्यमे क२ सकै छी ।)

क (जेना वागक)

- वागक आ संगे (उँचाका वाग कै / वाग क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचाका)

छन्दरिन्द आ अश्वत्थार- अश्वत्थारमे कँठ धरिक प्रयोग होगत
अछि दूदा छन्दरिन्दमे ले । छन्दरिन्दमे कलक एकावक सेहो
उँचाका होगत अछि- जेना वागसँ- (उँचाका वाग स२)
वागकै- (उँचाका वाग क२/ वाग कै सेहो) ।

कै जेना वागकै भेन हिन्दीक को (वाग को)- वाग को= वागकै
क जेना वागक भेन हिन्दीक का (वाग का) वाग का= वागक
क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा
क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाग से) वाग से= वागसँ

स२, त२, त, केव (गद्यमे) एते टाक गेट् सँरहक प्रयोग
अरुद्धित ।

कै दोसर अर्थे प्रयुक्त भ२ सकैए- जेना, कै कहनक ?

विभक्ति “क क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नगि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए मभक उँचाका आ लेखन
- ले

उँह क रँदनामे ह जेना महर्गुर्ण (महउँहर्गुर्ण ले) जतए अर्थ
रँदनि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग
उँचित । सम्पति- उँचाका स स ग त (सम्पति ले- काका मली
उँचाका आमाणीसँ समुद्र ले) । दूदा सरोतिम (सरोतिम ले) ।
बाहिर्द्वय (बाहिर्द्वय ले)
सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

पौडिह/ पौडिह जेन/ पौडिह जेन

पौडिह/ पौडिह (अर्थ परिवर्तन) पौडिह/ पौडिह

उ जोकनि (हठी कर, उ ये रिक्काली ले)

उअ/ उहि

उहिह/

उहि जेन/ उहि वर

ऊअरौं बैसरे

पौडिह/

देखियोक/ (देखियोक ले- तहिना अ ये ज्ञान आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अस्तित्व)

ऊकाँ / ऊकाँ

ऊग/ ऊँ

ऊह/ ऊह

नहि/ नहि/ नहि/ नहि/ ले

नौ/नौ

रौ/

रौ (नौ/नौ)

गाँ (गाँ नहि), ऊदा गाँक दूध (गाँक दूध ले।)

ऊरौं/ ऊरौं

ऊरौं/ ऊरौं

ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं/ ऊरौं/ ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं/ ऊरौं - ऊरौं

ऊरौं/ ऊरौं

ऊरौं/ ऊरौं (ऊरौं/ ऊरौं/ ऊरौं/ ऊरौं/ ऊरौं)

ऊरौं/ ऊरौं



५ मास ५३ अंक १०५

मानक बिदेह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

जाग (जागि ले, जेना देन जाग) क्रुदा **जागि-रूँसि** (अर्थ परिवर्तन)

गर्भ/ जाग

आँ/ जाँ/ आँ/ जाँ

ये, कै, मैं, गव (मिहँसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मिहँसँ सँ क२) क्रुदा दूरी रा रौनी रिभक्ति संग बहनागव गहि रिभक्ति ठाँकँ सँ। जेना **एँ मैं** ।

एँ, दूरी (क्रुदा क२ ठाँ)

रिक्ताविक प्रयोग मिहँसँ अन्तमे, रीचमे अन्तरगत कर्पे ले ।
आँकावन्त आ अन्तमे अ क रौद रिक्ताविक प्रयोग ले (जेना **दिथ**

, आ/ दिथ , आ, आ ले)

अपौरुषेय प्रयोग रिक्ताविक रौदनामे कवरँ अन्तित आ मात्र फाँटक तकनीकी युगताक परिचायक)- गुना रिक्ताविक संस्कृत क२ २ अन्तगत कहन जागत अन्ति आ रौनी आ उँचावन्त दूरी ठाँग एकव जाग बहैत अन्ति/ बहि सकेत अन्ति (उँचावन्त जाग बहैत अन्ति) । क्रुदा अपौरुषेय मेहो अन्तर्जायमे गमेमि कमेमे जागत अन्ति आ रौचमे मिहँसँ जतए एकव प्रयोग जागत अन्ति जेना *raison d'être* एतए मेहो एकव उँचावन्त लैजौन डेठव जागत अन्ति, माल अपौरुषेय अन्तर्जायमे ले दैत अन्ति रक्ता जेठैत अन्ति, मे एकव प्रयोग रिक्ताविक रौदना देनाग तकनीकी कर्पे मेहो अन्तित) ।

अगमे, एहिमे/ **एँ**

जगमे, जाहिमे

एथन/ **अथन/ अथन**

कै (कै बहि) **मे** (अन्तर्जाय बहि)

भ२

मे

द२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

तै (त२, त लै)

सै (स२ स लै)

गाँव तब

गाँव नग

साँस खल

जो (जो go, कले जो do)

तै/तब जेना- तै दुखले/ तगमे/ तगले

जै/जब जेना- जै कावना/ जगसँ/ जगले

ए/अब जेना- ए कावना/ एसँ/ अगले/ कदा एकव एकटी खास

प्रयोग- नावति कतेक दिससँ कहैत बहैत अग

लै/वब जेना लैसँ/ नगले/ लै दुखले

नहँ/ लौ

गेलौ/ ललौ/ ललँ/ गेलहुँ/ लेलहुँ/ लेलँ

जब/ जाहि/ जे

जहिँ/ जाहिँ/ जगँ/ जेगँ

एहि/ अहि

अग (बालक अतमे ब्राह्म) / ए

अगड/ अडि/ अड

तब/ तहि/ तै/ ताहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरँ

बलेली/ बलहि

तै/ तैग/ तै

जगँ/ जगँ

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/ गै



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

डनि/ डनहि ...

समय मेरुंदक संग जखन कोला रिभक्ति जुठै डै तखन समे
जना समेगव गत्यादि । असगवमे द्दम आ रिभक्ति जुठले
द्दमे जना द्दमेसँ, द्दमेमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिठाम/ जाहिठाम/ जगठाम/ जेठाम

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उअ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरै

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तैग/ तै

जखरै/ जखरै

नग/ नै

डग/ डै

नहि/ नै/ नग

गग/

लै

डनि/ डनहि

डुकन अडि/ लोव गडि

२.२ मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हस्थ

गीटाँक सूटीमे देन रिक्स्पमेसँ लेखक एडिटर द्वारा कोष कप
डुनन जेरीक चाली:

रौलेड कएन कप ग्राह:

VIDEHA

ହୋଧରୌକ/ହୋରିଧରୌକ/ହୋଧରୌକ

୫. ଭା ଗେନ/ଭଞ୍ଜ ଗେବ/ଭୟ ଗେନ/ଭଏ

গোবহ/কবঃ গোবাহ/কবঃ গেবাহ

विथ/दिथ लिय, दिय, विथ, दिय।

কবীরাবী

†. **રેવં** રત્ના (શુકલ), રાત્રી (મહા) ૯

આંકવ આંશ

50. **ଆୟ: ପ୍ରାୟତ**

॥ दः ख दूथ ॥

୨. ଚଳି ଖେଳ ଚବ ଖେବ/ଟେନ ଖେନ

୧୩. ଦେବସିଂହ ଦେବକିଂହ, ଦେବସିଂ

58.

देखवहि देखवनि/ देखलौह

୧୩. ଭବିଷ୍ଟ/ ଢଗାହି ଭବିଷ୍ଟ/ ଢଗୋଟ/ ଢଗାଟି

୧୬. ଧର୍ଷେତ/ଧୈତ ଧନତି/ଧୈତି

১৭. এখলো

ଅର୍ଥତା

St.

ਬੰਟਾਂ ਬੰਟਾਂ ਬੰਟਾਂ

୧୭. ଓ/ଓ୨(ସର୍ବନାମ) ଓ



५ मास ५३ अंक १०५

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२०

३. (संयोजक) ३/३२

२१. **हांगि/हांगि** हांगि/हांगि

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. **कवलि/कवलि** कवलि

२५. **तथलत/ तथल त**

२६. **झा**

बल/झा बल/झा बल

२७. **निकन/निकन**

नाग/नाग रैल/नाग/ **रैल/नाग** नाग/नाग निकन/रैल/नाग

२८. **उत/ उत उत/ उत/ उत/ उत**

२९.

की बुब जे कि बुब जे

३०. **जे जे/जे२**

३१. **कुदि / यदि**(योन पावर) कुदि/यादि/कुदि/यादि/

यदि (योन)

३२. **ओल ओल**

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. **लो आकि द/लो कि द/ लो रा द**

३५. **सा-सब सा-सब**

३६. **त/ सात ड/डः/सात**

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाराभुमे २ रजित)

३८. **जरा जरा**

३९. **कवलि/ कवलि** कवलि

४०. **दल दलि दल दलि/दल दल**

४१.

ल/ल गल/गल



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

४२. किछ खाव/ किछ उव/ किछ आव

४३. जाव डव/ जावत डव जाति डव/ जेत डव

४४. गहुँटा/ जेत जावत डव/ जेत जाव डव गहुँटा/ जेत जावत डव

४५.

जराव (हरा)/ जराव (होजी)

४६. नय/ वय क/ कय/ वय कय / वय कय/ वय कय

४७. न/ वय कय/

कय

४८. एखन / एखन / एखन / एखन

४९.

खलीकै खलीकै

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गाव केनाथ धाव गाव केनाथ/ केनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ

जकाँ

५३. तहिन तहिन

५४. एकव एकव

५५. रैहिन रैहिन

५६. रैहिन रैहिन

५७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

५८. नहि/ ले

५९. कवरौ / कवरौ/ कवरौ

६०. त/ त २ तय/ तय

६१. जेयावी ये जेत-जाव/ जेत, जेत-जाव/ जाव

६२. गितीमे दु भाग/ भाव/ भाव

६३. जा पोथी दु भाव/ भाव/ भाव जेव। यारत जारत

६४. माय मे / माय दू माय माय



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७३. देहि/ दक्षि दक्षि/ दक्षि/ दक्षि दक्षि/ दक्षि

७३. द/ दक्षि/ दक्षि

७३. ७ (संयोजक) ७२ (संयोजक)

७४. तक्षि कक्षि तक्षि तक्षि

७५. तक्षि (on foot) तक्षि कक्षि/ कक्षि

७५.

तक्षि/ तक्षि

७५.

तक्षि

७५.

तक्षि कक्षि/ कक्षि / कक्षि

७५. तक्षि/तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि

७५.

तक्षि/ तक्षि

७५.

तक्षि

७५. तक्षि/तक्षि/ तक्षि/तक्षि/

तक्षि/तक्षि/ तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि/ तक्षि

७५.

तक्षि/ तक्षि(तक्षि)

७५. तक्षि/ तक्षि

७५.

तक्षि/ तक्षि/ तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि/ तक्षि/ तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि/तक्षि/ तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि/तक्षि

७५. तक्षि/तक्षि/ तक्षि/तक्षि ७५.



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक चरित्र ISSN 2229-547X

VIDEHA

बिदेह

१. कबज्या/उ कबज्या ल देवक /कबज्या-कबज्या

२. गुरागि

गुरागि

३. सगड १-सगड

सगड १-सगड

४. गज-गज गेल-गेल

५. खेवखेव

६. खेवखेव

७. वग

८. लो-लो - लो

९. ब्रूमव ब्रूमव

१०.

ब्रूमव (सिरोधन अर्थमे)

११. योह योह / गज/ गेल/ गज

१२. तातिव

१३. अगल- अगल/ अगल/ अगल

१४. गिल- गिल

१५.

गिल गिल

१६. जग जग

१७.

जग (in different sense)-last word of sentence

१८. उत गव गव जग

१९.

ल

२०. खेवखेव (play) -खेवखेव

२१. गिलगिल- गिलगिल



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१०५.

ठग- ठग

१०६.

. गठ- गठ

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकसे

११२. लोख/ लोखे लोखे

११३. अउवद- अउवद

उवद

११४. बुँसवहि (different meaning - got under stand)

११५. बुँसवहि/बुँसवहि/ बुँसवहि (under stood himself)

११६. छवि- छवि/ छवि छवि

११७. खयाल- खयाल

११८.

मोम गौड़वहि/ मोम गौड़वहि/ मोम गौड़वहि

११९. कैक- कैक- कैक

१२०.

वग नग

१२१. जलेश

१२२. जलेश जलेश- जलेश/ जलेश

जलेश

१२३. लोखत

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवहि गवरोवहि/ गवरोवहि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. कवयो (willing to do) कवयो

१२७. जेकवा- जेकवा



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१२४. तकवा- तेकवा

१२५.

बिदेसब आलये/ बिदेसबे आलये

१३०. कबरैगनहूँ/ कबरैगनहूँ/ कबरैगनहूँ कबरैगनहूँ

१३१.

हाथिक (उठावण हागवक)

१३२. उज्ज्वल रज्ज्वल आँखसोच/ आँखसोच कागज/ कागज/ कागज

१३३. आँखे भाग/ आँख-भाग

१३४. गिटा / गिटाय/ गिटाय

१३५. नए/ ल

१३६. रैछा नए

(ल) गिटा जाय

१३७. तखन ल (नए) कहेत अछि। कहे/ सुले/ देखे छव दूदा

कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कमाँ-धमाँ/ कमाँ- धमाँ

१४०

- वग न ग

१४१. खेवाँ (for playing)

१४२.

डबिहा डबिहा

१४३.

लोखत लोख

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

୧୪୮. **ଉପେକ୍ଷା**

१४९. कभी कभी

୧୩୦. **ଚକା ଚକା**

૨૩૨. **કર્મ** કવચ

১৩২. ড়র়র়/ ড়র়র়ে/ ড়়র়র়ে ড়়র়র়া/ ড়়র়র়ে

১৩৩. এখনকা/

ପ୍ରଶ୍ନକା

୧୬୫. ଦଣ୍ଡ/ ବିଧାନ (ରାଜ୍ୟକ ଅନ୍ତିମ ମେଣ୍ଟ)- ଦଶ

સા.સ. કલતક/

କେବଳ

୧୩୬. **ଗବସୀ ଗର୍ମା**

537

ରବିନୀ ରାମୀ

534. **सुना गेवाह सुना/सुना२**

୧୩. ଏକାଗ୍ର-ଶେକାଗ୍ର

530.

ତେନା ଲ ସେବଦାସି/ ତେନା ଲ ସେବଦାସି

୧୬୯. ବର୍ତ୍ତମାନ / ଲେ

ۛۛۛ

ডবো ড'বো

୧୬୩. କହ/ କର/ କଣି

১৬৪. ঙ্‌মবিগব-ঙ্‌মেবগব ঙ্‌মবগব

୧୬୩. ଭବିଷ୍ୟ

১৬৬. দ্বীপ/দ্বীপের দ্বীপ

୧୬୭. ଗମ୍ଭା/ଗମ୍ଭା

534.

ক ক

১৬৯. দবরঁজা/ দবরঁজা

११०. शीघ्र



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

VIDEHA

११.

धवि तक

१२.

धुवि लोछ

१३. खोबरेक

१४. रैड

१५. रौ/तु

१६. रौहि (गद्यमे ग्राम)

१७. रौरी / रौहि

१८.

कबरौआ कबरौआये

१९. एकैछ

२०. कवितवि / कवतवि

२१.

गुँछि/ गुँछ

२२. बाखनहि बखनहि/ बखननि

२३.

वगवहि वगवनि वागवहि

२४.

बुनि (उँटाका बुन)

२५. अछि (उँटाका अछि)

२६. एवनि लोवनि

२७. रिउल/ रिउल/

रिउल

२८. कबरौआहि/ कबरौआहि

कबरौआहि/ कबरौआहि

२९. कबरौआहि/ कबरौआहि

३०.

आहि/ कि

३१. गुँछि/



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पुस्त

१७२. रौत जबाय/ जबाय जबा (शशि नगा)

१७३.

मे मे

१७४.

हाँ मे हाँ (हाँ मे हाँ रिक्तिये लो क)

१७५. खेव खेव

१७६. खेव(spacious) खेव

१७७. होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि

१७८. हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ

१७९. हाथ मटियाँ

२००. देखाँ देखाँ

२०१. देखाँ

२०२. सतुवि सतुवि

२०३.

सालेँ सालेँ

२०४. सालेँ/ सालेँ/ सालेँ

२०५. सालेँ/ सालेँ/ सालेँ

२०६. सालेँ/ सालेँ/ सालेँ

२०७. किड न किड/

किड न किड

२०८. घुमेन/ घुमेन/ घुमेन/ घुमेन

२०९. एका/ एका/ एका/ एका

२१०. अः/ अः/ अः/ अः

२११. नय/

नय (अर्थ- परिवर्तन) २१२. कनीक/ कनीक

२१३. सरेलक/ सतुवि

२१४. गिला/ गिला

२१५. क/ क

२१६. जा/ जा



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक संस्करण ISSN 2229-547X

VIDEHA

जा

२११. श्री/ श्री

२१२. भ/ भ (कॉन्क कमीक आतक)

२१३. निधाय/ निधाय

२२०

लेखक/ लेखक

२२१. गहिव अक्षर ठा रीदक/ रीदक ठा

२२२. तहि/ तहि/ तहि/ तै

२२३. कहि/ कहि

२२४. तै/ तै

तै / तै

२२५. नै/ नै/ नै/ नै/ नै

२२६. तै/ तै / तै/ तै

२२७. तै/ तै/ तै/ तै/ तै

२२८. तै/ तै/ तै/ तै/ तै

२२९. श्री (come)/ श्री (conjunction)

२३०.

श्री (conjunction)/ श्री (come)

२३१. कला/ कला/ कला/ कला

२३२. गोलैह-गोलैह-गोलैह

२३३. लेखक- लेखक

२३४. कला- कला- कला/ कला

२३५. किड न किड- किड न किड

२३६. कहै- कहै

२३७. श्री (come)- श्री (conjunction-and)/ श्री । श्री-

श्री / श्री-श्री

२३८. तै- तै

२३९. घुमैह- घुमैह- घुमैह

२४०. एका- एका

309. कहेउ/ कहे



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३५०.

बहल (डव)/ बहल (डव) (meaning different)

३५१. तागति/ ताकति

३५२. खवास/ खवास

३५३. रौगि/ रौगि/ रौगि

३५४. जार्ज/ जार्ज

३५५. कागज/ कागज/ कागज

३५६. गिले (meaning different - swallow)/ गिले

(थसए)

३५७. बहिल/ बहिल

Festivals of Mthila

DATE-LIST (year - 2011-12)

(१८५६ साल)

Marriage Days:

Nov.2011- 20,21,23,25,27,30

Dec.2011- 1,5,9

January 2012- 18,19,20,23,25,27,29

Feb.2012- 2,3,8,9,10,16,17,19,23,24,29

March 2012- 1,8,9,12

बि एच ए मिडे *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह अथय ऐथिली आधिकर अ विदेह' १०५ म अंक ०१ मइ २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

April 2012 – 15,16,18,25,26

June 2012 – 8,13,24,25,28,29

Upanayana Days:

February 2012 – 2,3,24,26

March 2012 – 4

April 2012 – 1,2,26

June 2012 – 22

Dviragaman Din:

November 2011 – 27,30

December 2011 – 1,2,5,7,9,12

February 2012 – 22,23,24,26,27,29

March 2012 – 1,2,4,5,9,11,12

April 2012 – 23,25,26,29

May 2012 – 2,3,4,6,7

Mundan Din:

बि एन ए सिद्धे *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,

मैथिली संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

VIDEHA

December 2011- 1,5

January 2012- 25,26,30

March 2012- 12

April 2012- 26

May 2012- 23,25,31

June 2012- 8,21,22,29

FESTIVALS OF MITHILA

Mauna Panchami -20 July

Madhushravani - 2 August

Nag Panchami - 4 August

Raksha Bandhan- 13 Aug

Krishnastami - 21 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 29 August

Hartalika Teej - 31 August

बि एच ए विदेह *Videha* विदेह विदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह अथय ऐथिली पाक्षिक अ विदेह' १०५ म अंक ०१ मइ २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Chaut hChandr a-1 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -8 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 9 Sept ember

Anant Cat ur dashi - 11 Sep

Agast yar ghadaan- 12 Sep

Pi t ri Paksha begi ns - 13 Sep

Mahal aya Aar ambh- 13 Sept ember

Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember

Ji moot avahan Vrat a/ Ji ti a-20 Sept ember

Mat ri Navami - 21Sept ember

Kal ashst hapan- 28 Sept ember

Bel naut i - 2 Oct ober

Pat ri ka P raves h- 3 Oct ober

Mahast ami - 4 Oct ober

Maha Navami - 5 Oct ober



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

Vijaya Dashami - 6 October

Kojagara - 11 October

Dhanteras - 24 October

Diyabati, Shyama Pooja - 26 October

Anakoota/ Govardhana Pooja - 27 October

Bhratri dwitiya/ Chitrakuta Pooja - 28
October

Chhatih-karna - 31 October

Chhatih - sayankalika arghya - 1 November

Devottana Ekadashi - 17 November

Sama Poojarambh - 2 November

Kartik Poornama/ Sama Bisarjan - 10 Nov

Navaratri - 27 November

Navanna parvan - 29 November

Vivaha Panchmi - 29 November

Makar Sankranti - 15 Jan

बि एच ए मिडेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम ऐथिली पाक्षिक अ बिदेह' १०५ म अंक ०१ मइ २०१२ (वर्ष



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धर्व संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Nar akni var an chat ur dashi – 21 Januar y

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a – 28
Januar y

Achl a Sapt mi – 30 Januar y

Mahashi var at ri –20 Febr uar y

Hol i kadahan –Fagua –7 Mar ch

Hol i –9 Mar

Var uni Yoga –20 Mar ch

Chai ti navar at r ar ambh – 23 Mar ch

Chai ti Chhat hi vr at a –29 Mar ch

Ram Navami – 1 April

Mesha Sankr anti –Sat uani –13 April

Jur i shi tal –14 April

Akshaya Triti ya –24 April

Ravi Br at Ant – 29 April

Janaki Navami – 30 April

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माधुसूदन चन्द्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

Vat Savitri -barasait - 20 May

Ganga Dashhar a-30 May

Somavati Amavasya Vr at a- 18 June

Jagannath Rath Yatra- 21 June

Har i Sayan Ekadashi - 30 June

Aashadhi Gur u Poor ni ma-3 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.बिदेह ई-पत्रिकाक सब्धी प्रवाण अंक ब्रैल, तिवहुता आ देवनागरी कगमे *Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions*

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

२.मैथिली पोथी डाउनलोड *Maithili Books Download*

३.मैथिली ऑडियो संकलन *Maithili Audio Downloads*

४.मैथिली वीडियो संकलन *Maithili Videos*

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष*



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila
Painting/ Modern Art and Photos

बिदेहक एहि सब सहयोगी बिक्रीब सेहो एक छेब जाईत ।

३. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अबुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पुरि-कप "भाकसबिक गाछ" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गैडेट्स :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X

VIDEHA

१२. बिदेह: मदेह : पहिल तिवहुता (मिथिलाक्षर) जानबूत
(बैनांग)

<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्रेन: मैथिली ब्रेनमे: पहिल रैब बिदेह द्वारा

<http://videha-brainle.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका मैथिली पोथीक
आर्काइव

<http://videha-pothiblogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audioblogspot.com/>

१७. बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-videoblogspot.com/>



मानुषिंह संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

<http://mailto:aurmit@blogspot.com/>

<http://www.shrutipublication.com/>

Google समूह

জামেন :

???? ???

এহি সমূহপৰ জাঙু

↗↗ <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

Subscribe to VI DEHA

बिदेह बिदेह *Videha बिदेह* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)
VIDEHA

माथिलि संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

enter email address

Power ed by us.groups.yahoo.com

२२. गजेन्द्र ठाकुर गडेझ

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. मंगल कुँडा

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक गहिम पोडकास्ट
साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२३.  [Videha Radio](#)

२१.  [Join official Videha facebook group.](#)

२४. बिदेह मैथिली भाषा डेस

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine*



५ मास ५३ अंक १०५) गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समादिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार आथर

<http://anchinharakharakolkat.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-hai ku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहनि कथा

<http://vihani katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलि संस्कृतम् ISSN 2229-547X

VIDEHA

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

श.मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महोदयसुता (१) बिदेह द्वारा वार्षिक रूपेण प्रकाशित कय लोम गजेन्द्र ठाकुर निरंजन-प्रवेश-समीक्षा, उगन्नाम (महोदयठान), पञ्च-संग्रह (महोदयिक टोपडगर), कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ), लष्टकर्मकर्षण), महाकाव्य (द्वयल्लभ आ असङ्गति मल) आ बाब-किलोव सहित बिदेहमे संपूर्ण प्रकाशिक बाँद छिठि कर्षये । ककषेवम् अन्तर्गत खन्ड-१ सँ १ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 बिरवा एहि पृष्ठपर नीचाँमे आ प्रकाशिक साँठ <http://www.shruti-publication.com/> पब ।

महोदयसुता (२)सुता: बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (अष्टवल्लभगर पहिल लेव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एम.क्यू.एम. सर्वर आधारित -Based on ms-sql server Maithili-English and English-Maithili Dictionary. बिदेहक भाषाशास्त्र- बालाबखन कुँभमे ।

ककषेवम् अन्तर्गत- गजेन्द्र ठाकुर

बिहारी मिश्र *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly e Magazine* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई बिदेह' १०५ म अंक ०१ मई २०१२ (वर्ष

५ मास ५३ अंक १०५)  गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X **VIDEHA**



गजेंद्र ठाकुरक निबंध-श्रेष्ठ-समीक्षा, उपन्यास (महत्त्वपूर्ण),
गद्य-संग्रह (महत्त्वपूर्ण टोपोग्राफ), कथा-गल्प (गल्प संग्रह),
नाटक(संस्कृत), मलकाव (कुरुक्षेत्र और अस्मिता मल) और
बौद्धिक-कौशलगत बिदेहमे संपूर्ण अ-शकलिक बौद्ध विधि
शर्मा। कुरुक्षेत्रम्-अनुसंधान, खंड-१ पृ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's
KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)- essay-paper-
criticism, novel, poems, story, play, pictures and
Children-grown-ups literature in single
binding:

Language: Maithili

५२ पृष्ठ : मूल्य डी.क. 100/- (for individual
buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/- per copy for
Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside
Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पारिषद ई पत्रिका बिदेह १०५ म अंक ०१ मई २०१२



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्करण, ISSN 2229-547X

<http://videha123.wordpress.com/>

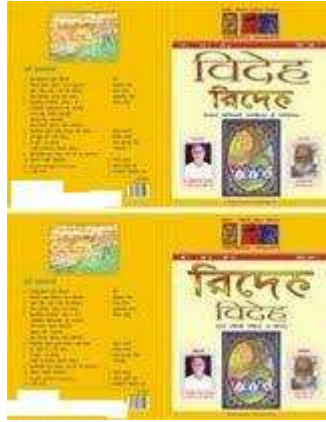
Details for purchase available at print –
version publisher's site

website: <http://www.shrutipublication.com/>

or you may write to

e-mail [shruti.publication@shruti -
publication.com](mailto:shruti.publication@shrutipublication.com)

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देवनागरी "बिदेह" क,
हिष्टि संस्कार : बिदेह-ई-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छव बच्चा समिति ।



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।



५ मास ५३ अंक (१०५)

गान्धी संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Details for purchase available at print -
version publisher's site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

२. संदेश-

[बिदेह ई-पत्रिका बिदेहसदस्य विधिवानुसार आ देखागरी आ गजबुद्ध
ठाकुर सात अंक- निरुद्ध-प्रति-समाप्त (उपस्थापित)
(सहस्रवर्षीय), पञ्च-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपडा), कथा-गण (गण
ग्रन्थ), नष्टक (संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मसूत्र आ अमर्यादित मन्त्र) आ बाव-
मन्त्र-कौशिक जगत- संग्रह *ब्रह्मसूत्र* अतिरिक्त पाद ।]

१. श्री गोविन्द सा- बिदेहसदस्य तबगजानन उतावि विनिर्भरिमे
माहताया मैथिलीक नहरि जगाउन्, खेद जे अगलक एहि
महाविनाशमे हम एखन धरि संग नहि दए सकनहूँ । अलौत डी
अगलकै सुनाउ आ बचानामे आलोचना प्रिय नहोत अछि तै
किछु निथक मोन भेल । हमर महाता आ सहयोग अगलकै
सदा उपनद्ध रहत ।

२. श्री बमानन्द सा- मैथिलीमे ई-पत्रिका पत्रिका कएँ चला क
जे अगल माहतायाक प्राप्ति क रहत डी, से धन्यवाद । आगाँ
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम द्वन्द्वसँ शुभकामना द
रहत डी ।

३. श्री विद्यानाथ सा "विदित"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि
प्रतिस्पर्धी ग्राहक युगमे अगल महिमाय "बिदेह"कै अगला देहमे
प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकरा कोला
उपनद्ध "मिष्टान्न" नहि बागल जा सकैछ ? ..एकर ऐतिहासिक



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक रिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

मुद्रांकन आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक
नजरिमे आकर्षक रूपां प्रकट होत ।

४. प्रा. उदय नायाग मिह "बटिकेता"- जे काज अहाँ कए
बहन छी तकर चवटा एक दिन मैथिली भाषाक इतिहासमे
होत । आनन्द भए बहन अछि, आ जानि कए जे एतेक छोट
मैथिल "बिदेह" आ जर्मनकें पठि बहन छथि । ...बिदेहक टानीस
अक पुर्वीक जेन अभिनन्दन ।

५. डा. गंगेश गुज्जर- एहि बिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक
सम्वत्सरीय मस, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत वंग,
इतिहास मे एक ठो विशिष्ट हवाक अध्याय आवत कबत, हमरा
विश्वास अछि । अश्वेय शुभकामना आ रक्षाक मन्त्र, सम्वत्सरीय
पौषी कर्मकाण्ड अतिथि प्रथम दृष्ट्या रहत तब तथा
उपयोगी रूपांग । मैथिलीमे तँ अगला स्वरूपक प्रायः आ
पहिले एहन तब अवतारक पौषी थिक । हर्षपूर्ण हमर हार्दिक
रक्षा आ स्वीकार करी ।

६. श्री वामनाथ मा "वामनाथ"(आरंभ) - "अगला" मिथिला
संस्कृत...विषय रसुन अरगत भेलहुँ । ...शेष सब कथन अछि ।

७. श्री ज्ञानेश्वर त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- अठ्ठबल्ले पब प्रथम
मैथिली पारिषद पत्रिका "बिदेह" केव जेन रक्षा आ शुभकामना
स्वीकार कर ।

८. श्री प्रह्लादनाथ मिह "मौन"- प्रथम मैथिली पारिषद पत्रिका
"बिदेह" क प्रकाशनक समाचार जानि कलक चकित हूँ
आनन्दित भेलहुँ । कानट्रोलकें पकडि जाहि दुबदृष्टिक परिचय
देनहुँ, ओहि जेन हमर संगकामना ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA

९. डा. शिरधरदादा यादव- ए ज्ञानि अर्थात् हर्य भए बहन अछि, जे नर सूचना-आनुकिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रेरणे दिअएरौक साहसिक कदम उठाओन अछि । पत्रकारितामे एहि प्रकारक नर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क सफलताक शुभकामना ।

१०. श्री आन्याचरण मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताहूमे मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे के कतेक सहयोग कबताह- ए तह भरिया कहत । ए हमर ++ रर्यमे १३. रर्यक अक्षर बहन । एतेक पैघ महल यरूमे हमर प्रेक्षापूर्ण आहूति प्राप्त होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।

११. श्री रिजय ठाकुर- मिश्रिण रिश्वरिआनय- "बिदेह" पत्रिकाक एक देखनहुँ, सम्पूर्ण ठीम ररवाएक पत्र अछि । पत्रिकाक मंगल भरिया हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री स्वभावचन्द्र यादव- ए-पत्रिका "बिदेह" क रारेमे ज्ञानि प्रसन्नता भेल । 'बिदेह' निबन्धन पन्नरित-प्रश्रित हो आ चतुर्दिक अपन स्वर्ण पसारन से कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीप्रव प्रदीप- ए-पत्रिका "बिदेह" केव सफलताक भगरतीस कामना । हमर पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री भूमिपथ मा- "बिदेह" गुरुवलाठ पत्र अछि तेँ "बिदेह" नाम उचित आब कतेक कर्पे एकव रिबन भए सकैत अछि । आग-कान्ति मोनमे उद्ग बहत अछि, रुदा शीघ्र पूर्ण सहयोग देर । ककषेत्रम् अक्षरमिक देखि अति प्रसन्नता भेल । मैथिलीक लेन ए घटना छी ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

१३. श्री बागबनम कागडि "अमर"- जगदगुवधाम- "बिदेह"
आमनागल देधि बहन डी। मैथिलीके अन्तर्बिहारीय जगतमे
पहुँचेनहुँ तकवा जेन हार्दिक रंभाग। मिथिला बने सतक सकलन
अपूर। लगालोक सहयोग भेटैत, से बिश्वास करी।

१३. श्री बाजबनम नानदाम- "बिदेह" अ-पत्रिकाक माधुमर्ष रँड
नीक काज कए बहन डी, नातिक अहिठाम देखनहुँ। एकब
बारिक एक जखन छिष्ट निकानर तँ हमरा पठासर। कनकतामे
रँडत गोठैकेँ हम मागठक पता लिखा देल छियहि। मोन
तँ होगत अछि जे दिदी आरि कए आशीर्वाद दैतहुँ, दूदा उमर
आरि रेंगी भए जेन। श्रुतकामना देम-बिदेशिक मैथिलीकेँ
जोडवाक जेन। .. ईकृष्ट प्रकाशिन ककफेदम् अतर्किक जेन
रंभाग। अद्भुत काज कएन अछि, नीक प्रश्रुति अछि मात
खस्ये। दूदा अहाँक मेरा आ मे निःस्वार्थ तखन रूमन
जागत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सतगव दाम लिखन नहि
बहिकैक। ओहिना सतकेँ बिनहि देन जगतैक। (स्पष्टीकवा-
श्रीमान्, अहाँक सुचनार्थ बिदेह द्वारा अ-प्रकाशित कएन सतछी
सामग्री आर्कागरमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi/> गव रिना मुनक डाउनलोड जेन उगल्लै छै आ
भरियामे मेहो बहिकैक। एहि आर्कागरकेँ जे कियो प्रकाशिक
अग्रमति न२ क२ छिष्ट कपमे प्रकाशित कएल छथि आ तकव ओ
दाम बखल छथि ताहिगव हमर कोला निगलन नहि अछि। -
गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अमेय श्रुतकामनाक मंग।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे गठबलठगव पहिन
पत्रिका "बिदेह" प्रकाशित कए अगल अद्भुत माहतायवागक
पविचय देन अछि, अहाँक निःस्वार्थ माहतायवागर्ष प्रेरित डी,



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एकव निमित्त जे हमर मेराक प्रयोजन हो, तँ सुचित करी ।
७१-बल्लभ-पत्र आद्यागाति पत्रिका देखन, मन प्रफुल्लित भऽ गेल ।

१५. श्रीमती शैलानिका रमा- बिदेह-पत्रिका देखि मोन उल्लास
भरि गेल । बिदेह कतेक प्रगति कऽ बहन अछि... अहाँ सब
अनन्त आकाशकेँ भेदि दियो, समस्त रिश्रवक बहनकेँ तार-तार
कऽ दियो... । अगलक अद्भुत पुस्तक हकफेदत्रय अतर्किक
रिचयस्युक दृष्टिमेँ गागबसे मागव अछि । रँवाङ्ग ।

१६. श्री हेतुकव मा, पठना-जाहि समर्पण भारमेँ अगल मिथिला-
मैथिलीक मेरासे तपेव छी मे त्रु अछि । देशेक बाजधानीमेँ
तय बहन मैथिलीक शिखरद मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली
चेतनाक विकास अरुष्ट करत ।

२०. श्री योगानन्द मा, करिगुन, नहेरियामबाय- हकफेदत्रय
अतर्किक पोथीकेँ निकटमेँ देखराक अरुसब भेटेल अछि आ
मैथिली जगतक एकटा उद्भुत ओ समामयिक दृष्टिसम्पन्न
हस्ताक्षरक कनगरुन्द परिचयमेँ आनन्दित छी । "बिदेह"क
देरगावरी सँरुका पठनामे क. ८०/- मे उगल्लेँ भऽ सकन जे
रिचित लेखक लोकनिक भाग्य, परिचय पत्रक ओ बचनारणीक
सम्यक प्रकाशमेँ ऐतिहासिक कहन जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे
रँहूत बास करिता, कथा, विप्लव आदिक सचित्र संग्रह देखि आ
आव अरु प्रसन्नता मिथिलाकर देखि- रँवाङ्ग स्वीकार कएन
जाओ ।

२२. श्री ज्ञानकांत- बिदेहक हृदित अक पठन- अद्भुत
मेहनति । टारन-टारन । किछ समालोचना सबखाने... हृदा सब ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक बिदेह, ISSN 2229-547X

VIDEHA

२३. श्री भानुचन्द्र सा- अगलक ककफेल्डम् अतर्लिक देखि
रूमाएन जेना हम अगल दुगलहूँ अछि । एकव रिशानकाय
आश्रुति अगलक सरिसमारेशताक परिचायक अछि । अगलक बचना
सामर्थ्यमे उतबोतब रूछि हो, एहि शुतकामलाक संग हार्दिक
रैषाङ्ग ।

२४. श्रीमती डा नीता सा- अहाँक ककफेल्डम् अतर्लिक पठनहूँ ।
ज्यातिवीर्यव शैलारनी, प्रथि मञ्च शैलारनी आ सीत रसभु आ
सत कथा, करिता, उगलाम, रान-किलोव साहिर सत उतम
हुन । मैथिलीक उतबोतब विकासक नम्र दृष्टिगोचर होगत
अछि ।

२५. श्री मयानन्द मिश्र- ककफेल्डम् अतर्लिक ये हमर उगलाम
मूर्तिधरक जे विरोध कएन गेल अछि तकर हम विरोध करैत
छी । ... ककफेल्डम् अतर्लिक पोथीक जेन शुतकामला । (श्रीमान्
समाजोचनाकें विरोधक रूपमे नहि जेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२६. श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककफेल्डम् अतर्लिक
पठि मोन हर्षित भऽ जेन..एथन पुवा पठनमे रहूत समय
नागत, हृदा जेतक पठनहूँ से आनन्दित कएनक ।

२७. श्री केदारनाथ टोषी- ककफेल्डम् अतर्लिक अद्भुत नागन,
मैथिली साहिर जेन आ पोथी एकठा प्रतिमान रैषत ।

२८. श्री मयानन्द पाठक- बिदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर
स्वरूपक प्रशंसक हुनहूँ । एकर अहाँक लिखन - ककफेल्डम्
अतर्लिक देखनहूँ । मोन आनन्दित भऽ उठन । कोना बचना
तवा-उगवी ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानकीह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२९. श्रीमती बमा मा-सम्पादक मिथिला दर्शी । ककषेत्तम्
अतर्लिक बिष्टि फार्मि पति आ एकव गुररता देधि मोन प्रसन्न
भ२ जेन, अद्भुत शिष्ट, एकवा जेन प्रसन्न क२ बहन डी ।
बिदेहक उत्तरोत्तर प्रगतिक शुभकामना ।

३०. श्री नरेन्द्र मा, पठना- बिदेह मिथिली देधि देहि बहेत डी ।
मैथिली जेन अद्भुत काज क२ बहन डी ।

३१. श्री बागलौचन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलाक बिदेह देधि
मोन प्रसन्नतासँ भवि उत्तम, अकक रिशोन पविदृष्ट आनन्दकारी
अडि ।

३२. श्री तारानन्द बियोगी- बिदेह आ ककषेत्तम् अतर्लिक देधि
टकरिदेव नागि जेन । आशर्च । शुभकामना आ रैवाङ्ग ।

३३. श्रीमती प्रेमनता मित्रि “प्रेम”- ककषेत्तम् अतर्लिक पठनहूँ ।
सब बचना उत्कृष्टक नागन । रैवाङ्ग ।

३४. श्री कीर्तिनाथ मित्रि- रैगुमबाग- ककषेत्तम् अतर्लिक रैव
लीक नागन, आर्गाक सब काज जेन रैवाङ्ग ।

३५. श्री महाप्रकाश-सहमा- ककषेत्तम् अतर्लिक लीक नागन,
रिशोनकाय संगहि उत्तमकोष्टक ।

३६. श्री अग्निप्रकाश- मिथिलाक आ देवाक बिदेह पठन..ङ्ग प्रथम
तँ अडि एकवा प्रसिमाये हृदा हम एकवा दुःसाहसिक कहँ ।
मिथिला टिकनाक सुन्दर हृदा अगिना अकमे आब बिस्तृत
रैवाङ्ग ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

माथिलिह बरन्दा, ISSN 2229-547X

VIDEHA

३१.श्री मज्जिम स्वर्णमाल-द्वर्तगा- बिदेहक जतेक प्रशिसा कएन
जाए कम होएत । सब टीछ उतम ।

३२.श्रीमती प्राप्तेसब रीणा ठाकुर- ककषेवम् अतर्षिक उतम
पठनीय, रिचावणीय । जे का देखेत छथि पोथी प्राप्ते कवरौक
उपाय प्रुद्धेत छथि । शुभकामना ।

३३.श्री छत्रानन्द सिंह मा- ककषेवम् अतर्षिक पठनहुँ, रैद्ध नीक
सब तबहै ।

४०.श्री ताराकाशु मा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद-
बिदेह तँ कण्ठेष्ट प्रागाडवक काज क२ बहन अछि ।
ककषेवम् अतर्षिक अद्धृत नागन ।

४१.डा बरिन्द्र कुमार टोषरी- ककषेवम् अतर्षिक रैद्ध नीक,
रैद्ध मेहनतिक परिणाम । रैद्धाङ्ग ।

४२.श्री अमरनाथ- ककषेवम् अतर्षिक आ बिदेह दुनु सबकीय
घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य ।

४३.श्री पद्मलक्ष्मी मिश्र- बिदेहक रैद्धि आ निवृत्तता प्रभावित
कबैत अछि, शुभकामना ।

४४.श्री केदार काश- ककषेवम् अतर्षिक लेन अलक धन्यवाद,
शुभकामना आ रैद्धाङ्ग स्वीकार कबी । आ नटिकेतक भूमिका
पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागन जेना कोना उपाय अहाँ द्वारा
सृजित लेन अछि अद्भुत पोथी उपायना पब तब तब जे
एहिमे तँ सब रिधा समाहित अछि ।



५ मास ५३ अंक १०५)

मानक बिदेह बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

४३. श्री धनकव ठाकुर- अहाँ नीक काज क२ बहन छी । फोहो छै लोनबीमे छि एहि शिताईक जगतिथिक अखबार बहेत त२ नीक ।

४३. श्री आशीष या- अहाँक पुस्तकक सँधमे एतरो लिखरो सँ अगला कए नहि लोकि सकनहुँ जे अ कितारो मात्र कितारो नहि थीक, अ एकठाँ उन्नीद छी जे मैथिली अहाँ सग पुत्रक सेरो सँ निर्वतव समूह लोगत टिबजोरण कए प्राप्ति कबत ।

४१. श्री शम्भु कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ फ़िलानिनीता देखि आनंदित भ२ बहन छी । निश्चितकपेण कहन जा सकैछ जे समकालीन मैथिली पत्रिकाक गतिहासमे बिदेहक नाम स्थापितमे लिखन जाएत । ओहि ककषेत्रक घटना सब तँ अठावहे दिसमे खतम भ२ गेल बहए ह्रदा अहाँक ककषेत्रम् तँ अशेष अछि ।

४१. डा. अजित मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएन जाए कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएन गेल काज शग-शगतुव धरि पुजनीय बहत ।

४९. श्री रीतेश मल्लिक- अहाँक ककषेत्रम् अतुल्य आ बिदेह:सदेह गति अति प्रसन्नता भेल । अहाँक स्नातृ ठीक बहए आ उन्नीद रँगन बहए से कामना ।

३०. श्री कुमार बाबाक- अहाँक दिशा-निर्देशमे बिदेह पहिल मैथिली अ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

३१. श्री सुनन्द या प्रदीप- बिदेह:सदेह गठन बही ह्रदा ककषेत्रम् अतुल्य देखि रूढ़ । अ देरो लेन राधा भ२ गेलहुँ । आरंभ निष्ठा भ२ गेल जे मैथिली नहि मरत । अशेष शुभकामना ।



५ मार्च १०५ अंक १०५)

मासिक पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

७१. श्री मोहन भावदाज- अहाँक समस्त कार्य देखल, रहूत नीक ।
एथल किछ परेशोनीमे छी, झुदा शीघ्र सहयोग देबै ।

७२. श्री फज्जुव बहमान हशिम- ककफ्रेट्रम् अतुर्माक मे एतेक
मेहनतक लेल अहाँ साधुरादक अधिकारी छी ।

७३. श्री नरका ना "सागर"- मैथिलीमे चमकोविक कर्पे अहाँक
प्रवेशे आनन्दकारी अछि । ..अहाँकेँ एथल आव..दुव..रहूत दुवधरि
जेरौक अछि । सुन्द आ प्रेम बनी ।

७४. श्री जगदीश प्रसाद मिश्र- ककफ्रेट्रम् अतुर्माक पठनहूँ ।
कथा सत आ उपास सहस्रौठनि पूर्णकर्पे पठि लेल छी ।
गाम-घबक भौगोलिक विवरणक जे सुझा रीति सहस्रौठनिमे
अछि, से चकित कएलक, एहि संग्रहक कथा-उपास मैथिली
लेखनमे विविधता अलमल अछि । समालोचना नाम्नेमे अहाँक
दृष्टि वैयक्तिक नहि रवन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से
प्रशंसनीय ।

७५. श्री अशोक ना-अध्यात्म चिन्ता विकास परिवर्ध- ककफ्रेट्रम्
अतुर्माक लेल रीवाज आ आर्गा लेल शुभकामना ।

७६. श्री ठाकुर प्रसाद झा- अछूत प्रवास । धन्यवादक संग
प्रार्थना जे अगल माछि-पानिकेँ ध्यानमे बाधि अकक समायोजन
कएल जाय । नर अक धरि प्रवास सवाहनीय । बिदेहकेँ रहूत-
रहूत धन्यवाद जे एतेक सुन्दर-सुन्दर सचब (आलेख) नगा बहल
छथि । सतर्पण ग्रहणीय- पठनीय ।

७७. रूचिनाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी, अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित
'बिदेह' आ 'ककफ्रेट्रम् अतुर्माक' विनम्र पत्रिका आ विनम्र



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५)

मासिक पत्रिका, ISSN 2229-547X

VIDEHA

गोष्ठी ! की बहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रश्नमे सँ
मैथिली क विकास होयत, निर्मादेह ।

७. श्री बृथेने चन्द्र नाग- गजेन्द्रजी, अंगलक प्रसन्न
ककषेन्द्रम् अतर्किक पति मोन गदगद भय गेन , छदयसँ
अवगृहित छी । हार्दिक शुभकामना ।

७. श्री गवमेधिर कागडि - श्री गजेन्द्र जी । ककषेन्द्रम्
अतर्किक पति गदगद आ ललन भेलहुँ ।

१०. श्री वरीन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठेत बहैत छी । धीरेन्द्र
प्रेमर्षिक मैथिली गजनपव आलेख पठनहुँ । मैथिली गजन कत
सँ कत २ छनि गेलैक आ ओ अंगल आलेखमे मात्र अंगल ज्ञान-
पहिचान लोकक छट कएल छथि । जेना मैथिलीमे गठक
पवम्बा बहन अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि
आलेखमे ओ स्पष्ट निखल छथि जे किनको नाम जे छुटि गेल
छहि तँ से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहरौक द्यौल,
एहिमे आन कोना काबा नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि
विषयपव रिस्तुत आलेख सादर आमंत्रित अछि । -सम्पादक)

११. श्री मावेधिर मा- बिदेह पठन आ संगहि अहाँक मैथिली उगम
ककषेन्द्रम् अतर्किक मोन, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएन
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि ।

१२. श्री हरेन्द्र ना- ककषेन्द्रम् अतर्किक मैथिलीमे अंगल
तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन
कोशमे देखबामे आन जे लेखकक हार्डवेर्कसँ जुडल बहरौक
काबासँ अछि ।



५ मास ५३ अंक १०५

गान्धीन संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३. श्री सुकांत मोम- ककफेवम् अतर्किक मे समाजक
गतिहास आ रतिमानस अहक जूड १२ रीक नागन, अहक एहि
ककफेवमे आब आगाँ काज कवरै मे आशा अछि ।

१४. श्री प्रोफेसर मदन मिश्र- ककफेवम् अतर्किक सन कितारै
मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिमान संग्रहणव मोध कएल जा
सकेत अछि । भरियक लेन शुभकामना ।

१५. श्री प्रोफेसर कमला टोपरी- मैथिलीमे ककफेवम् अतर्किक सन
पौथी आरै जे थप आ कप दूमे निम्न होअए, मे रीक
दिनस आकाश डन, ओ आरै जा क२ पुर्ण लेन । पौथी एक
हाथसँ दोसव हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगाँ मेहो अहसँ
आशा अछि ।

१६. श्री उदय चन्द्र मा "रिलाद": गजेन्द्रजी, अहक जतेक काज
कएनहुँ अछि मे मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएल डन ।
शुभकामना । अहकै एखन रीक काज आब कवरैक अछि ।

१७. श्री प्रोफेसर कमाव कमाव: गजेन्द्र ठाकुरजी, अहसँ तेँ एकठा
सबारीय छप रीक लेन । अहक जतेक काज एहि रीकमे क२
लेन डी तालिसँ हजाव थप आब लेनीक आशा अछि ।

१८. श्री मणिकान्त दास: अहक मैथिलीक कार्यक प्रशंसा लेन शिष्ट,
नहि तेँ अछि । अहक ककफेवम् अतर्किक सम्पूर्ण कपे
पठि लेनहुँ । ब्रह्मरूप रीक नागन ।

१९. श्री लीलेन्द्र कमाव मा- रिदेह ई-पत्रिकाक सभ अक ई-
पत्रसँ तेँ वहेत अछि । मैथिलीक ई-पत्रिका डैक एहि
रीक गरि लेगत अछि । अहक आ अहक सभ सहयोगीकै
हार्दिक शुभकामना ।



(वर्ष ५ मास ५३ अंक १०५,
VIDEHA

मासिक संस्कृतम्, ISSN 2229-547X

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१२. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि
अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पारिषदक ई-
पत्रिका । SSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र
ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: शिव
कुमार सा आ मन्नाजी (मन्नाज कुमार कर्ण) । भाषा-संपादक:
नागेंद्र कुमार सा आ पद्मिका बिश्वनाथ सा । कवि-संपादक:
रवींद्र कुमार आ बमि लेखी मिश्र । संपादक-शोध-अनुसंधान: डा.
जया रम्या आ डा. राजीव कुमार रम्या । संपादक- नाटक-
वैयक्तिक-चरित्र- लेख ठाकुर । संपादक- सुलो-संस्कृत-समाद-
पुष्प मंडल आ प्रियंका सा । संपादक- अनुवाद विभाग- रवींद्र
उपेय ।

वचनाकार अपन मौखिक आ अलंकारित वचना (जकर
मौखिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक ग्राहक मध्य भूमि)
ggajendra@videha.com केँ मेन अटैचमेण्टक रूपमे



५ मास ५३ अंक १०५)

गान्धीन संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

.doc, .docx, .rtf वा txt फॉर्मेटमे पाठा संकेत छथि ।
बचनाक संग बचनाकाब अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन कौन कएन
गेन हवांछे पठैतह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे
छाँवाँ बहल, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिने प्रकाशक
हेतु बिदेह (पारिषद्) आ पत्रिकाकें देन जा बहल अछि । मेन
प्राप्त होयबक बाद यथार्थतः शीघ्र (सात दिनक भीतर) एक
प्रकाशक अंक मुद्रा देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली
पारिषद् आ पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे
मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएन जायत
अछि । एहि आ पत्रिकाकें प्रीति नक्की ठाँव द्वारा मासक ०९
आ १३ तिथिकें आ प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(c) 2004-12 सर्वाधिकार सुरक्षित । बिदेहमे प्रकाशित
संस्था बचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार बचनाकाब आ संग्रहकर्ताक
नगमे छल । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किरा
आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबक हेतु
ggajendra@videha.co.in पर संपर्क कर । एहि
सांगठिकें प्रीति नक्की ठाँव, मधुनिका टोडबी आ बमि प्रिया द्वारा
डिजाइन कएन गेल ।



सिंहबट्ट

